● वर्ष-4
● अंक-121
रायपुर, मंगलवार
31 दिसंबर 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6» सोमवती अमावस्या के दिन पीपल ...

साय कैबिनेट बैठक

राइस मिलर्स 2022-23 की दूसरी किस्त देने का लिया निर्णय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक आज मंत्रालय महानदी भवन में संपन्न हुई, जिसमें राज्य के विकास को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। साय सरकार ने राईस मिलर्स को खरीफ विपणन वर्ष 2022-23 में राईस मिलों को लंबित प्रोत्साहन राशि की द्वितीय किश्त देने का निर्णय लिया है।

साय कैबिनेट की बैठक में लिए गए अहम फैसले

फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' को टैक्स फ्री- मुख्यमंत्री ने फिल्म द साबरमती रिपोर्ट को छत्तीसगढ़ में टैक्स फ्री घोषित किया। इसके तहत फिल्म के प्रदर्शन पर राज्य माल और सेवा कर (एसजीएसटी) के समतुल्य धनराशि की प्रतिपूर्ति किये जाने का अनुमोदन किया गया।

धान और चावल परिवहन की दरों पर निर्णय- खरीफ विपणन वर्ष 2022-23, 2023-24 और 2024-25 के लिए विकेन्द्रीकृत उपार्जन योजना में धान और चावल परिवहन की दर के लिए राज्य स्तरीय समिति की अनुशंसा दर को स्वीकृत किया गया।

पाठ्यपुस्तक निगम की बैठक: ऑनलाईन ट्रेकिंग एप से करें निगरानी

रायपुर. मुख्यमंत्री विष्णु देव साय (अध्यक्ष छग पाठ्यपुस्तक निगम) ने आज छग पाठ्यपुस्तक निगम की कार्यकारिणी सभा की 89वीं बैठक ली. मुख्यमंत्री ने आगामी शिक्षा सत्र के लिए राज्य के सभी विद्यार्थियों को समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण नि:शुल्क पुस्तकें प्राप्त हो सके, इसकी निगरानी के लिए आनलाइन ट्रेकिंग ऐप के माध्यम से वितरण करने के निर्देश दिए. बैठक में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण के लिए कव्हर पेपर एवं इनर पेपर क्रय एवं अन्य निविदाएं जेम के माध्यम से किए जाने के निर्देश दिए.

2,867 करोड़ के सौदे को रक्षा मंत्रालय की मंजूरी

महू (मध्यप्रदेश) । रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत का रक्षा निर्यात एक दशक पहले के दो हजार करोड़ रुपये से बढ़कर रिकॉर्ड 21 हजार करोड़ रुपये को पार कर गया है। दो शताब्दी से अधिक पुरानी महू छावनी में आर्मी वॉर कॉलेज (एडब्ल्यूसी) में अधिकारियों को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि रक्षा निर्यात 2029 तक 50 हजार करोड़ रुपये करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि लगातार बदलते समय में सीमांत प्रौद्योगिकियों में महारत हासिल करना समय की मांग है। रक्षा मंत्री ने कहा कि सैन्य प्रशिक्षण केंद्र भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए सैनिकों को सुसज्जित और तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

सिंह ने कहा, एक दशक पहले हमारा रक्षा निर्यात करीब दो हजार करोड़ रुपये था, जो आज 21 हजार करोड़ रुपये के रिकॉर्ड आंकड़े को पार कर गया है। हमने 2029 तक 50 हजार करोड़ रुपये का निर्यात लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि भारत में निर्मित उपकरण दूसरे देशों को निर्यात किए जा रहे हैं। सिंह ने अपने भाषण में युद्ध में आमूलचूल परिवर्तन का उल्लेख करते हुए कहा कि सूचना युद्ध, कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित युद्ध, छद्म युद्ध, अंतरिक्ष युद्ध और साइबर हमले जैसे अपरंपरागत तरीके बड़ी चुनौती पेश कर रहे हैं। उन्होंने इस तरह के हमलों से लड़ने के लिए सेना को अच्छी तरह से प्रशिक्षित और सुसज्जित करने की आवश्यकता पर बल दिया और महू में प्रशिक्षण केंद्रों के बहुमूल्य योगदान की सराहना की।

सिंह ने बदलते समय के अनुसार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में लगातार सुधार करने और कर्मियों को हर तरह की चुनौती के लिए तैयार करने की कोशिश करने के लिए प्रशिक्षण केंद्रों की सराहना की। रक्षा मंत्री ने कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार तीनों सेनाओं के बीच एकीकरण और संयुक्तता को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, आने वाले समय में सशस्त्र बल बेहतर और अधिक कुशल तरीके से चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे। सिंह ने कहा कि महू छावनी में सभी शाखाओं के अधिकारियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है। सिंह ने कहा कि भविष्य में अधिकारी को वैश्विक स्तर पर राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए।

उन्होंने कहा, जब आप रक्षा से सम्बद्ध पद संभालते हैं, तो आपको सरकार के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को आत्मसात करना चाहिए। आत्मनिर्भरता के माध्यम से ही भारत अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत कर सकता है और विश्व मंच पर अधिक सम्मान प्राप्त कर सकता है। रक्षा मंत्री रविवार से मप्र के दो दिवसीय दौरे पर हैं। उन्होंने कहा कि सरकार भारत को दुनिया की सबसे मजबूत आर्थिक और सैन्य शक्तियों में से एक बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, आर्थिक समृद्धि तभी संभव है जब सुरक्षा पर पूरा ध्यान दिया जाए। इसी तरह, सुरक्षा व्यवस्था तभी मजबूत होगी जब अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। सिंह ने सीमाओं की सुरक्षा और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सबसे पहले प्रतिक्रिया देने में सशस्त्र बलों की भूमिका की सराहना की। राष्ट्र की रक्षा के लिए यह समर्पण और लगातार बदलती दुनिया में खुद को अद्यतन रखने की यह भावना हमें दूसरों से आगे ले जा सकती है। एडब्ल्यूसी में, सिंह को कमांडेंट लेफ्टिनेंट जनरल एचएस साही ने संघर्ष के सभी क्षेत्रों में युद्ध लड़ने के लिए सैन्य अधिकारियों को प्रशिक्षित करने और सशक्त बनाने की दिशा में संस्थान की भूमिका और महत्व के बारे में जानकारी दी।

इसरो ने रचा इतिहास: स्पैडेक्स मिशन की सफल लॉन्चिंग

नईदिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के लिहाज से साल 2024 का साल बेहद बेमिसाल रहा। अब इसरो इस शानदार साल का अंत 2024 के आखिरी कमाल के साथ करने जा रहा है। इस मिशन को भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की बुनियाद समझ सकते हैं। क्योंकि इसी मिशन के तहत भारत डॉकिंग की उस तकनीक को हासिल करने वाला है, जिसका इस्तेमाल स्पेस स्टेशन बनाने में किया जाएगा। रॉकेट साइंस में ये तकनीक बेहद खास है। अब तक दुनिया के केवल तीन देशों के पास अंतरिक्ष में डॉकिंग की क्षमता है। लेकिन इस मिशन के साथ भारत इस टेक्नलॉजी के साथ चौथा देश बन जाएगा।

स्पैडएक्स मिशन अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत के भविष्य के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण कदम साबित होने की उम्मीद है, जिसमें पृथ्वी पर चंद्रमा से चट्टानें और मिट्टी लाना, प्रस्तावित भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और चंद्रमा की सतह पर एक अंतरिक्ष यात्री को उतारना शामिल है। अब तक केवल अमेरिका, रूस और चीन ने ही अंतरिक्ष डॉकिंग तकनीक में महारत हासिल की है।

स्पैडएक्स मिशन का प्राथमिक उद्देश्य दो छोटे अंतरिक्ष यानों (एसडीएक्स-एक, जो कि चेजर है, और एसडीएक्स-दो, जो कि लक्ष्य है) के पृथ्वी की निचली वृत्ताकार कक्षा में संयोजन डॉकिंग और अनडॉकिंग के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी का विकास और प्रदर्शन करना है। मिशन का दूसरा उद्देश्य डॉक किए गए अंतरिक्ष यान के बीच विद्युत शक्ति के स्थानांतरण का प्रदर्शन करना है जो कि भविष्य के अनुप्रयोगों जैसे कि अंतरिक्ष में रोबोटिक्स, डॉकिंग से अलग होने के बाद समग्र अंतरिक्ष यान नियंत्रण और पेलोड संचालन के लिए आवश्यक है।

पीएसएलवी रॉकेट में दो अंतरिक्ष यान- स्पेसक्राफ्ट ए (एसडीएक्स01) और स्पेसक्राफ्ट बी (एसडीएक्स02) को एक ऐसी कक्षा में रखा जाएगा जो उन्हें एक दूसरे से पांच किलोमीटर दूर रखेगी। बाद में, इसरो मुख्यालय के वैज्ञानिक उन्हें तीन मीटर तक करीब लाने की कोशिश करेंगे, जिसके बाद वे पृथ्वी से लगभग 470 किलोमीटर की ऊंचाई पर एक साथ मिल जाएंगे। इसरो अधिकारियों ने बताया कि यह प्रक्रिया सोमवार को निर्धारित प्रक्षेपण के लगभग 10-14 दिन बाद होने की उम्मीद है। 'स्पैडेक्स मिशन' में 'स्पेसक्राफ्ट ए' में हाई रेजोल्यूशन कैमरा है, जबकि 'स्पेसक्राफ्ट बी' में मिनिएचर मल्टीस्पेक्ट्रल पेलोड और रेडिएशन मॉनिटर पेलोड शामिल हैं।

स्कूली बच्चों द्वारा तैयार लकड़ी की नेम प्लेट और पोट्रेट उपहार में पाकर मुख्यमंत्री साय ने जताई खुशी

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और कैबिनेट के मंत्रीगणों के लिए नारायणपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत मडानार स्कूल से आज विशेष उपहार आया। शासकीय उच्च प्राथमिक शाला मडानार के स्कूली बच्चों ने मुख्यमंत्री और सभी मंत्री गणों के लिए अपने हाथों से तैयार लकड़ी की नेम प्लेट भेंट की। मुख्यमंत्री श्री साय उपहार पाकर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने इस नेम प्लेट को तत्काल मंत्रालय स्थित अपने चेंबर के टेबल पर लगवाया और सभी मंत्रियों से भी कहा कि सभी अपने चेंबर में इसे लगवाएं। इन बच्चों ने आज मुख्यमंत्री से मंत्रालय स्थित उनके कार्यालय कक्ष में मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर कहा कि बस्तर की अद्भुत कला को जिस समर्पण के साथ हमारे बच्चे आगे बढ़ाने का काम कर रहे है, वह सराहनीय है।

प्रमुख समाचार

राहुल के विदेश दौरे पर बवाल, भाजपा ने उठाए सवाल

भाजपा ने राहुल गांधी पर तीखा हमला करते हुए दावा किया कि कांग्रेस सांसद नए साल का जश्न मनाने के लिए वियतनाम गए हैं जबकि देश पूर्व पीएम मनमोहन सिंह की मौत पर शोक मना रहा था। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, जिनकी 26 दिसंबर को मृत्यु हो गई, के सम्मान में पूरे देश में सात दिवसीय राष्ट्रीय शोक मनाया जा रहा है, इस दौरान पूरे देश में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। इस बीच, कांग्रेस पार्टी ने बीजेपी के आरोप पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि राहुल गांधी निजी विदेश यात्रा पर गए थे और किसी को किसी की निजता से जुड़े मामलों पर कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। कांग्रेस सांसद मनिकम टैगोर ने कहा कि संघी ये %डायवर्जन% की राजनीति कब बंद करेंगे? जिस तरह से मोदी ने डॉ. साहब को यमुना किनारे अंतिम संस्कार के लिए जगह नहीं दी और जिस तरह उनके मंत्रियों ने डॉ. साहब के परिवार को घेर लिया, वह शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि यदि गांधी निजी तौर पर यात्रा करते हैं, तो इससे आपको परेशानी क्यों होती है? कांग्रेस सांसद सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा कि बीजेपी सिर्फ झूठ बोलती है।

छात्रों के समर्थन में चिराग पासवान, लाठीचार्ज से नाराज

पटना। बिहार लोक सेवा आयोग की 70वीं संयुक्त परीक्षा को रद्द कराने की मांग को लेकर पटना में पिछले कई दिनों से छात्रों का प्रदर्शन जारी है। इसको लेकर राजनीति भी खूब हो रही है। जहां विपक्ष नीतीश सरकार पर हमलावर है। वहीं, सत्तारूढ़ एनडीए के भीतर भी हलचल देखने को मिल रही है। लोजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने इसको लेकर लंबा एक्स पोस्ट लिखा है। चिराग ने कहा कि बिहार के युवाओं और बिहार लोक सेवा आयोग अभ्यर्थियों के मुद्दों को लेकर एनडीए सरकार के प्रमुख सहयोगी होने के नाते मैंने बिहार सरकार और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी से तुरंत हस्तक्षेप करने की अपील की है, जिसके परिणामस्वरूप सरकार की ओर से मुख्य सचिव ने अभ्यर्थियों और छात्रों के साथ संवाद की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह हमारी सरकार की सकारात्मक सोच और छात्रों के प्रति संवेदनशीलता का परिणाम है। मैं अभ्यर्थियों से भी अपील करता हूं कि वे शांतिपूर्ण और रचनात्मक तरीके से अपनी बातों को सरकार के समक्ष रखें और किसी भी राजनीतिक व्यक्तियों के बहकावे में आने से बचें।

सरकारी योजना का लाभ लेने भुगतान नहीं करें: ममता

संदेशखली (पश्चिम बंगाल) । तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेताओं द्वारा कथित तौर पर जमीन हड़पने और महिलाओं के यौन उत्पीड़न को लेकर इस साल की शुरुआत में हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद संदेशखली के पहले दौरे पर पहुंचीं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने स्थानीय लोगों से कहा कि वे किसी भी सरकारी योजना का लाभ लेने के लिए किसी को भी भुगतान न करें। बनर्जी ने सार्वजनिक वितरण कार्यक्रम की अध्यक्षता करने के लिए उत्तर 24 परगना जिले में सुंदरबन की सीमा पर स्थित द्वीप का दौरा किया।

मुख्यमंत्री ने कहा, ''हम जो कल्याणकारी योजनाएं चला रहे हैं, उनके लिए किसी को पैसे न दें। ये कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जाते हैं और पैसा राज्य का है। आपको सीधे अपने बैंक खातों के माध्यम से लाभ मिल रहा है। इसे याद रखें। पैसा लोगों का है। यह आपका अधिकार है।'' उन्होंने स्थानीय महिलाओं से भी आग्रह किया कि अगर कोई उन्हें किसी कारण से बुलाता है तो वे ध्यान न दें। बनर्जी ने आरोप लगाया कि संदेशखली में विरोध प्रदर्शन को भड़काने के लिए भारी मात्रा में धन का इस्तेमाल किया गया।

11 वीं की छात्रा ने जीभ काटकर भोलेनाथ को चढ़ाई

सक्ती। छत्तीसगढ़ के सक्ती अंधभक्ति की एक हैरान करने वाली घटना सामने आई है, जहां एक 11वीं कक्षा की छात्रा ने शंकर भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाने के लिए अपनी जीभ काटकर भगवान को अर्पित कर दी. घटना के बाद छात्रा लहूलुहान हालत में मंदिर में मौजूद है. बताया जा रहा है कि जीभ काटने के बाद छात्रा ने मंदिर में खुद को बंद कर लिया है और साधना में लीन हो गई है. इस घटना की जानकारी लगते ही इलाके में सनसनी फैल गई है. यह पूरा मामला फ़ोगरम चौकी क्षेत्र के देवरघटा गांव का है.जानकारी के मुताबिक, छात्रा ने कागज पर एक संदेश लिखा है जिसमें उसने कहा है कि वह दो दिन बाद खुद बाहर आ जाएगी. साथ ही उसने किसी को भी मंदिर में शोर गुल ओर अंदर नहीं आने की चेतावनी दी है. साथ ही उसने लिखा है कि अगर कोई अंदर आया तो खुद को मार डालेगी.

नए साल पर खुशी मनाएं, हुड़दंग बर्दाश्त नहीं: डीजीपी

लखनऊ। 2024 का आखिरी दिन आपका मंगलमय रहे और आप नव वर्ष 2025 का स्वागत कर सकें इसके लिए आपको, उसमें भी खासकर युवाओं को अपने ऊपर कुछ नियंत्रण रखना होगा। नए साल का स्वागत हुड़दंग से करने की जगह आप अपने पूरे साल भर का प्लान तैयार करें, कैसे आपको आगे बढ़ना और अपना लक्ष्य हासिल करना है। लेकिन आप अनियंत्रित हुए और आपकी वजह से किसी को परेशानी हुई तो यूपी पुलिस आपके लिए मुसीबत का सबक बन सकती है। क्योंकि उसके कंधों पर प्रदेश की 24 करोड़ जनता की सुरक्षा के अलावा कानून व्यवस्था संभाले की भी जिम्मेदारी है। इसके लिए पूरे प्रदेश में संवेदनशील स्थान चिन्हित कर लिए गए हैं। इन स्थानों पर डिप्टी एसपी व एएसपी स्तर के अधिकारियों के नेतृत्व में पुलिस बल तैनात रहेगा।खासकर शराब पीकर गाड़ी चलाने व हुड़दंग करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के आदेश दिए गए हैं। उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) प्रशांत कुमार ने प्रदेश के सभी पुलिस कमिश्नरों, एसपी, डीआईजी व आईजी को ऐसे निर्देश दिए हैं।

दिल्ली में हिचकोले खाती केजरीवाल की चुनावी नैया

कृष्णमोहन झा

अगले साल की पहली तिमाही में विधानसभा के चुनाव हेतु सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी के साथ ही कांग्रेस और भाजपा की भी अपनी तैयारियां चरम पर पहुंच चुकी हैं और यह तो तय है कि आम आदमी पार्टी ने 2015 एवं 2020 में संपन्न विधानसभा चुनावों में प्रचंड जीत हासिल कर जो इतिहास रचा था उसे आगामी विधानसभा चुनावों में भी दोहराने के लिए वह कोई कसर बाकी नहीं रखेगी है लेकिन वह खुद भी इस हकीकत से अच्छी तरह वाकिफ है कि दिल्ली में इस समय जो राजनीतिक माहौल है वह पिछले दो? विधानसभा चुनावों से काफी अलग है। इन चुनावों में एक ओर जहां उसे भाजपा कड़ी चुनौती देने के लिए कमर कसकर तैयार हो चुकी है वहीं दूसरी ओर कांग्रेस उसकी चुनावी संभावनाओं को धूमिल करने का कोई मौका नहीं छोड़ रही है । गौरतलब है कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस दोनों ही यद्यपि विपक्षी इंडिया गठबंधन का हिस्सा हैं परन्तु दिल्ली विधानसभा की सभी 70 पर दोनों दल अपने अलग-अलग उम्मीदवार खड़े करने का फैसला कर चुके हैं।भाजपा के लिए यह स्थिति निश्चित रूप से फायदेमंद है जिसने दिल्ली विधानसभा के आगामी चुनावों में उसकी जीत की संभावनाओं को निश्चित रूप से बलवती बना दिया है। गौरतलब है कि पंजाब और हरियाणा विधानसभा के चुनावों में भी कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने कोई गठजोड़ नहीं किया था। पंजाब में तो आम आदमी पार्टी एक तरफा जीत हासिल कर सरकार बनाने में कामयाब हो गई परन्तु हरियाणा में आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार खड़े हो जाने से कांग्रेस की चुनावी संभावनाओं को इस कदर प्रभावित किया कि सत्ता में वापसी की आस लगाए बैठी कांग्रेस को दस साल बाद भी सदन के अंदर विपक्ष में बैठने पर मजबूर होना पड़ा ।यह नि:संदेह आश्चर्यजनक है कि दोनों पार्टियां हरियाणा के चुनाव परिणामों से कोई सबक लेने के लिए तैयार नहीं हैं । यह हकीकत दिल्ली में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के द्वारा एक दूसरे के खिलाफ जारी बयानबाजी से उजागर हो चुकी है। पिछले काफी समय से दोनों पार्टियों के नेता एक दूसरे के खिलाफ जिस तरह की बयानबाजी कर रहे हैं उससे तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनकी भाजपा से कोई प्रतिद्वंदिता नहीं है। जाहिर सी बात है कि दोनों पार्टियों की आपसी लड़ाई दिल्ली में भाजपा की ही जीत का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। गौरतलब है कि गत लोकसभा चुनावों में दिल्ली की सात सीटों के लिए आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने चुनावी समझौता किया था परन्तु सात में से एक भी सीट पर आम आदमी पार्टी अथवा कांग्रेस को जीत का स्वाद चखने को नहीं मिला और तभी से उनके बीच दूरियां बनने का सिलसिला शुरू हो गया था जो यहां तक आ पहुंचा कि दिल्ली विधानसभा की सभी 70 सीटों पर दोनों पार्टियों ने अपने अपने उम्मीदवार उतारने की घोषणा कर दी । आम आदमी पार्टी ने 2015 में उसने 70 में से 67 सीटों पर और 2020 में उसने 70 में से 62 सीटों पर शानदार जीत हासिल की थी लेकिन अगर कांग्रेस दिल्ली विधानसभा की सभी 70 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े करने का फैसला कर चुकी है तो उसका यह साहस नि:संदेह आश्चर्यजनक है क्योंकि दिल्ली विधानसभा के लिए 2015 और 2020 में संपन्न चुनावों में उसे 70 में से एक भी सीट परंतु जीत का स्वाद चखने को नहीं मिला था। इस सबके बावजूद कांग्रेस जो चुनावी रणनीति अपना रही है उसे देखकर तो ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी दिलचस्पी अपनी चुनावी संभावनाओं को बेहतर बनाने में नहीं बल्कि आप की संभावनाओं को धूमिल करने में है। दरअसल दिल्ली में असली मुकाबला आम आदमी पार्टी और भाजपा के बीच ही होने जा रही है। कांग्रेस पार्टी तो आप के विरुद्ध नित नयी बयानबाजी करके चुनाव में बस अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है और कांग्रेस नेताओं के द्वारा की जा रही बयानबाजी से आप इस कदर उत्तेजित हो उठी है कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना और आप सांसद संजय सिंह ने कांग्रेस पर भाजपा के साथ मिली भगत का आरोप लगाने में भी कोई संकोच नहीं किया।

संजय सिंह ने तो यहां तक कह दिया कि दिल्ली विधानसभा के लिए कांग्रेस के प्रत्याशियों की सूची देखकर ऐसा लगता है कि उसके पीछे भाजपा की मदद करने की मंशा है। आप ने दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अजय माकन द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के विरुद्ध लगाए गए आरोपों पर सख्त नाराजगी जताते हुए इंडिया गठबंधन से कांग्रेस के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की है। गौरतलब है कि दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के एक और वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद संदीप दीक्षित ने भी आप सरकार पर दिल्ली की जनता से वादा खिलाफी का आरोप लगाया है। आगामी विधानसभा चुनावों में नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस ने संदीप दीक्षित को उम्मीदवार घोषित किया है जहां उनका मुकाबला पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से होने जा रहा है। आप को यह चिंता सता रही है कि आगामी चुनावों में कांग्रेस अगर मुस्लिम, दलित और पूर्वांचल के मतदाताओं को आकर्षित करने में सफल हो जाती है तो चुनावी संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना तय है।दिल्ली विधानसभा के आगामी चुनाव हेतु भाजपा संभवत: वही रणनीति अपना सकती है जो गत वर्ष संपन्न मध्यप्रदेश विधानसभा के चुनावों में बेहद कारगर साबित हो चुकी है।

बीजापुर में वर्ष 2024 में 406 अभियान में हुए 48 मुठभेड़ 58 नक्सली ढेर

■ 505 गिरफ्तार, 189 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में सरकार बदलने के बाद से ही लगातार नक्सलियों के गढ़ में सुरक्षाबलों के कैम्प लगाए जा रहे हैं। साथ ही सुरक्षाबलों के जवान उन इलाकों तक पहुंच कर मुठभेड़ कर रहे हैं, जिन इलाकों में कभी जवानों का पहुंचना कठिन हुआ करता था। इसमें लगातार मिल रही सफलताओं के बाद अब जवानों और सरकार ने यह दावा करना शुरू कर दिया है कि बस्तर में नक्सलवाद अब अंतिम सांस ले रहा है। छत्तीसगढ़ में सत्ता परिवर्तन के बाद वर्ष 2024 में पुलिस को इन 12 महीनों में बड़ी सफलताएं मिली हैं। पुलिस नें नक्सलियों के विरूद्ध 406 प्रभावी अभियान चलाकर नक्सलियों के कई बड़े कैडर को मार गिराया हैं। 406अभियानमेंहुए48 मुठभेड़ में 58 नक्सलियों को ढेरकर दिया गया है, 505 नक्सली गिरफ्तार किए गये हैं, वहीं 189नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया है। राज्य से लेकर केंद्र के बड़े भाजपा के नेता नक्सलियों का सफाया करने लगातार बस्तर संभाग का दौरा कर रहे हैं। हाल ही में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह नें बीजापुर जिले में खूंखार नक्सली हिडमा के गांव के पास चौपाल लगाकर मार्च 2026 तक बस्तर को नक्सल मुक्त बनाने के बात कही थी। इसी बीच प्रदेश के गृहमंत्री विजय शर्मा ने बड़ा ऐलान किया है। मंत्री विजय शर्मा ने आत्मसमर्पित करने वाले नक्सलियों को प्रतिमाह 10 हजार रुपए देने की बड़ी घोषणा की है। जिसका असर आओ वाले दिनों में देखने को मिलेगा। वहीं दूसरी ओर किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने में विफल रहे नक्सली अब ग्रामीणों को मुखबीर के नाम पर हत्या की वारदात को अंजाम देकरअपनी मौजूदगी दर्ज करवा रहे हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बीजापुर जिले के नक्सलियों के कोर एरिया में वर्ष 2024 में पुलिस कैम्पो का जाल बिझाया गया हैं। वर्ष 2024 में 12 नए कैम्प खोले गए है। कोर इलाकों में पुलिस लगातार गस्त कर नक्सलियों पर दबाव बनाने कामयाब रही है। बीजापुर जिले में अब तक 406 बार ऑपरेशन लांच किए गए हैं। जिसमे 48 बार मुठभेड़ हुए है। मुठभेड़ में 58 नक्सलीयों को मार गिराने में पुलिस नें सफलता हासिल कि हैं। जिले में हुए मुठभेड़ में पुलिस को बड़े हथियार हाथ लगे हैं। जिनमे 56 हथियार, एसएलआर, एलएमजी, एके 47 सहित इंसास बरामद किया गया हैं। मुठभेड़ के बाद बरामद हथियारों से नक्सलियों कि कमर टूट गई हैं। इस दौरान वर्ष 2024 में नक्सलियों से लोहा लेने मैदान में उतरे मात्र 6 जवानो की शहदत हुई हैं। नक्सलियों के बिछाये एम्बुस में फंसकर 6 जवान शहीद हुए और 63 जवान घायल हुए है। नक्सल वरदातो में अब तक 33 आम नागरिक की मौत हुई है। जिसमे 5 लोगों की आईडी से मौत हुई है, वहीं 28 को धारदार हथियार से मारा गया हैं। जिनमे भाजपा कार्यकर्तता, आम नागरिक शामिल हैं। लगातार दबाव पडने के बाद नक्सली बड़ी संख्या में आत्मसमर्पण किये हैं। पुलिस नें कार्यवाही करते हुएअब तक 505 नक्सलीयों को गिरफ्तार किया हैं। वही 189 नक्सली आत्मसमर्पण किये हैं। इस वर्ष 2024 में पुलिस के साथ बीजापुर जिले में नक्सलियों की 5 बड़ी मुठभेड हुई। जिसमे बड़े नक्सली कैडरो को मार गिराने में पुलिस को सफलता मिली। इनमें पीडिया में 12, लेण्डरा में 13 चुकुरभट्टी में 6 रेखपल्ली में 3 और बन्देपारा में 2 नक्सलीयों को पुलिस नें मार गिराया है।

सड़क नहीं तो कंधे पर पत्नी को शख्स ने पहुंचाया अस्पताल

मनेंद्रगढ चिरमिरी भरतपुर। सरगुजा का मनेंद्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर इलाका स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल का विधानसभा क्षेत्र है। इस जिले से स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल विधायक हैं। प्रदेश के स्वास्थ्य महकमे की जिम्मेदारी श्याम बिहारी जायसवाल संभाल रहे हैं। 26 साल बाद इस इलाके के कई क्षेत्र ऐसे हैं। जहां बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी है। 28 दिसंबर 2024 को ईटीवी भारत ने खबर दिखाई कि कैसे एक शख्स को सड़क नहीं होने की वजह से परेशानी उठानी पड़ी। नावाडीह में एक शख्स को सड़क नहीं होने की वजह से अपनी बीमार पत्नी को कंधे पर लादकर अस्पताल तक पहुंचाना पड़ा।

28 दिसंबर को एक शख्स को सरभोका के नावाडीह में अपनी बीमार पत्नी को कंधे पर लादकर पांच किलोमीटर का सफर तय करना पड़ा। पंडो जनजाति की महिला उर्मिला गर्भवती थी। उसे प्रसव पीड़ा हो रही थी। गांव में सड़क नहीं थी लिहाजा उसके पति ने पत्नी की जिंदगी बचाने की ठानी और उसे गोद में उठाकर अस्पताल की ओर चल पड़ा। शख्स ने पांच किलोमीटर तक सफर किया और उसे अस्पताल पहुंचाया।

सरभोका के लोगों को हर बार बीमारी और इमरजेंसी की स्थिति में इस तरह ही परेशान होना पड़ता है। जब जब यहां कोई बीमार पड़ता है तो उसे खाट पर लादकर, कांवड़ के सहारे या गोद के सहारे अस्पताल पहुंचाना पड़ता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सरभोका और नावाडीह जैसे इलाके में सड़क की कमी है। मीडिया में लगातार इस इलाके की ऐसी खबरें दिखा रहा है। यहां एक महीने के अंदर तीन बार ऐसी घटनाएं हो चुकी है। जब बीमार शख्स को खाट पर लादकर अस्पताल पहुंचाना पड़ा। सड़क नहीं होने की वजह से इस इलाके के लोग यह समस्या झेल रहे हैं। मीडिया पर खबर दिखाए जाने के बाद सरकार इस मसले पर एक्शन में है।

मीडिया से बात करते हुए छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा कि सड़क न होने की वजह से स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास नवाडीह इलाके में नहीं हो पाया है। जिला प्रशासन से इस पर चर्चा की गई है। जल्द ही प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत सड़क का निर्माण शुरू किया जाएगा। इससे हेल्थ सर्विसेस नवाडीह गांव में आसानी से पहुंच सकेगी। पिछड़ी जनजाति के लोगों को पीएम जनमन योजना के तहत यहां सड़क का निर्माण किया जाएगा। इससे सभी जनजातियों को फायदा होगा।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने एमसीबी के सरभोका और नावाडीह में सड़क की कमी को दूर करने की बात कही है। अब देखना होगा कि मंत्री जी के बयान के बाद कब इस इलाके में सड़क निर्माण का कार्य शुरू हो पाता है।

पिछड़ा वर्ग समाज का आंदोलन बस्तर बंद का आह्वान

निकाय और पंचायत चुनाव में आरक्षण कटौती का आरोप

बस्तर। छत्तीसगढ़ में कुछ महीनों बाद निकाय और ग्राम पंचायत चुनाव होने हैं।जिसके लिए आरक्षण प्रक्रिया पूरे जिले में संपन्न हो चुकी है।लेकिन इस आरक्षण प्रक्रिया को लेकर पिछड़ा वर्ग समाज ने ऐतराज जताया है।जिसे लेकर बस्तर बंद बुलाया गया है।30 दिसंबर को पिछड़ा वर्ग समाज के बस्तर बंद का व्यापस असर देखने को मिला है।

सुबह से ही बस्तर बंद को सफल बनाने के लिए पिछड़ा वर्ग समाज के सदस्य रैली निकालकर व्यापारिक प्रतिष्ठानों को बंद कराने की अपील कर रहे हैं।इस दौरान कई व्यापारियों ने बंद का समर्थन करते हुए अपनी दुकानें बंद रखी। जगदलपुर शहर का संजय मार्केट, गोल बाजार और रोड के किनारे मौजूद कई दुकानें बंद हैं।पिछड़ा वर्ग समाज के संभागीय अध्यक्ष तरुण सिंह धाकड़ ने कहा कि विधानसभा-लोकसभा के बाद छत्तीसगढ़ में नगरीय निकाय चुनाव और पंचायत चुनाव आगामी दिनों में संपन्न होगा।जिसमें समाज की सीटें काट दी गई है।

संभागीय अध्यक्ष तरुण सिंह धाकड़ ने कहा इस चुनाव में पिछड़ा वर्ग समाज की सीटों को काटा गया है। आरक्षण की प्रक्रिया में पिछड़ा वर्ग समाज को नुकसान झेलना पड़ा है। जिसके कारण पिछड़ा वर्ग समाज ने 30 दिसंबर को बस्तर संभाग बंद करने का आह्वान किया। सुबह से ही घूम-घूमकर बस्तर बंद को सफल बनाया जा रहा है। इसके बाद धरना प्रदर्शन करके चक्का जाम भी किया जाएगा।

तरुण सिंह धाकड़ के मुताबिक सरकार को चेतावनी भी दी जाएगी। यदि धरना प्रदर्शन, बस्तर बंद और चक्का जाम के बाद भी पिछड़ा वर्ग समाज की मांगों पर सरकार ध्यान नहीं देती है तो आगामी दिनों में उग्र आंदोलन पिछड़ा वर्ग समाज करेगा।

हाइवा ने पैदल चल रहे शख्स को मारी टक्कर

दुर्ग। दुर्ग में नंदिनी थाना क्षेत्र के नंदकट्ठी गांव में नशे की हालत में हाइवा चलाते हुए ड्राइवर ने पैदल चल रहे एक ग्रामीण को अपनी चपेट में ले लिया। टक्कर इतनी तेज थी कि युवक करीब 10 से 15 फिट उछल कर दूर गिरा। इससे उसे गंभीर चोटें आई है। दुर्घटना के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। इसके बाद ग्रामीणों ने हाइवा को घेरकर वहां चक्का जाम कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पुलिस टीम पहुंची और लोगों को समझाइश दिया।

नंदिनी थाना प्रभारी मनीष शर्मा ने बताया कि एक हाइवा नंदकट्ठी से जामुल भिलाई की तरफ जा रहा था। इसी दौरान नंदकट्ठी के पास बने गौठान के पास से एक व्यक्ति पैदल जा रहा था। जिसे हाइवा चालक ने अपने चपेट में ले लिया। ट्रक चालक शराब के नशे में गाड़ी चला रहा था। चालक हाइवा को काफी तेज और लापरवाही पूर्वक चला रहा था और हाइवा चालक विपरीत दिशा से आया और युवक को टक्कर मार दिया।

टक्कर इतनी तेज थी कि युवक फुटबाल की तरह उछलकर 15 फिट दूर जा गिरा। इससे उसके हाथ पैर टूट गए और सिर में गंभीर चोट आई है। दुर्घटना के तुरंत बाद स्थानीय लोगों युवक को बचाने पहुंचे। लोगों को आता देख हाइवा चालक मौके से फरार हो गया। लोगों ने तुरंत घायल को अस्पताल पहुंचाया और नंदिनी पुलिस को सूचना दी। घायल को अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

मृतक की पहचान मदन लाल निषाद के रूप में हुई है। ट्रक चालक घटना के बाद ट्रक सहित भागने की फिराक में था लेकिन लोगों ने पत्थर और डंडा लेकर उसे रोक लिया। लोगों को देखकर चालक मौके से फरार हो गया। दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगो की बड़ी संख्या में में इक्ठठा हो गए और घटना को लेकर नाराजगी जताई हुए चक्काजाम कर दिए। प्रदर्शनकारियों को पुलिस ने समझाया,जिसके बाद लोग शांत हुए। पुलिस हाइवा को जब्त कर चालक की तलाश कर रही है।

भिलाई नगर निगम के बाहर जोरदार प्रदर्शन दया सिंह की अगुवाई में हो रहा घेराव

कमीशन खोरी और भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर प्रदर्शन

भिलाई। भिलाई नगर निगम के बाहर भाजयूमो समर्थक जमकर प्रदर्शन कर रहे हैं। उपनेता प्रतिपक्ष दया सिंह के नेतृत्व में अलग अलग वार्ड के पार्षद और समर्थक नगर निगम भिलाई के दफ्तर के बाहर नारेबाजी कर रहे हैं। उन्होंने निगम में कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार का आरोप भी लगाए हैं।

भिलाई नगर निगम में उपनेता प्रतिपक्ष दया सिंह ने विभिन्न वार्डों में समस्याओं सहित 20 सूत्रीय मांगों को लेकर भिलाई नगर निगम के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उपनेता प्रतिपक्ष दया सिंह ने कमीशनखोरी का भी आरोप लगाया है। दया सिंह का कहना है कि प्रदेश में सुशासन की सरकार है। लिहाजा कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

पुलिस ने प्रदर्शन को देखते हुए पहले ही निगम दफ्तर के बाहर बैरिकेटिंग कर रखी थी। लेकिन भाजपा पार्षद और समर्थक निगम प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए निगम दफ्तर के अंदर घुसने की कोशिश करते रहे। प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेटिंग को तोड़ने की भी कोशिश की, लेकिन पहले से मौजूद बड़ी संख्या में पुलिस के जवानों ने उन्हें रोक दिया। अस दौरान पुलिस और भाजयुमो कार्यकर्ताओं के बीच झूमा झटकी भी देखने को मिली।

भारतीय जनता पार्टी पार्षद और समर्थकों ने भिलाई नगर निगम के मुख्य कार्यालय के सामने जमकर प्रदर्शन किया। इसके बाद मीडिया से बात करते हुए भिलाई नगर निगम के नेता प्रतिपक्ष उदय सिंह ने चेतावनी देते हुए कहा कि 20 सूत्री मांग को लेकर हम आज धरना प्रदर्शन किए हैं, जल्द से जल्द मांग पूरी नहीं की जाएगी तो उग्र प्रदर्शन किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

अवैध कबाड़ पर पुलिस ने कसा शिकंजा

रायगढ़। जिले में अवैध कबाड़ परिवहन के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कार्रवाई में आरोपियों के पास से 2 लाख रुपए के करीब का स्क्रैप जब्त किया गया है। 28 दिसंबर को मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने सलासर चौक के पास माजदा वाहन (क्रमांक सीजी11बीएम 6416) को रोका। जांच में वाहन में 4 टन 500 किलोग्राम कबाड़ पाया गया, जिसकी अनुमानित कीमत रू. 1.41 लाख है। वाहन चालक परदेशी यादव (32 वर्ष), निवासी छिंदमुडा, जिला सक्ती, कबाड़ से संबंधित कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सका। 29 दिसंबर को पुलिस ने ग्राम गेरवानी में मुखबिर की सूचना पर टाटा माजदा (क्रमांक सीजी13एआर-1693) को रोका। वाहन में 2 टन 120 किलोग्राम कबाड़ मिला, जिसकी कीमत 46,000 रुपए है। वाहन चालक रायगढ़ निवासी नामधारी विश्वकर्मा (32 वर्ष) भी कबाड़ परिवहन के लिए वैध दस्तावेज नहीं दिखा सका। दोनों मामलों में पुलिस ने कुल 6 टन 620 किलोग्राम कबाड़ और दो वाहनों को जब्त किया है।

नववर्ष से पहले बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे मां दंतेश्वरी मंदिर

दंतेवाड़ा । वर्ष 2024 का अंतिम दो दिवस बचे हैं, इस वर्ष के अंत और नए साल 2025 की शुरुआत से पहले बड़ी संख्या में श्रद्धालु बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी के मंदिर पहुंच रहे हैं। मां दंतेश्वरी मंदिर में न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि ओडिशा, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक समेत कई राज्यों से भक्त अपनी मनोकामनाएं लेकर माता के दरबार पहुंच रहे हैं। मां दंतेश्वरी माता के प्रति लोगों की आस्था प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। दंतेवाड़ा में बाहर से श्रद्धालु दर्शन करने के बाद पर्यटक यहां के प्राकृतिक नजारों का दीदार करते हैं। यहां फागुन मेला, चैत्र और शारदीय नवरात्र के बाद दिसंबर और जनवरी के महीने में सबसे ज्यादा श्रद्धालु पहुंचते हैं। नए साल के पहले दिन बस्तरवासी माता दंतेश्वरी के दर्शन कर आशीर्वाद लेते हैं, इस वर्ष नए साल से पहले ही माता के मंदिर में देवी दर्शन के लिए भीड़ उमड़ रही है. भक्तों का कहना है कि माता के दर्शन कर नए साल का जश्न मनाएंगे। शीतकालीन छुट्टी होने की वजह से दंतेवाड़ा में भीड़ बढ़ गई है, लोगों को धर्मशाला और होटलों में भी जगह नहीं मिल रही है।

बस्तर का धुड़मारास गांव जो मैप में नजर नहीं आता लेकिन विश्व पर्यटन विलेज में है नाम

बस्तर। छत्तीसगढ़ का बस्तर अपनी खूबियों और नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर है। पर्यटन के क्षेत्र में एक राह मुड़ती है तो एक नई राह अपने आप जुड़ती है। यही कारण है कि पर्यटन के क्षेत्र में बस्तर ने 2024 में विश्वभर में अपनी नई पहचान बनाई है। 2024 बस्तर के लिए पर्यटन के क्षेत्र में काफी ऐतेहासिक रहा है। बस्तर के कांगेर वेली नेशनल पार्क के सरहदी इलाके में बसे धुड़मारास गांव ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है। धुड़मारास को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन की तरफ से सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव के उन्नयन कार्यक्रम के लिए चयनित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र के पर्यटन ग्राम उन्नयन कार्यक्रम के लिए 60 देशों से चयनित 20 गांवों में भारत से बस्तर के धुड़मारास ने अपनी जगह बनाई है। धुड़मारास गांव छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र बस्तर में मौजूद है। पहाड़ों और नदी के बीच घने जंगल में प्रकृति की गोद में यह गांव बसा हुआ है। यह गांव गूगल मैप पर नजर नहीं आता है और ना ही इसे राजस्व या वन गांव का दर्जा मिला है।

डंडे से पीटकर बदमाशों ने की युवक की हत्या

दुर्ग। पद्मनाभपुर थाना क्षेत्र में बदमाश युवकों ने एक सिपाही के बेटे को डंडे से वारकर मौत के घाट उतार दिया। आरोपी घटना को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गए। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस में पांच-छह संदेहियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। पद्मनाभपुर थाना प्रभारी केशव कोशले ने बताया कि घटना रविवार रात करीब 9.30 बजे कसारीडीह सिविल लाइन की है। पुलिस लाइन में रहने वाले आरक्षक बेटा चेतन साहू (21) और तुलेश साहू एक ही युवती से प्रेम करते थे, लेकिन युवती अभी अंबिकापुर में रहती है। लव ट्रेंगल की वजह से दोनों में विवाद की स्थिति बनी। रात में चेतन सिविल लाइन पहुंच गया, जहां बदमाश युवकों ने प्लानिंग के साथ सिविल लाइन में उसे घेर लिया और मारपीट शुरू कर दी। आरोपियों के हाथ में डंडा था। उसी डंडे से चेतन को मारने लगे। उसने अपने को बचाने की कोशिश की, लेकिन बदमाश युवकों ने डंडा से उसके सिर पर वार कर दिया।

मामूली विवाद में शख्स ने युवक को घोंपा चाकू

रायगढ़। जुटमिल थाना क्षेत्र में मामूली विवाद के बाद एक युवक के पेट में धारदार चाकू से वार करते हुए उसे घायल कर फरार हो जाने का मामला सामने आया है। महिला की शिकायत के बाद पुलिस अपराध दर्ज कर आरोपी की पतासाजी में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक, जुटमिल थाने में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए रूबी सारथी (29) ने बताया कि वह निगम कॉलोनी बजरंग पारा में रहती है। बीती रात उसने अपने मोहल्ले के ही एक युवक सोनू चौहान को घर सामान लेने के लिए भेजा था। उसी समय मिटठुमुडा मोहल्ले का लोकेश चौहान आया और सोनू चौहान और लोकेश चौहान के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ और फिर लोकेश चौहान ने सोनू चौहान को अश्लील गाली-गलौज जान से मारने की धमकी देते हुए पेट के बाईं तरफ चाकू मर दी। चाकू के वार से घायल युवक जमीन पर गिरकर लहूलुहान हालत में तड़पने लगा, जिसे मोहल्ले वासियों ने तत्काल उपचार के लिये जिला अस्पताल लाकर भर्ती कराया गया है, जहां उसका उपचार जारी है।

साल भर में अलग-अलग बीमारियों से हुई 10 बच्चों की मौत

■ विधानसभा में भी गूंजा मुद्दा, व्यवस्था जस की तस

बीजापुर। बीजापुर जिले में साल 2024 में अलग-अलग आश्रम- छात्रावास में दस बच्चों की मौत हुई हैं। आठ बच्चों की मौत बीमारी, एक की मौत का कारण आत्महत्या तो वहीं एक बच्ची की मौत जलने से हुई थी। इन बच्चों की मौत से आश्रम-छात्रावास की व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। इन सवालो के बाद कई दौर की जांच भी सालभर तक होती रही। लेकिन जांच बेनतीजा ही साबित हुई। दरअसल आश्रम छात्रावास में बच्चों को मिलने वाली सुविधा के साथ ही खाने-पाने की गुणवत्ता पर सवाल उठते रहे है। मौत के प्रमुख कारणों में बच्चों का बीमार होना है। उल्टी, दस्त और फूड प्वाइजनिंग जैसे कारणों से बच्चों की मौत से स्पष्ट होता है कि लापरवाही तो हुई है। अगर बच्चों को बेहतर सुविधा के साथ खानपान की अच्छी गुणवत्ता मिलती तो शायद वे सलामत होते।

आवापल्ली स्थित पोटाकेबिन में 6 मार्च को आग लगने से एक बच्ची की मौत हो गई थी। इस मामले के बाद पोटाकेबिन की सुरक्षा पर सवाल खड़े हुए थे। दरअसल पोटाकेबिन में आग लगने की घटनाओं से निपटने के कोई इंतजाम नहीं हैं। उस वक्त इस संबंध में आदेश भी जारी किए गए,लेकिन आज भी पोटाकेबिन का संचालन लापरवाही के साथ हो रहा है।

जिले में विपक्षी पार्टियां हमेशा आरोप लगाती रही हैं कि पोटाकेबिन और आश्रम-छात्रावास का अधीक्षक बनने के लिए जिले में बोली लगती है। एक मोटी रकम सालाना तक का तय है। इससे ही अंदाजा लगाया जा सकता है, कि आश्रम-छात्रावास में बच्चों का कितना ख्याल रखा जाता है। उनकी सेहत जिम्मेदारों के लिए कितनी महत्वपूर्ण है। बच्चों की सेहस से खिलवाड़ का सिलसिला उन्हें परोसे जाने वाले घटिया खाने से होता है। आए दिन आश्रम-छात्रावासों से ऐसी तस्वीरें सामने आती हैं जब बच्चों को गुणवत्ताहीन खाना परोसा जाता है।

जिले के इन आश्रम- छात्रावास में बच्चों की मौत हुई

■ 27 फरवरी जेवियर कुजूर 13 वर्ष 7वी का छात्र- प्री. मैट्रिक बालक छात्रावास चेरागंगी (फांसी लगाकर आत्महत्या) ■ 6 मार्च लिप्सा. 04 वर्ष आवासीय बालिका पोटाकेबिन तिम्मापुर (पोटाकेबिन में आग लगने की वजह से जलकर मौत हो गई। ■ 19 अप्रैल रजनी यालम 20 वर्ष छात्रा की ईलाज के दौरान मौत हुई तारलागुड़ा की रहने वाली थी। ■ 12 जुलाई दीक्षिता रेगा उम्र- 09 वर्ष कक्षा चौथी आवासीय बालिका पोटाकेबिन तारलागुड़ा (मलेरिया से मौत) ■ 14 जुलाई वेदिका जव्वा 4 वर्ष कभा तीसरी आवासीय बालिका पोटाकेबिन संगमपली (मलेरिया से मौत) ■ 08 अगस्त अनिता कुरसम 04 वर्ष कक्षा-दूसरी 6 कन्या आश्रम बेदरे (बुखार और उल्टी दस्त) ■ 27 सितंबर राकेश पुनम 08 वर्ष कक्षा पहली - आवासीय विद्यालय दुगईगुडा (उल्टी दस्त से) ■10 दिसंबर शिवानी उम्र माता रुकमणी कन्या आवासीय आश्रम धनोरा (फूड पाईजनिंग से मौत) ■ 11 दिसंबर विमला कवासी कक्षा- 10वीं 15वर्ष आवासीय कन्या पोटाकेबिन नेमेड (सिक लिंग पेन)।

न्यू ईयर से पहले भिलाई में बड़ी चोरी

■ शराब ठेकेदार के घर से 60 लाख के जेवर पार

भिलाई। साल खत्म होने के पहले शहर के विवेकानंद नगर कोहका में चोरी की एक बड़ी वारदात हुई है। शराब ठेकेदार के घर चोरों ने वारदात को अंजाम दिया है। शराब ठेकेदार का नाम अरविंद सिंह है। जिसके घर से चोरों ने 60 लाख रुपये के सोने के आभूषण और 70 हजार रुपये कैश पार किया है।

सुपेला टीआई राजेश मिश्रा ने चोरी की इस बड़ी वारदात के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया अरविंद सिंह ओडिशा में शराब दुकान का ठेकेदार है। 22 दिसंबर को परिवार के साथ ससुराल बोकारो झारखंड गया था। घर में उसने एक्वेरियम में मछलियां रखी हुई है। जिन्हें दाना डालने के लिए उसने अपनी नौकरानी को घर की चाबी दी थी। घर से बाहर होने के दौरान अरविंद सिंह घर में लगे सीसीटीवी कैमरे का लाइव फीड अपने मोबाइल पर देखता रहता था। 26 दिसंबर तक सीसीटीवी कैमरे के लाइव फीड में सब कुछ सही दिख रहा था। 27 दिसंबर को सुबह मोबाइल पर सीसीटीवी का फीड चेक किया तो वह बंद मिला। टीआई ने आगे बताया शराब ठेकेदार ने तुरंत घर में काम करने वाली को फोन किया। काम वाली जब घर पहुंची तो देखा कि घर के दरवाजे का ताला टूटा हुआ है। यह सूचना मिलने पर शराब ठेकेदार 28 दिसंबर को भिलाई वापस लौटा। वह सबसे पहले बेडरूम पहुंचा। वहां देखा तो कमरा अस्त व्यस्त था। आलमारी में रखे करीब 800 ग्राम वजनी सोने के आभूषण, चांदी के कुछ सिक्के और करीब 70 हजार कैश गायब मिला। सीसीटीवी कैमरे का डीवीआर भी गायब था। जिसके बाद ठेकेदार ने इसकी शिकायत स्मृति नगर चौकी में की।

वर्ल्ड बैंक ने छत्तीसगढ़ की चिराग परियोजना को किया बंद

■ उद्देश्य के साथ-साथ बजट भी था बहुत बड़ा, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने किया था शुभारंभ

रायपुर। छत्तीसगढ़ समावेशी ग्रामीण एवं त्वरित कृषि विकास (चिराग) परियोजना के उद्देश्य और प्रगति पर असंतोष जताते हुए विश्व बैंक ने इसे बंद करने की घोषणा की है। इस संबंध में बैंक के भारत में कार्यवाहक निदेशक ने केंद्रीय वित्त मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के अलावा छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव, कृषि विभाग की एसीएस और चिराग परियोजना के डॉयरेक्टर को पत्र भेजा है।

अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष (आईएफएडी) और विश्व बैंक द्वारा सह-वित्तपोषित इस परियोजना को बोर्ड ने 15 दिसंबर, 2020 को मंजूरी दी थी। लेकिन बीते चार सालों के दौरान योजना के तहत

लगभग 1.144 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 1 प्रतिशत) का वितरण हुआ है, और न ही लक्षित समुदायों में से किसी को भी परियोजना अनुदान का लाभ नहीं मिला है। अक्टूबर 2022 से परियोजना विकास उद्देश्य और कार्यान्वयन प्रगति दोनों को असंतोषजनक दर्जा दिया गया है।

सितंबर 2024 में त्रिपक्षीय पोर्टफोलियो समीक्षा बैठक के दौरान बात पर सहमति बनी कि परियोजना को किसी भी पुनर्गठन को उचित ठहराने के लिए 2024 के अंत तक प्रदर्शन में काफी सुधार करने और 30 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का वितरण करने की आवश्यकता है। लेकिन इनमें से कोई भी बात पूरी नहीं हुई, लिहाजा प्रस्तावित पुनर्गठन और आंशिक निरस्तीकरण पर परियोजना के क्रियान्वयन को जारी रखने को असंभव बताया।

इस संबंध में, 23 दिसंबर, 2024 को आयोजित बैठक के दौरान हुई चर्चाओं के आधार पर, IFAD और विश्व बैंक दोनों ने यह विचार व्यक्त किया कि परियोजना के कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, परियोजना की शेष अवधि के भीतर परियोजना विकास उद्देश्यों को प्राप्त करना असंभव है। नतीजतन, ढ्ढस्नष्ठ और विश्व बैंक दोनों ने ष्ठश्व के परामर्श से इस बात पर सहमति व्यक्त की कि परियोजना को जल्द से जल्द बंद करना सर्वोत्तम हित में होगा।

बता दें कि पूर्ववर्ती भूपेश बघेल सरकार ने Chhattisgarh Inclusive Rural and Accelerated Agriculture Growth (चिराग) परियोजना का शुभारंभ किया था। परियोजना के तहत किसानों की आमदनी को बढ़ाना, गांवों में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना और युवाओं को विभिन्न तरह की फसलों के उत्पादन में मदद के उद्देश्य से परियोजना को विश्व बैंक ने आर्थिक मदद भी दी है। परियोजना के अंतर्गत आदिवासी इलाकों के स्थानीय युवाओं को मछली पालन, पशु-पालन, उद्यानिकी, विशेष प्रजातियों की फसलों के उत्पादन, क्षेत्रीय जलवायु आधारित पौष्टिक खाद्य पदार्थों के उत्पादन के कामों से जोड़े जाने के अलावा युवाओं को सेल्स और मार्केटिंग का प्रशिक्षण दिया जाना था। युवाओं को अत्याधुनिक कृषि तकनीकों की शिक्षा दी जानी थी, इसके साथ उन्हें स्टार्टअप के लिए प्रशिक्षित और प्रोत्साहित भी किया जाता।

चिराग परियोजना को बस्तर, बीजापुर, दंतेवाड़ा, कांकेर, कोंडागांव, नारायणपुर, सुकमा, मंगेली, बलौदाबाजार, बलरामपुर, जशपुर, कोरिया, सुरजपुर और सरगुजा के आदिवासी विकासखंडों में लागू किया जाना था।

जशपुर का विशेष लोगो बनेगा जिले की नई पहचान

जशपुरनगर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के जन्मदिवस सुशासन दिवस के अवसर पर कुनकुरी के सलियाटोली में आयोजित अटल सुशासन समारोह में जशपुर जिले का विशेष 'लोगो' का शुभारंभ किया था। यह लोगो जशपुर जिले में संचालित सरकारी योजनाओं और शासकीय कामकाज में आने वाले पत्रों में प्रयोग किया जाएगा। लोगो में जशपुर की प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता को बहुत ही खूबसूरती के साथ प्रदर्शित किया गया है।

लोगो एक वृत्ताकार आकार में डिज़ाइन किया गया है, जो एकता और सामंजस्य का प्रतीक है। इसमें हरे रंग का प्रयोग जशपुर की हरी-भरी हरियाली को दर्शाता है, जो क्षेत्र के समृद्ध प्राकृतिक वातावरण को प्रतिबिंबित करता है। लोगो में प्रदर्शित किया गया पहाड़ों से प्रवाहित हो रहा जल जशपुर के प्रसिद्ध जलप्रपातों को इंगित करता है। इसमें हाथी एवं उनके शावक को दिखाया गया है, जो कि जशपुर में सदियों से विचरण कर रहे हाथियों के लिए अनुकूल परिस्थितियों को दर्शाता है। इसके अलावा, इसमें चाय बगानों के प्रतीक भी शामिल हैं, जो जशपुर के प्रसिद्ध चाय बगानों, सरुडीह आदि चाय बगान को दर्शाते हैं।''जशपुर'' शब्द को गेरुआ रंग में लिखा गया है, जो इस क्षेत्र की समृद्ध आदिवासी धरोहर और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है। इस लोगो में मधेश्वर पहाड़ भी प्रमुख रूप से शामिल हैं, जो जशपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। जिसे विश्व के सबसे बड़ा प्राकृतिक शिवलिंग के तौर पर मान्यता मिली है।

नए साल से पहले बदमाशों की परेड, एसएसपी ने दी समझाईश

50 से ज्यादा चाकूबाजों, हिस्ट्रीशीटरों व अपराधिक तत्वों को किया गया क्राईम ब्रांच हाजिर

रायपुर । आगामी नववर्ष के जश्न के मद्देनजर सुरक्षा और शांति व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए रायपुर पुलिस ने सख्त रुख अपनाया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) डॉ. लाल उमेद सिंह के निर्देशन में 50 से अधिक चाकूबाजों, हिस्ट्रीशीटरों और अपराधियों को क्राइम ब्रांच में बुलाकर परेड कराई गई।

अपराधियों को दी सख्त समझाइश: एसएसपी डॉ. सिंह ने परेड के दौरान सभी अपराधियों को स्पष्ट चेतावनी दी कि वे किसी भी अपराध में शामिल न हों। उन्होंने कहा कि अपराध में लिप्त लोगों की जानकारी पुलिस को दें और खुद शांति से जीवन व्यतीत करें। साथ ही, सभी अपराधियों को निर्देश दिया गया कि वे नियमित रूप से अपने संबंधित थानों में उपस्थिति दर्ज कराएं और पुलिस के बुलावे पर तुरंत हाजिर हों।

सोशल मीडिया पर भी सख्ती: सोशल मीडिया पर हथियारों के साथ फोटो, वीडियो या रील अपलोड करने वालों को भी पुलिस ने कड़ी चेतावनी दी है। पुलिस ने ऐसे पोस्ट करने वाले लोगों की सोशल मीडिया आईडी को सायबर सेल के माध्यम से डिलिट कराने की कार्रवाई शुरू कर दी है। एसएसपी ने अपराधियों से कहा कि वे ऐसे कृत्यों से बचें और अपने परिवार के साथ शांति से जीवन व्यतीत करें।

नियमित परेड का सिलसिला: इससे पहले 18 दिसंबर और 21 दिसंबर को भी 150 से अधिक चाकूबाजों और हिस्ट्रीशीटरों को क्राइम ब्रांच में बुलाकर परेड कराई गई थी। पुलिस का कहना है कि इस तरह की कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी, ताकि नववर्ष पर किसी प्रकार का अपराध न हो और शहर में शांति बनी रहे।एसएसपी ने अपराधियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने क्षेत्र में किसी भी घटना की जानकारी तत्काल पुलिस को दें और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें।

छत्तीसगढ़ के 20 जिलों में फोल्डस्कोप का उपयोग

■ मिट्टी की गुणवत्ता और बीमारियों का लगा रहे पता, ऐसी है तकनीक

रायपुर। छत्तीसगढ़ में खेती-किसानी को और भी बेहतर और समृद्ध बनाने के लिये हर दिन नये-नये प्रयोग किये जा रहे हैं। किसानों को हाइटेक कृषि उपकरणों के उपयोग और वैज्ञानिक पद्धति को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं। ऐसे में एक नई तकनीक भी सामने आई है। जिसे फोल्डस्कोप कहते हैं। प्रदेश के किसान अब फोल्डस्कोप तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। यहां पर जानिये क्या है फोल्डस्कोप तकनीक...

छत्तीसगढ़ में फसलों के कीट प्रकोप प्रबंधन और उन्नत नस्ल के पशुपालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किसानों को फोल्डस्कोप माइक्रोस्कोप के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रदेश के 20 जिलों के फोल्डस्कोप तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। किसानों को %फोल्डस्कोप% नामक पोर्टेबल माइक्रोस्कोप भी बांटा गया है, जिसका उद्देश्य किसानों को खेती और पशुपालन में वैज्ञानिक तकनीकों से सशक्त और मजबूत बनाना है।

राष्ट्रीय जैविक तनाव प्रबंधन संस्थान की सहयोग से रायगढ़, जांजगीर-चांपा, बलौदाबाजार-भाटापारा, रायपुर, धमतरी, दुर्ग, राजनांदगांव, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी, कोरिया, सरगुजा, जशपुर, कोरबा, सक्ती, महासमुंद, बिलासपुर, मुंगेली, कबीरधाम, बेमेतरा, कांकेर और बस्तर जिलों के 30 से ज्यादा गांवों में इसे लागू किया गया है। बता दें कि छत्तीसगढ़ राज्य कृषि प्रधान राज्य है। यहां की 70 प्रतिशत से अधिक आबादी खेती किसानी पर निर्भर है। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था की धुरी भी कृषि है। छत्तीसगढ़ को खुशहाल और समृद्ध बनाने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार किसानों को हरसंभव मदद दे रही है।

किसान गोलोविनोमाइसेस सिचोर-एसेरम और एरीसिफे पॉलीगोनी जैसे रोगजनकों का पता लगा सकते हैं। फोल्डस्कोप केवल खेती तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे पशुपालन में भी इस्तेमाल किया जा रहा है। मवेशियों के कृत्रिम गर्भाधान के लिए वीर्य की गुणवत्ता का आकलन करने में इसका प्रयोग किया गया है। इससे गर्भधारण दर में सुधार हुआ है और देशी मवेशियों की नस्लों की ग्रेडिंग बेहतर हो रही है। फोल्डस्कोप का उपयोग पांच जैविक कीटनाशकों और दो जैव एजेंटों का परीक्षण करने के लिए भी किया गया है। इससे रसायनों पर निर्भरता घटाने और पर्यावरण-अनुकूल खेती को बढ़ावा देने में मदद मिल रही है। फोल्डस्कोप को बनाने का विचार तब आया जब प्रोफेसर मनु प्रकाश ने खेतों का दौरा किया और पाया कि वैज्ञानिक उपकरणों की अनुपलब्धता किसानों के लिए एक बड़ी बाधा है। उन्होंने एक ऐसा उपकरण विकसित किया जो सस्ता, टिकाऊ और ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग के लिए आदर्श हो। फोल्डस्कोप ने छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए कृषि और पशुपालन को सरल और वैज्ञानिक बना दिया है। यह उपकरण न केवल खेती में लागत कम कर रहा है बल्कि फसल और मवेशियों की गुणवत्ता में सुधार कर उनकी आय बढ़ाने में कारगर साबित हो रहा है।

कांग्रेस में बागियों की घर वापसी का विरोध

रायपुर। कांग्रेस में बागियों की घर वापसी का विरोध होने लगा है। पूर्व विधायक कुलदीप जुनेजा ने अजीत और आनंद कुकरेजा पर विधानसभा चुनाव में उन्हें हराने का आरोप लगाते हुए पार्टी में वापसी पर विरोध जताते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज से मुलाकात कर पत्र सौंपा है।

पूर्व विधायक कुलदीप सिंग जुनेजा ने प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज के नाम से लिखे पत्र में कहा कि हमारी पार्टी ने सदैव हमें एकता का पाठ पढ़ाया और सूत्र में बांधे रखा है, लेकिन कुछ विघ्न संतोषी लोग पैसे के दंभ पर पार्टी को खरीदने का काम करते हैं, ऐसे ही कुछ लोग में आनंद कुकरेजा अजीत कुकरेजा का परिवार है।

2013 में जब मैं विधानसभा चुनाव लड़ा था, तब लोगों को भड़काने और क्षेत्र से बाहर भेजने का काम किया था जिससे पार्टी को नुकसान हुआ था। उसके बाद 2018 के चुनाव में भी उन्होंने इसी क्रियाकलाप को अपनाया था, मगर हम पार्टी के अन्य वफ़ादार कार्यकर्ताओं की मेहनत से चुनाव जीत गये थे। 2023 के विधानसभा चुनाव के समय भी उनकी यह मानसिकता फिर से उभर के सामने आई।

अजीत कुकरेजा ने निर्दलीय चुनाव मेरे खिलाफ लड़ा और लोगो को मेरे खिलाफ भड़काया जिससे कांग्रेस का गढ़ उत्तर विधानसभा में मुझे हार का सामना करना पड़ा। अजीत कुकरेजा, आनंद कुकरेजा को पार्टी ने बाहर का रास्ता दिखाया था, मगर उन्होंने फिर से कांग्रेस प्रवेश कर लिया था और इस चुनाव के बाद भी पैसे के बल पर पार्टी में प्रवेश के लिए प्रयासरत है।

कुलदीप जुनेजा ने कहा कि अजीत कुकरेजा, आनंद कुकरेजा के कारण मैं चुनाव हार गया नहीं तो आज भी कांग्रेस का एक और प्रत्याशी जीत कर विधानसभा में होता।

विधानसभा के बाद लोकसभा चुनाव में भाजपा ने दिखाया दबदबा, कांग्रेस को हासिए पर ढकेला

रायपुर। वर्ष 2024 की विदाई के अंतिम क्षण हैं। हमेशा की तरह सालभर में घटित सियासत घटनाएं अन्य विषयों की पर ज्यादा हावी है। राजनीतिक में राष्ट्रीय परिदृश्य जैसे नजर आ रहा है, उसकी छाया प्रदेश की राजनीति में साफ नजर आ रहा है। बीते साल 2023 में छत्तीसगढ़ में विधानसभा में धमाकेदार जीत को 2024 के लोकसभा चुनाव में भी भाजपा ने स्पष्ट बहुमत हासिल कर जनता में अपनी पकड़ को साबित किया, वहीं कांग्रेस 2023 में खोई हुई अपनी जमीन को 2024 में पहले लोकसभा चुनाव और फिर बाद में रायपुर दक्षिण के विधानसभा उपचुनाव में वापस हासिल करने में बुरी तरह से नाकाम नजर आई।

उतार-चढ़ाव से भरे साल 2024 के समापन पर हम आपको सालभर के सियासी घटनाक्रम को सिलसिलेवार तरीके से बता रहे हैं। इसकी शुरुआत अप्रैल महीने से शुरू हुई लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया से करते हैं। छत्तीसगढ़ में तीन चरणों में लोकसभा चुनाव हुआ। 19 अप्रैल को बस्तर में, 26 अप्रैल को कांकेर, राजनांदगांव, महासमुंद, 7 मई 7 सीट पर रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, जांजगीर-चांपा, दुर्ग और सरगुजा में मतदान हुआ। इन ग्यारह लोकसभा सीटों का परिणाम देश के अन्य लोकसभा सीटों के साथ ही 4 जून को आया, जिसमें 11 सीटों में से 10 पर भाजपा ने जीत हासिल की, केवल एक कोरबा की सीट पर कांग्रेस की ज्योत्सना महंत ने जीत हासिल की।

लोकसभा चुनाव परिणाम ने दूर कर दी भ्रांति

लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिली एकतरफा जीत ने 2023 में हुए विधानसभा चुनाव को लेकर कुछ लोगों के मन में बने कश्मकश को दूर कर दिया। 2023 विधानसभा चुनाव परिणाम को बहुत से लोगों ने स्थानीय कांग्रेस सरकार की कार्यशैली से जोड़कर प्रस्तुत किया था, लेकिन लोकसभा चुनाव में भाजपा की एकतरफा जीत ने साबित कर दिया कि आम मतदाताओं ने अब व्यक्ति पर नहीं, बल्कि नीतियों पर अपने विचार व्यक्त करने शुरू कर दिए हैं, जो देश-प्रदेश में लोकतंत्र की जड़ों के मजबूत होने का सबूत है।

ज्योत्सना महंत ने बचा ली कांग्रेस की लाज

प्रदेश के 11 लोकसभा सीटों में से 10 पर भाजपा ने जीत हासिल की। केवल एक कोरबा की सीट पर भाजपा की कद्दावर नेता सरोज पांडेय को कांग्रेस नेता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ। चरण दास महंत की पत्नी ज्योत्सना महंत के हाथों शिकस्त झेलनी पड़ी। वोट का मार्जिन 43 हजार 283 था। वहीं दूसरी ओर रायपुर लोकसभा सीट पर भाजपा ने बृजमोहन अग्रवाल ने कांग्रेस के विकास उपाध्याय को 5 लाख 75 हजार से ज्यादा मतों के विशाल अंतर से पराजित किया। दोनों ही जीत में एक बड़ा संदेश था कि पार्टी के साथ अगर प्रत्याशी का सद्भाव जुड़ जाए तो परिणाम आसमान छू सकता है।

भाजपा की जीत का तोखन को मिला प्रतिफल

प्रदेश की 10 लोकसभा सीटों में भाजपा की जीत का सही प्रतिफल अगर किसी को मिला तो वह बिलासपुर लोकसभा सीट से जीत हासिल करने वाले तोखन साहू रहे। भाजपा के अभेद गढ़ बिलासपुर में तोखन साहू ने 724937 वोट हासिल किए, वहीं उनके प्रतिद्वंदी कांग्रेस के भिलाई विधायक देवेंद्र यादव को 560379 वोट मिले। इस तरह से 164558 वोट के अंतर से तोखन साहू ने जीत हासिल की। बिलासपुर के साथ-साथ प्रदेश में हुई भाजपा की जीत के प्रतिफल के तौर पर तोखन साहू को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3.0 में जगह मिली और उन्हें आवास एवं शहरी मामलों के राज्य मंत्री नियुक्त किया गया।

रायपुर दक्षिण विस उपचुनाव में बृजमोहन का दबदबा

विधायक बृजमोहन अग्रवाल के लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के बाद रायपुर दक्षिण विधानसभा के उप चुनाव में कहने को तो भाजपा के प्रत्याशी सुनील सोनी थे, लेकिन पूरे चुनाव के दौरान बृजमोहन अग्रवाल की ही चर्चा होती रही। सियासी गलियारों में कांग्रेस प्रत्याशी आकाश शर्मा के नाम की हवा चलाई गई, लेकिन जमीन पर बीते कई चुनाव की तरह चल रही आंधी को सियासत से जुड़े देखने या आंकलन करने में नाकाम रहे। सुनील सोनी ने उप चुनाव में कम वोटिंग परसेंट के बावजूद 46 हजार मतों के अंतर से जीत हासिल की, जो कांग्रेस प्रत्याशी को मिले वोट से भी ज्यादा थे।

कांग्रेस में विलय को आतुर जोगी कांग्रेस

साल के अंत तक एक बड़ा सियासी घटनाक्रम सामने आया, जिसके कयास सालों से लगाए जा रहे थे। बात हो रही है जोगी कांग्रेस याने पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी द्वारा स्थापित छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस (जोगी) के कांग्रेस में विलय के लिए अध्यक्ष डॉ। रेणु जोगी का प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज को पत्र लिखना। अजीत जोगी को 29 मई 2020 को निधन के बाद से ही पार्टी के भविष्य को लेकर सवाल उठने लगे थे। लेकिन विधानसभा चुनाव में मिली करारी हार और उसके बाद डॉ। रेणु जोगी की स्वास्थ्य संबंधी समस्या ने पार्टी को विषय पर गंभीर रूप से सोचने पर मजबूर किया, जिसके बाद दीपक बैज को पत्र लिखा गया।

कांग्रेस के लिए फैसला लेना हुआ मुश्किल

कांग्रेस के लिए जोगी कांग्रेस को पार्टी में शामिल करना कितना कठिन है, इस अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस विषय पर निर्णय लेने के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। अजीत जोगी ने कांग्रेस के बड़े नेताओं से मतभेद के बाद ही अपनी पार्टी का गठन किया था। जिन कांग्रेस नेताओं के साथ मिलकर उन्होंने पार्टी का गठन किया था, वे भाजपा में जा चुके हैं। ऐसे में विचारधारा के सवाल पर पार्टी के विलय की बात को हजम करना कांग्रेस के लिए मुश्किल हो रहा है, इसलिए जोगी के कटु आलोचक रहे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल समिति से परे अपनी बात पार्टी के आला नेताओं से कहने की बात कह रहे हैं। हालांकि, यह फैसला कांग्रेस के आला कमान के लिए जितना आसान है, उतना ही स्थानीय नेताओं के लिए यह मुश्किल है।

राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे देवेंद्र यादव

पहले महापौर और उसके बाद लगातार दो बार से भिलाई विधानसभा सीट से दिग्गज भाजपा नेता प्रेम प्रकाश पांडेय को पराजित कर विधायक बनने वाले देवेंद्र यादव इन दिनों राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। 10 जून 2024 को बलौदाबाजार कलेक्टोरेट में तोड़फोड़ और आगजनी की घटना में पुलिस ने 17 अगस्त को कांग्रेस विधायक देवेंद्र यादव को गिरफ्तार किया था। तब से लेकर अब तक देवेंद्र यादव जेल में ही हैं। केवल बलौदाबाजार वाला मामला ही नहीं बल्कि अन्य दूसरे मामलों में भी देवेंद्र यादव की संलिप्तता साबित करने की कोशिश की जा रही है, इसमें कोल लेव्ही और एमएमएस कांड भी शामिल है।

नंद कुमार साय की भाजपा में वापसी

एक साल पहले बीजेपी से ऑफलाइन होकर कांग्रेस में शामिल होने वाले नंद कुमार साय ने 3 सितंबर को वापस भाजपा में शामिल हो गए। उन्होंने रायपुर में बीजेपी की सदस्यता अभियान के अवसर पर ऑनलाइन सदस्यता लेते हुए सोशल मीडिया में इस बात पुष्टि की।

नंद कुमार साय 30 अप्रैल 2023 को बीजेपी से अलग हुए थे। उन्होंने पार्टी से इस्तीफा देने के बाद एक मई को कांग्रेस में शामिल हो गए थे। उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की मौजूदगी में कांग्रेस में प्रवेश करने के बाद बीजेपी पर कई गंभीर आरोप लगाए थे। लेकिन विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी शिकस्त और भाजपा की बंपर जीत ने उन्हें फिर से निर्णय लेने पर मजबूर कर दिया।

संक्षिप्त समाचार

ईडी ने पूछताछ के लिए कवासी लखमा और हरीश लखमा को किया तलब

रायपुर। पूर्व मंत्री कवासी लखमा के साथ उनके पुत्र और कांग्रेस नेता हरीश लखमा की मुश्किलें बढ़ती जा रही है। एक दिन पहले छापेमारी के बाद अब प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दोनों को पूछताछ के लिए तलब किया है। जानकारी के अनुसार, पूरा मामला शराब घोटाले से जुड़ा हुआ है, जिस पर पूछताछ के लिए कांग्रेस शासनकाल में आबकारी मंत्री रहे कवासी लखमा और उनके पुत्र और सुकमा जिला पंचायत अध्यक्ष हरीश लखमा को पूछताछ के लिए समन भेजा है। बताया जा रहा है कि जल्द ही घोटाले में ईडी और कई लोगों की संलिप्तता का खुलासा कर सकती है।

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी के शताब्दी वर्ष पर सालभर होगा कार्यक्रम

रायपुर। दिल्ली में भाजपा पदाधिकारियों की हुई बैठक में शामिल होने होकर लौटे प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का शताब्दी वर्ष अलग-अलग चरणों में मनाया जाएगा। 25 दिसंबर 2025 तक जन्मदिन कार्यक्रम चलेगा। किरण सिंहदेव ने बताया कि कल दिल्ली में महत्त्वपूर्ण बैठक हुई है। बैठक में पार्टी के सारे प्रदेश के अध्यक्ष, प्रभारी, वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल हुए। संगठन चुनाव को लेकर चर्चा हुई। नगरीय निकाय चुनाव और आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर चर्चा हुई। सिंहदेव ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी का शताब्दी वर्ष अलग-अलग चरणों में मनाया जाएगा। इसके अलावा संविधान के 75वें वर्ष में विभिन्न चरणों में कार्यक्रमों का आयोजन होगा। विचार गोष्ठी, गुड गवर्नेंस और विकास के दृष्टि से कार्यक्रम होंगे।

भिलाई शहर की मूलभूत समस्याओं को लेकर लोगों ने किया प्रदर्शन

दुर्ग। भिलाई शहर की मूलभूत समस्या और निगम में कमीशन खोरी व भ्रष्टाचार के मुद्दे पर लोगों ने प्रदर्शन किया। इस दौरान निगम कार्यालय के मुख्य द्वार के सामने किए गए बैरिकेडिंग को हटाकर प्रदर्शनकारी अंदर घुसने लगे थे। आखिरकार निगम आयुक्त ने राजीव पांडेय ने बाहर आकर लोगों से ज्ञापन लिया। बोलबम सेवा एवं कल्याण समिति के अध्यक्ष और उपनेता प्रतिपक्ष दया सिंह के नेतृत्व में किए गए प्रदर्शन में भाजपा के कई पार्षद शामिल हुए। भिलाई निगम के तीन वार्डों में होने वाले उपचुनाव के मद्देनजर इस प्रदर्शन के कई मायने निकाले जा रहे हैं। प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए निगम कार्यालय के मेन गेट पर बैरिकेडिंग करने के साथ तीन थाना प्रभारी अमले के साथ मौके पर तैनात थे। लेकिन प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेडिंग को तोड़ते हुए अंदर प्रवेश किया। प्रदर्शन में भाजपा जिला महिला मोर्चा की अध्यक्ष सहित कई पदाधिकारी भी पहुंची थीं। इसके अलावा छत्तीसगढ़ बजरंग दल के लोगों ने भी प्रदर्शन को समर्थन दिया था।

जनपद सदस्यों ने सीईओ के खिलाफ खोला मोर्चा

धमतरी। जनपद सदस्यों ने सोमवार को जनपद सीईओ के खिलाफ प्रदर्शन किया। सीईओ के खिलाफ गड़बड़ी को लेकर जमकर नारेबाजी की। इस मामले में धमतरी कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। धमतरी के जनपद सदस्यों ने आरोप लगाया है कि जनपद विकास निधि की राशि को नियम के बाहर जाकर बिना सामान्य सभा की बैठक लिए जारी कर दिया गया। यह नियमों का खुलेआम उलंघन है। शिकायत सुनने के बाद कलेक्टर नम्रता गांधी ने कहा की लिपिकीय त्रुटि के कारण यह समस्या पैदा हुई है। इसका समाधान कर दिया जाएगा। इसके बाद जनपद सदस्य वापस चले गए।

छत्तीसगढ़ में अब तक 1.39 लाख मीट्रिक टन खाद वितरित

रायपुर। छत्तीसगढ़ में रबी फसलों की बोनी तेजी से जारी है। अब तक 12 लाख 47 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में चना, गेहू, मटर, अलसी, सरसों, मक्का, रागी सहित विभिन्न रबी फसलों की बोआई हो चुकी है। इस साल बोआई के लिए निर्धारित 19 लाख 25 हजार हेक्टेयर रकबे का 65 प्रतिशत है। बीते वर्ष रबी सीजन में 18 लाख 61 हजार हेक्टेयर में रबी फसलों की बोआई हुई थी। कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि रबी फसल के लिए इस वर्ष 2.89 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज का वितरण का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें 1.57 लाख क्विंटल बीज का भंडारण कर 1.26 लाख क्विंटल बीज वितरित किया गया है, जो भंडारण का 80 प्रतिशत है। इसी प्रकार प्रदेश में इस वर्ष रबी फसल के लिए 4.65 लाख मीट्रिक टन उर्वरक वितरण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अब तक 4.58 लाख मीट्रिक टन उर्वरक का भण्डारण कर 1.39 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों का वितरण किया गया है, जो कुल भण्डारण का 30 प्रतिशत है।

मुख्यमंत्री से छत्तीसगढ़ प्रदेश शौंडिक समाज के प्रतिनिधि मंडल ने की भेंट

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में शौंडिक समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने सौजन्य मुलाकात की। मुख्यमंत्री साय को प्रतिनिधि मण्डल ने राजधानी रायपुर में 11 जनवरी 2025 को आयोजित होने वाले अखिल भारतीय शौंडिक सामाजिक सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

जनता और सरकार के बीच संवाद की कड़ी है संसद

कल्याणी शंकर

संसद का हाल ही में समाप्त हुआ शीतकालीन सत्र अनुत्पादक और एक साल से भी अधिक समय में सबसे कम प्रभावी रहा। यह 25 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक चला और इसमें विरोध और बहस सहित कई व्यवधान देखे गए। विपक्ष, विशेष रूप से, अडानी मुद्दे पर चर्चा करना चाहता था, जो अपने निहितार्थों के कारण महत्वपूर्ण सार्वजनिक हित का मामला है। साथ ही, इसने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से भारतीय इतिहास में एक अत्यंत सम्मानित व्यक्ति डा. बी.आर. आंबेडकर के बारे में उनकी टिप्पणियों के लिए माफी मांगने को कहा। इस सत्र के दौरान, लोकसभा ने 65 घंटे और 15 मिनट खो दिए, जो 2024 में सबसे अधिक है। लोकसभा और राज्यसभा में स्थगन प्रस्तावों के लिए कई अनुरोध किए गए, लेकिन कोई भी स्वीकार नहीं किया गया। यह नियम सदन को डा.बी.आर. आंबेडकर पर उनकी टिप्पणियों पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से तत्काल मामलों को संबोधित करने के लिए अपने निर्धारित व्यवसाय को रोकने की अनुमति देता है। शीतकालीन सत्र के दौरान केवल 40.03 प्रतिशत उत्पादकता के साथ लोकसभा ने 5 विधेयक पेश किए और उनमें से 4 को पारित किया। राज्यसभा ने 3 विधेयकों को मंजूरी दी। शीतकालीन सत्र के दौरान करदाताओं के 97,87,50,000 रुपए से अधिक खर्च किए गए, जो अनुत्पादक शासन की उच्च लागत की स्पष्ट याद दिलाता है। संसद सत्र चलाने की लागत प्रति मिनट 2.5 लाख रुपए से अधिक है, जिसे देखकर भौंहें तन जानी चाहिएं और हमारी संसदीय प्रथाओं का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए। विपक्ष की स्थायी शिकायत यह है कि केंद्र संसदीय लोकतंत्र की लागत पर चर्चा करने से इन्कार करता है, जो आसमान छू रही है। पिछले 5 दशकों के दौरान, इसमें 100 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है। यह उच्च लागत और कम उत्पादकता संसदीय सुधारों और बेहतर शासन की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। 18वीं लोकसभा कई मामलों में अलग है। एक दशक में पहली बार, हमारे पास एक आधिकारिक विपक्ष के नेता (एल.ओ.पी.) के साथ एक मजबूत विपक्ष है। संसद के भीतर और बाहर पार्टियों के बीच कड़वाहट बढ़ती जा रही है। कोई भी पक्ष लचीला होने को तैयार नहीं है। संसद का अनुशासन, शिष्टाचार और गरिमा सर्वोपरि है। संसदीय सुधारों की तत्काल आवश्यकता पहले से कहीं अधिक स्पष्ट है और अब कार्रवाई की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, संसद में सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. और विपक्षी 'इंडिया' ब्लॉक ने विरोध प्रदर्शन किया। भाजपा सांसदों ने कांग्रेस पार्टी पर डा. बाबासाहेब आंबेडकर का 'अपमान' करने का आरोप लगाया। वहीं, राहुल गांधी और 'इंडिया' ब्लॉक के सांसदों ने आंबेडकर के बारे में उनकी टिप्पणियों को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग की। इस मुद्दे पर बढ़ते संघर्ष के परिणामस्वरूप 2 लोग घायल हो गए और पुलिस भी शामिल हो गई। राजनीतिक दलों को एक-दूसरे पर आरोप लगाने की बजाय आंबेडकर की विरासत का सम्मान करने पर ध्यान देना चाहिए। संसदीय बहस के लिए उपलब्ध घटता समय लोकतंत्र के लिए हानिकारक है। विरोध, स्थगन और नियमित और छोटे सत्रों ने लगभग आधे सत्रों को खो दिया है। जबकि सांसदों को कानून निर्माता कहा जाता है, शोर-शराबे के बीच उचित चर्चा के बिना विधेयक पारित किए गए हैं। व्यापार सलाहकार समिति संसद को समेटने में असमर्थ रही है, जो बहस, चर्चा और असहमति के लिए एक मंच है, लेकिन व्यवधान के लिए नहीं। संविधान सरकार की 3 शाखाएं स्थापित करता है विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। विधायिका कानून बनाती है, कार्यपालिका उन्हें लागू करती है और न्यायपालिका उनकी व्याख्या करती है और उन्हें लागू करती है। न्यायपालिका स्वतंत्र है, जबकि कार्यपालिका विधायिका के समर्थन पर निर्भर है और संसद के प्रति जवाबदेह है। शासन में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए बहस, प्रश्नकाल और संसदीय समितियों के माध्यम से सरकार को जवाबदेह बनाए रखने में संसद की भूमिका महत्वपूर्ण है। सरकार से जानकारी प्राप्त करने और कमियों को इंगित करने के लिए प्रश्नकाल आवश्यक है।

हर नया साल, एक नई उम्मीद, नए संकल्प और नए अवसर

जयसिंह रावत

हम नए साल की दहलीज पर खड़े हैं। हमारे लिए हर दिन नया है, हर साल नया है और हर नया साल एक नई उम्मीद, नया संकल्प और नये अवसर लेकर आता है। यह वह समय होता है जब हम अपने अतीत को पीछे छोड़कर भविष्य की ओर कदम बढ़ाते हैं। यह न केवल समय की एक और परिभाषा है, बल्कि हमारे भीतर छुपे उन अनगिनत संभावनाओं और सपनों की शुरुआत भी है, जिन्हें हम अब साकार करने का दृढ़ संकल्प लेते हैं। नए साल की दस्तक के साथ, हम हर दिन को एक नए अवसर के रूप में अपनाते हैं, जो हमें न केवल अपनी खुशियों को संजोने बल्कि अपनी जिंदगी को और बेहतर बनाने की प्रेरणा भी देता है।

ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार नए साल की पूर्व संध्या 31 दिसंबर को पड़ती है और जश्न 1 जनवरी के शुरुआती घंटों तक जारी रहता है। माना जाता है कि ऐसे खाद्य पदार्थ और नाश्ते जो सौभाग्य लाते हैं, मौज-मस्ती करने वालों द्वारा खाए जाते हैं। दुनिया भर में लोग गीत गाने और आतिशबाजी देखने जैसे रीति-रिवाजों के साथ जश्न मनाते हैं। चूंकि नया साल अच्छे बदलाव का एक बड़ा अवसर है, इसलिए कई लोग आने वाले वर्ष के लिए अपने संकल्प लिखते हैं।

विश्व में सर्वाधिक प्रचलित ग्रगोरियन कैलेंडर के इतिहास में जाए तो 1 जनवरी को पहली बार 45 ईसा पूर्व में नए साल की शुरुआत के रूप में मनाया गया था। इससे पहले, रोमन कैलेंडर मार्च में शुरू होता था और 355 दिनों तक चलता था। सत्ता में आने के बाद रोमन तानाशाह जूलियस सीजर ने कैलेंडर बदल दिया।

महीने के नाम के सम्मान में शुरुआत के रोमन देवता जानूस, जिनके दो चेहरे उन्हें भविष्य में आगे और साथ ही अतीत में पीछे देखने की अनुमति देते थे, ने 1 जनवरी को वर्ष का पहला दिन बनाया। हालांकि, 16वीं शताब्दी के मध्य तक इसे यूरोप में व्यापक रूप से स्वीकार नहीं किया गया था।

ईसाई धर्म की शुरुआत के बाद, 25 दिसंबर, यीशु के जन्म का दिन, स्वीकार किया गया और 1 जनवरी नए साल की शुरुआत को विधर्मी माना गया। जब तक पोप ग्रेगोरी ने

जूलियन कैलेंडर को बदलकर 1 जनवरी को वर्ष की आधिकारिक शुरुआत नहीं कर दी तब तक इसे स्वीकार नहीं किया गया। इसके अलावा ऐसा माना जाता है कि नया साल लगभग 2,000 ईसा पूर्व या 4,000 साल पहले, प्राचीन बेबीलोन में शुरू हुआ था। बसंत विषुव के बाद पहली अमावस्या पर आमतौर पर मार्च के अंत में, बेबीलोनियों ने नए साल को 11-दिवसीय उत्सव अकितु के साथ मनाया, जिसमें प्रत्येक दिन एक अलग समारोह शामिल था।

दरअसल, ग्रेगोरियन कैलेंडर ने वर्ष की लंबाई को सही करके पहले इस्तेमाल किए गए जूलियन कैलेंडर में अशुद्धियों को संशोधित किया गया। इसने लीप वर्षों के लिए अधिक सटीक प्रणाली शुरू की, जिससे समय की गणना में त्रुटि की संभावना कम हो गई। ग्रगोरियन कैलेंडर का उद्देश्य कैलेंडर वर्ष को सौर वर्ष के साथ अधिक निकटता से सिंक्रोनाइज करना था। जिससे यह सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की कक्षा को ट्रैक करने में अधिक सटीक हो सके। इसकी शुरूआत कैथोलिक चर्च के प्राधिकार द्वारा समर्थित थी जिसका उस समय यूरोप में महत्वपूर्ण प्रभाव था।

शुरुआत में कैथोलिक देशों द्वारा और बाद में अन्य देशों द्वारा इसे अपनाने से इसकी व्यापक स्वीकृति में योगदान मिला। जैसे-जैसे यूरोपीय देशों ने अन्वेषण और उपनिवेशीकरण के माध्यम से अपने प्रभाव का विस्तार किया, ग्रेगोरियन कैलेंडर दुनिया भर में फैलता गया, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, कूटनीति और संचार के लिए मानक कैलेंडर बन गया। माना जाता है कि 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान यूरोप के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व ने भी ग्रेगोरियन कैलेंडर की वैश्विक स्वीकृति में योगदान दिया।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वर्ष भर में कई दिन नव वर्ष दिवस के रूप में मनाए जाते हैं। पालन इस बात से निर्धारित होता है कि चंद्र, सौर या चंद्र-सौर कैलेंडर का पालन किया जा रहा है या नहीं। वे क्षेत्र जो सौर कैलेंडर का पालन करते हैं। नया साल पंजाब में बैसाखी, असम में बोहाग बिहू, तमिलनाडु में पुथंडु, केरल में विशु, ओडिशा में पना संक्रांति या ओडिया नबाबरसा और बंगाल में पोइला बोइशाख के रूप में आता है। यानी वैशाख, आम तौर पर यह दिन अप्रैल महीने की 14 या 15 तारीख को पड़ता है।

चंद्र कैलेंडर का पालन करने वाले लोग चैत्र महीने (मार्च -अप्रैल के अनुरूप) को वर्ष का पहला महीना मानते हैं। इसलिए आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक में उगादी और गुढ़ी पड़वा की तरह इस महीने के पहले दिन नया साल मनाया जाता है। महाराष्ट्र। इसी प्रकार, भारत में कुछ क्षेत्र लगातार संक्रांतियों के बीच की अवधि को एक महीना मानते हैं और कुछ अन्य लगातार पूर्णिमाओं के बीच की अवधि को एक महीना मानते हैं। गुजरात में नया साल दिवाली के अगले दिन के रूप में मनाया जाता है।

हिंदू कैलेंडर के अनुसार, यह हिंदू महीने कार्तिक के शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को पड़ता है। चंद्र चक्र पर आधारित भारतीय कैलेंडर के अनुसार, कार्तिक वर्ष का पहला महीना है और गुजरात में नया साल कार्तिक (एकम) के पहले उज्ज्वल दिन पर पड़ता है। भारत के अन्य हिस्सों में, नए साल का जश्न वसंत ऋतु में शुरू होता है।

प्राचीन भरतीय पंचांग के महत्व को देखते हुए भारत सरकार ने वरिष्ठ भारतीय खगोल वैज्ञानिक मेघनाद साहा की अध्यक्षता में बनी पंचांग सुधार समिति की सिफारिश पर 22 मार्च 1957 को ग्रेगोरियन के साथ ही राष्ट्रीय कैलेंडर भी जारी कर दिया जिसमें अन्य खगोलीय डेटा के साथ-साथ हिंदू धार्मिक कैलेंडर तैयार करने के लिए समय और सूत्र भी शामिल थे, ताकि इसे सुसंगत बनाया जा सके।

दरअसल पंचांग कमेटी के अध्यक्ष वरिष्ठ भारतीय खगोल वैज्ञानिक मेघनाद साहा वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में कैलेंडर सुधार समिति के प्रमुख थे। समिति के अन्य सदस्य ए.सी. बनर्जी, के.के. दफ्तरी, जे.एस. करंदीकर, गोरख प्रसाद, आर.वी. वैद्य और एन.सी. लाहिरी थे।

समिति के सामने कार्य वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित एक सटीक कैलेंडर तैयार करना था, जिसे पूरे भारत में समान रूप से अपनाया जा सके। यह एक बहुत बड़ा काम था। समिति को देश के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित विभिन्न कैलेंडरों का विस्तृत अध्ययन करना था। समिति के समक्ष तीस अलग-अलग कैलेंडर थे। यह कार्य इस तथ्य से और भी जटिल हो गया था कि कैलेंडर के साथ धर्म और स्थानीय भावनाएँ भी जुड़ी हुई थीं।

भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 1955 में प्रकाशित समिति की रिपोर्ट की प्रस्तावना में लिखा थाकि वे (विभिन्न कैलेंडर) देश में पिछले राजनीतिक विभाजनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अब जब हमने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है, तो यह स्पष्ट रूप से वांछनीय है हमारे नागरिक, सामाजिक और अन्य उद्देश्यों के लिए कैलेंडर में एक निश्चित एकरूपता होनी चाहिए और यह इस समस्या के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर किया जाना चाहिए।''

आधिकारिक तौर पर उपयोग में चैत्र 1, 1879 शक संवत, या 22 मार्च, 1957 को शुरू हुआ। हालांकि, सरकारी अधिकारी धार्मिक कैलेंडर के पक्ष में इस कैलेंडर के नए साल के दिन को काफी हद तक नजरअंदाज करते हैं।

पुराण दिग्दर्शन .... तीसरा अध्याय

वेदों में अष्टादश पुराणों के नाम

(गतांक से आगे...)

त्रेतायुग में लवणासुर ने मथुरा पर आक्रमण किया था जिसके दमभ के लिये भगवान् रामचन्द्र जी ने शत्रुघ्न को भेजा था। सत्ययुग में कई बार दानव, दैत्य, नाग आदि जातियों का प्रभुत्व हो चुका है। इसी प्रकार कालयवन ने भी अपने जीवन में भारतीय नरेशों को पर्याप्त तंग किया था। सो पदापुराण में भी पूर्वकालीन यवन उत्पातों को लक्ष्य करके ही आश्रमा यवनैरुद्धा: आदि प्रसङ्ग वणित हुआ है, इसमें संदेह करने का कारण हो क्या है ?

व्यास जी के समय से पूर्व भी यवन लोग विद्यमान थे- यह महाभारत के प्रमाणों से सिद्ध होता है। ऐसी दशा में पद्मपुराण के इस प्रसङ्ग में यवन शब्द का अर्थ यूनान देशवासी न करके मुसलमान करना अत्यन्त अनुचित है।

व्यास जी के समय में यूनान ईरान आदि देशों में धर्मविप्लव मचा हुआ था, इस बात का पता पारसियों की धर्म- पुस्तक शातीर से भी चलता है। उसमें लिखा है कि ईरान देश के राजा गस्तासप ने एक भारी शास्त्रार्थ का आयोजन किया था, जिसमें विदेशियों की तरफ से जरदुश्त और भारत की तरफ से व्यास जी वादी प्रतिवादी थे। अन्त में व्यास जी ही इस शास्त्रार्थ में विजयी हुये वे जिसका पता उक्त पुस्तक की नीचे लिखो पंक्तियों से चलता है, यथा-

अकनु बिरह्मने व्यास नाम अज़ हिन्द आमद बस दाना कि अकल चुना नेस्त। (शातीर आयत 162)

अर्थात् - व्यास का नाम एक ब्राह्मण हिन्दुस्थान से आया, जो ऐसा दाना और बुजुर्ग था कि अकल में उसके बराबर दूसरा कोई नहीं हो सकता।

इन सब कारणों से यह स्पष्ट है कि पद्मपुराण में यवन शब्द के उल्लेख से और उनके प्रभुत्व वर्णन से उक्त पुराण के व्यास- कर्तृत्व पर कुछ भी आक्षेष नहीं आ सकता।

क्रमश: ...

भीष्म को कैसे मिला इच्छामृत्यु का वरदान

आशुतोष गर्ग

राजा शांतनु यमुना नदी के तट पर विचरण कर रहे थे कि तभी उन्हें अत्यंत सुंदर स्त्री दिखाई पड़ी। पूछने पर उसने शांतनु को बताया, 'मैं निषाद-कन्या सत्यवती हूं।' सत्यवती पर मोहित शांतनु उन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहते थे। उन्होंने उनके पिता के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। निषादराज ने कहा, 'राजन! मैं आपसे इसका विवाह करा सकता हूं, पर मेरी एक शर्त है। आप प्रतिज्ञा करें कि विवाह के बाद सत्यवती के गर्भ से जन्म लेने वाला पुत्र ही आपके बाद हस्तिनापुर राज्य का अधिकारी होगा, और कोई नहीं।'

राजा शांतनु, गंगापुत्र देवव्रत को युवराज घोषित कर चुके थे, इसलिए उन्होंने सत्यवती के पिता की शर्त नहीं मानी और वह लौट आए। परंतु काम के वशीभूत शांतनु को सत्यवती की याद सताती रही। वह निरंतर व्याकुल और दुखी रहने लगे। एक दिन देवव्रत ने अपने पिता शांतनु को इस हालत में देखा, तो उन्होंने कहा, 'पिताजी! हस्तिनापुर सब ओर से सुरक्षित है, फिर आप दुखी रहकर क्या सोचते रहते हैं? आपका चेहरा पीला पड़ गया है। कृपया अपना कष्ट मुझे बताइए।

देवव्रत ने राजा के मंत्री से मिलकर शांतनु के कष्ट का असल कारण और निषादराज की शर्त को जान लिया।

पूरी बात सुनकर देवव्रत, तत्काल सत्यवती के पिता से मिलने पहुंच गए और वहां जाकर उन्होंने अपने वृद्ध पिता के लिए निषादराज से सत्यवती के विवाह की याचना की। देवव्रत ने अपने पिता का मनोरथ पूर्ण करने के लिए घोषणा की, 'निषादराज! मैं शपथ लेता हूं कि आपकी कन्या सत्यवती के गर्भ से जो पुत्र जन्म लेगा, वही हस्तिनापुर का राजा बनेगा। यह मेरी कठोर प्रतिज्ञा है।' देवव्रत की इस प्रतिज्ञा के बाद भी निषादराज का संदेह दूर नहीं हुआ। वह अब भी कुछ चाहता था। उसने कहा, 'युवराज! आपने तो सिंहासन पर अपना अधिकार त्याग दिया।' देवव्रत तुरंत निषादराज का आशय समझ गए। तब उन्होंने भरी सभा में फिर घोषणा की, 'मैंने अपने पिता के सुख के लिए राज्य का परित्याग तो कर ही दिया है। अब संतान के लिए मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि आजीवन विवाह नहीं करूंगा और अखंड ब्रह्मचारी रहूंगा।'

देवव्रत की यह कठोर प्रतिज्ञा सुनकर निषादराज रोमांचित हो गए और उन्होंने तुरंत शांतनु और सत्यवती के विवाह के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी। तभी आकाश से देवताओं ने पुष्पवर्षा की और सबने कहा-इस कठिन प्रतिज्ञा के लिए गंगापुत्र देवव्रत आज से 'भीष्म' कहलाएंगे। इसके बाद देवव्रत भीष्म, सत्यवती को अपने साथ हस्तिनापुर ले आए और शांतनु के साथ उनका विवाह भी करवा दिया। भीष्म की यह प्रतिज्ञा सुनकर राजा शांतनु को कष्ट भी हुआ, लेकिन वह भीष्म की पितृभक्ति से प्रसन्न भी हुए। उन्होंने भीष्म को वर दिया, 'मैं तुम्हें इच्छामृत्यु का वरदान देता हूं। तुम जब तक जीना चाहो, तब तक मृत्यु तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकेगी।' इसी वरदान के कारण महाभारत युद्ध में अर्जुन द्वारा बाणों से पूरी तरह बिंध जाने पर भी भीष्म की मृत्यु नहीं हुई और उन्होंने युद्ध के पश्चात सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने पर स्वत: अपने प्राण त्यागे थे।

पाकिस्तान में कल भी बीते कल जैसा

मरिआना बाबर

चाहे युद्ध का वक्त हो या शांति का, दुनिया भर की प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए पत्रकारिता एक जानलेवा पेशा बन गया है। अपने काम के दौरान मारे जाते हैं, वे अपने पीछे एक विरासत छोड़ जाते हैं। इसके बावजूद अब तक न तो लोगों को इस खतरनाक पेशे को छोड़ते देखा गया है, और न ही नए लोगों में इसके प्रति अनिच्छा देखी गई है। हर मौत के साथ मुझे यह देखकर हैरत होती है कि नए युवा बगैर डरे पत्रकारिता के पेशे को अपना रहे हैं।

जैसे-जैसे वर्ष 2024 का सूरज ढल रहा है, पाकिस्तानी पत्रकारों के लिए यह वर्ष घातक और कड़वी यादें छोड़कर जा रहा है और आने वाले वर्ष 2025 में भी उनके लिए कोई उम्मीद की रोशनी नहीं दिखती है। दरअसल, पाकिस्तान में पत्रकार होना ही अपने आप में एक सजा है। एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान की ओर से दुनिया भर में मारे गए पत्रकारों की जो सूची जारी की गई, उसे देखकर हैरानी हुई कि गाजा के बाद सबसे ज्यादा मारे गए पत्रकारों की संख्या पाकिस्तान में थी। गाजा के हालात को तो फिर भी समझा जा सकता है। वहां युद्ध चल रहा है। लेकिन पाकिस्तान में क्या बहाना है, जहां 2024 में?अब तक?आठ पत्रकार मारे जा चुके हैं। वहां न तो युद्ध चल रहा है, न ही अशांति और न ही ये आठों पत्रकार किसी सैन्य अभियान या आतंकी हमले को कवर कर रहे थे।

न केवल पाकिस्तानी पत्रकारों, बल्कि दुनिया भर के मीडिया पेशेवरों का समर्थक एक संगठन है, कमिटी टु प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स (सीपीजे), जो दुनिया भर में प्रेस की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है। गर्मियों में खैबर पख्तूनख्वा के नौशेरा में जब चालीस वर्षीय पाकिस्तानी पत्रकार मलिक हसन जैब की हत्या कर दी गई, तो इसके विरोध में सीपीजे के प्रोग्राम डायरेक्टर कार्लोस मार्टिनेज डी ला सेर्ना ने पाकिस्तानी सरकार को चेतावनी दी। उन्होंने सरकार से कहा, 'पाकिस्तान में तत्काल इस तरह की

हिंसाओं पर रोक लगाई जाए और मलिक हसन जैब के हत्यारों को पकड़ा जाए। पत्रकारों के हमलावरों को छूट मिलने से पाकिस्तान में भय का माहौल है, जो पत्रकारों को स्वतंत्र पत्रकारिता करने से रोकता है।'

आप सवाल कर सकते हैं कि पाकिस्तानी पत्रकारों को क्यों मारा जा रहा है? इसका जवाब एकदम स्पष्ट है। पहला उनकी हत्या की कोई जिम्मेदारी नहीं लेता और कई पत्रकार अपनी बहादुरी भरी रिपोर्टिंग के कारण मारे जाते हैं। कई रिपोर्टों में आरोप लगाए गए हैं कि पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसियां उनकी आलोचना करने वाले पत्रकारों पर हमले करवाती हैं। यही नहीं, प्रभावशाली लोगों और राजनेताओं पर भी उनके क्षेत्रों में पुलिस के साथ मिलकर पत्रकारों को निशाना बनाने के आरोप लगाए जाते हैं। पत्रकारों के खिलाफ हो रही हिंसा को रोकने और इसमें संलिप्त सरकारी अधिकारियों के खिलाफ जांच करवाने की आवाजें उठ रही हैं, लेकिन पाकिस्तानी सरकार मीडिया समुदाय के इस आक्रोश को अनदेखा कर रही है।

कई बार इस्लामाबाद में राजनयिक समुदाय की ओर से पत्रकारों की परेशानियों को लेकर सार्वजनिक रूप से ट्वीट किए गए हैं। हाल ही में एक वी-ब्लॉगर, जो पीटीआई के राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हत्या को लेकर खोजी वीडियो बना रहा था, सुरक्षा बलों ने उसका अपहरण कर लिया और उसके कब्जे से ड्रग की बरामदगी बता दी, जबकि वह बेचारा गरीब पत्रकार सिगरेट भी नहीं पीता है। यूरोपीय संघ की राजदूत राइना कियोनका ने सरकार को भी चौंका दिया, जब उन्होंने ट्वीट के जरिये यह जानकारी मांगी कि पत्रकार कहां है। राजदूत कियोनका 28 यूरोपीय राजधानियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, इसलिए यह केवल एक आवाज नहीं थी। उन्होंने सरकार को याद दिलाया कि पाकिस्तान जीएसपी+ (यूरोपीय संघ की जनरलाइज्ड स्कीम ऑफ प्रेफरेंस प्लस) का हिस्सा है, जो पाकिस्तान को बड़े व्यापार लाभ प्रदान करता है। इन लाभों को लेने के लिए कई शर्तें हैं, मीडिया की स्वतंत्रता भी उनमें से एक है।

सोशल मीडिया पाकिस्तानी मीडिया के लिए बहुत बड़ा स्रोत है और इस मामले में यूरोपीय संघ की राजदूत का ट्वीट वायरल हो गया, जिससे गायब पत्रकार के लिए बड़ा समर्थन मिला। उसे बड़ी मुश्किल से छुड़ाया गया। अब वह 'आतंकवाद के आरोप' में जमानत पर है। रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स द्वारा प्रकाशित इस वर्ष के विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में पाकिस्तान दो स्थान नीचे गिरकर 180 देशों में से 152वें नंबर पर पहुंच गया है। सूचकांक में पाकिस्तान को दुनिया में पत्रकारों के लिए सबसे खतरनाक देश बताया गया है, जहां हर साल तीन से चार हत्याएं होती हैं। पत्रकारों की स्वतंत्रता की वकालत करने वाले इस्लामाबाद स्थित फ्रीडम नेटवर्क की हालिया रिपोर्ट बताती है कि पाकिस्तान में 2012 से 2022 के बीच 53 पत्रकार मारे गए। इनमें सर्वाधिक 16 हत्याएं दक्षिणी सिंध प्रांत में और 14 पंजाब प्रांत में हुईं। इन 53 में से सिर्फ दो मामलों में दोषसिद्ध हुआ, लेकिन उन्हें भी बाद में पलट दिया गया। वहीं, 96 फीसदी मामलों में न्याय प्रणाली न्याय देने में विफल रही।

पाकिस्तान में 2024 का अंत फेडरल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एफआईए) द्वारा 24 नवंबर को पीटीआई के विरोध प्रदर्शन को कवर करने वाले अनेक पत्रकारों और ब्लॉगरों पर कानूनी कार्रवाई के साथ हो रहा है, जिसमें उनके खिलाफ इलेक्ट्रॉनिक अपराध रोकथाम अधिनियम (पीईसीए) के तहत मुकदमे दर्ज किए गए हैं। यह और कुछ नहीं, बल्कि प्रेस की स्वतंत्रता को बाधित करने का प्रयास है, क्योंकि पत्रकारों को राजनीतिक घटनाक्रमों की रिपोर्ट करने का मौलिक अधिकार प्राप्त है। अंग्रेजी दैनिक द डॉन ने जरूर पत्रकारों का तगड़ा समर्थन किया है, जिसने कहा कि यह कानून लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास को खत्म करता है तथा पत्रकारों और नागरिकों के लिए समान रूप से भय का माहौल निर्मित करता है। 'पाकिस्तान के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य के लिए जोशपूर्ण, निडर प्रेस की जरूरत है, जो बिना किसी मुकदमे के डर के रिपोर्टिंग कर सके और पीईसीए के अंकुश को भी खत्म होना चाहिए।'

आज का इतिहास

1962 नीदरलैंड ने दक्षिण पश्चिम प्रशांत महासागर में स्थित द्वीप न्यू गिनी को छोडा।
1963 प्रधान मंत्री रॉय वेलेंस्की के प्रयासों के बावजूद, सेंट्रलअफ्रीकन फेडरेशन आधिकारिक तौर पर तीन अलगाववादियों-जाम्बिया, मलावी और रोडेशिया में विभाजित हो गया।
1964 डोनाल्ड कैम्पबेल ने अपनी जेट नाव में बैठ कर पानी में सबसे तेज गति तय करने का विश्व रिकार्ड बनाया।
1965 जीन-बेदेल बोकासा, मध्य अफ्रीकी गणराज्य के नेता, और उनके सैन्य अधिकारियों ने राष्ट्रपति डेविड डाको के अपमान के खिलाफ एक तख्तापलट शुरू किया।
1972 निकारागुआ भूकंप के पीड़ितों को सहायता पहुंचाने के लिए एक प्लैनक्रैश एन मार्ग में प्यूर्टो रिकन बेसबॉल खिलाड़ी रॉबर्टो क्लेमेंटे की मृत्यु हो गई।
1983 मेजर-जनरल मुहम्मदू बुहारी को नाइजीरिया के बाद एक सफल सैन्य तख्तापलट का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था, जिसने नागरिक नागरिक शेहू शगारी को उखाड़ फेंका।
1983 यूनाइटेड किंगडम ने ब्रुनेई को स्वतंत्रता प्रदान की।
1986 तीन असंतुष्ट कर्मचारियों ने डुपोंट प्लाजा होटल सैन जुआन, प्यूर्टो रिको में आग लगा दी, जिसमें 98 लोग मारे गए और 140 अन्य घायल हो गए, जिससे यह संयुक्त राज्य के इतिहास में दूसरी सबसे घातक होटल आग बन गई।
1986 सान जुआन के प्यूर्टो रिको के ड्यूपॉट प्लाजा होटल में आग लगने से 97 लोग मारे गए और 140 घायल हुए।
1993 ब्रैंडन टेना, एक अमेरिकी ट्रांस मैन, नेहबॉल्ड, नेब्रास्का में बलात्कार और हत्या कर दी गई थी; उनकी मृत्यु के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका में घृणा अपराधियों की पैरवी बढ़ गई।
1998 यूरोपियन एक्सचेंज रेट मैकेनिज़्म ने यूरोज़ोन में रूपक मुद्राओं की वैल्यूज़ को फ्रीज़ कर दिया और यूरोकॉरेबिलिटी का मान स्थापित किया।
1999 बोरिस येल्तसिन ने रूस के राष्ट्रपति के रूप में इस्तीफा दिया, प्रधानमंत्री व्लादिमीर पुतिन को कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में कार्यभार सौपा गया।
2004 ब्यूनर्स आयर्स (अर्जेन्टीना) के एक नाइट क्लब में आग लगने से 175 लोगों की मौत।
2010 ट्यूनीशिया में, बेरोजगारी और रहने की स्थिति पर जारी विरोध के दौरान एक रक्षक की मृत्यु हो जाती है।
2010 प्लास्टिक बैग पर प्रतिबंध लगाने की इटली की योजना लागू हुई; देश प्रति वर्ष 20 बिलियन प्लास्टिक बैग का उपयोग कर रहा था - लगभग 300 प्रति व्यक्ति।

मनमोहन सिंह कैसे बने भारत के एक्सीडेंटल पीएम

अभिनय आकाश

2, जुलाई मंगलवार का दिन राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा चल रही थी। उच्च सदन यानी राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे अपने स्थान पर खड़े होकर सभापति से कहते नजर आते हैं मुझे बनाने वाली सोनिया गांधी हैं। न रमेश बना सकता है, न आप बना सकते हैं, जनता ने मुझे बनाया है। खरगे जब ये बोल रहे थे तो उनके बगल वाली सीट पर सोनिया गांधी चेहरे पर हमेशा की तरह शांत भाव लिए बैठीं थी। जवाब में उपराष्ट्रपति धनखड़ कहते हैं कि मैं उस स्तर पर नहीं आना चाहता। आपको किसने बनाया, ये आप जाने। लेकिन ये वाक्या बताने का मतलब था कि खरगे के शब्दों में अपने नेता के प्रति वफादारी का भाव साफ झलकता नजर आया। वफादारी वैसे तो हिंदी का बहुत बड़ा और अहम शब्द है। कहा जाता है कि वफ़ादारी मे दो लोगो के बीच कोई संबंध होता है ओर ईमानदारी मे किसी से कोई संबंध की कोई आवशयकता नहीं ईमानदारी दो अनजान के बीच भी होती है। अगर आप वफादार है तो आप जरूर ईमानदार है और अगर आप सिर्फ ईमानदार है तो आप वफादार हो या बेवफा आप कम से कम सामने वाले को धोखे में तो नहीं रखेंगे और उसे सच बता देंगे तो आप सिर्फ ईमानदार है या उसके प्रति बेवफा ! जवाब थोड़ा सा पेचीदा जरूर है लेकिन एक दो बार पढ़ने पर समझ में आ जाएगा। सोनिया गांधी के प्रति कुछ ऐसी ही वफादारी मनमोहन सिंह में भी थी। आखिरकार, सोनिया गांधी की वजह से ही तो कांग्रेस के तमाम दिग्गजों को पछाड़कर सिंह प्रधानमंत्री बने थे।

18 मई 2004 का मंगलवार का ही दिन जिसे देश की ग्रैंड ओल्ड पार्टी कांग्रेस और हिंदुस्तान की जनता आसानी से भूल नहीं पाएंगे। लगभग 200 सांसद संसद भवन के प्रकोष्ठ में इंतजार कर रहे थे कि सोनिया गांधी की तरफ से अपने निर्णय की घोषणा की जाएगी। सोनिया गांधी अपने दोनों बच्चों राहुल और प्रियंका के साथ चेहरे पर गंभीरता लिए दाखिल हुईं। सोनिया ने आकर अपने कई पुराने साथियों का अभिवादन करते हुए माइक्रोफोन तक पहुंचती हैं। उस वक्त वहां सन्नाटा छाटा रहता है। फिर वो कहती हैं कि मेरा लक्ष्य प्रधानमंत्री का पद नहीं है। मेरे सामने हमेशा स्पष्ट था कि यदि कभी मैं उस स्थिति में आई, जिसमें आज मैं हूं, तो मैं अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनूंगी। वो थोड़ ठहरते हुए अपने बच्चों की तरफ देखते हुए कहती हैं कि आज वो आवाज कहती है कि मैं पूरी विन्रमता से इस पद को स्वीकार नहीं करूं। इन लफ्जों के साथ सोनिया गांधी ने अपने खिलाफ के शोर को शांत कर दिया। उन आवाजों को बंद कर दिया जो उनके इटैलियन होने पर सवाल उठा रही थी और कह रही थी कि एक विदेशी मूल का व्यक्ति हिंदुस्तान का प्रधानमंत्री कैसे बन सकता है? इस एक मास्टरस्ट्रोक से सोनिया गांधी ने अचानक अपने सभी विरोधियों को चित्त कर दिया और खुद त्याग की मूर्ति बन गई। अक्सर ये कहा जाता है कि सोनिया गांधी का प्रधानमंत्री पद ठुकरा देना क्या सबसे बड़ा त्याग था या फिर इसके पीछे बहुत बड़ा राजनीतिक दांव छिपा था। जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। लेकिन इससे किसका फायदा हुआ? सोनिया गांधी को, कांग्रेस पार्टी को या फिर देश को?

त्याग और राजनीति की मिली जुली कहानी की हकीकत को समझने के लिए हमें पहले ये समझना पड़ेगा कि इटली में पैदा हुई सोनिया गांधी हिंदुस्तान के सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस की अध्यक्ष कैसे बन गई। 1 सफदरजंग रोड कभी देश की राजनीति का केंद्र हुआ करता था। लेकिन देखते ही देखते ये पावर सेंटर 10 जनपथ की ओर शिफ्ट हो गाया। 19 साल पहले अप्रैल 1998 में जब सोनिया गांधी ने जब कांग्रेस की कमान संभाली, तब भी पार्टी की सियासी हालत कमजोर थी।

1999 से लेकर 2004 तक एनडीए की सरकार के दौरान लोकसभा में विपक्ष की नेता सोनिया गांधी थी। जो बार बार वाजपेयी सरकार को घेरती नजर आती थी। इसलिए 2004 में जब चुनाव आए तो एक बार फिर सोनिया गांधी के विदेशी मूल के मुद्दे को हवा देना शुरू कर दिया गया। 1999 में एक वक्त ऐसा भी आया जब सोनिया ने पार्टी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया था, लेकिन बाद में नेताओं की बात मान ली थी। यूपी के एक सांसद ने कहा- मैडम आपने वो मिसाल कायम की है, जैसी पहले महात्मा गांधी ने की थी। उनका हवाला था कि जब स्वतंत्रता के बाद भारत की पहली सरकार बनी तो गांधी जी ने भी सरकार का हिस्सा बनने से साफ इनकार कर दिया था, लेकिन तब गांधी जी के पास जवाहर लाल नेहरू थे। अब कोई नेहरू कहां है?

1991 में ही मनमोहन सिंह के करियर में निर्णायक मोड़ आया। तत्कालीन प्रधान मंत्री पीवी नरसिम्हा राव ने सिंह को अपने वित्त मंत्री के रूप में चुना और भारत को गंभीर आर्थिक संकट से बाहर निकाला। लेकिन सिंह चुनौती के सामने नहीं झुके। उन्होंने विनियमन, आयात शुल्क में कमी और राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों के निजीकरण जैसे कई उदारीकरण सुधारों का नेतृत्व किया। 1991 में अपने पहले बजट भाषण में मनमोहन सिंह ने विक्टर ह्यूगो को उद्धृत करते हुए कहा था कि पृथ्वी पर कोई भी शक्ति उस विचार को नहीं रोक सकती जिसका समय आ गया है। यह उनकी दूरदर्शिता और नीतियां ही थीं जिन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को स्थिर किया और निरंतर विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया।

2004 में मनमोहन सिंह अप्रत्याशित रूप से भारत के पहले सिख प्रधान मंत्री बने। हालाँकि, पीएम की कुर्सी तक पहुंचने का उनका सफर अनोखा है। 2004 के लोकसभा चुनावों में, कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) ने अप्रत्याशित जीत हासिल की। इसके बाद, सोनिया गांधी को कांग्रेस संसदीय दल का नेता चुना गया और उन्हें यूपीए अध्यक्ष भी चुना गया। सभी ने मान लिया था कि वह देश की पीएम भी बनेंगी. लेकिन उसने इसके खिलाफ फैसला किया। तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक टर्निंग प्वॉइंट्स में उन घटनाओं का जिक्र किया है जिनके कारण गांधी को नहीं बल्कि सिंह को पद की शपथ लेनी पड़ी। कलाम ने अपनी किताब में लिखा इस दौरान कई राजनीतिक नेता मुझसे मिलने आए और मुझसे अनुरोध किया कि मैं किसी भी दबाव के आगे न झुकूं और श्रीमती गांधी को प्रधान मंत्री नियुक्त करूं, एक ऐसा अनुरोध जो संवैधानिक रूप से स्वीकार्य नहीं होता। अगर उन्होंने अपने लिए कोई दावा किया होता तो मेरे पास उन्हें नियुक्त करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है। उन्होंने आगे लिखा कि यह मेरे लिए चिंता का कारण था और मैंने अपने सचिवों से कहा और सबसे बड़ी पार्टी इस मामले में कांग्रेस के नेता को आगे आने और सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए एक पत्र भेजा। मुझे बताया गया कि 18 मई की दोपहर 12.15 बजे सोनिया गांधी मुझसे मिल रही थीं. वह समय पर आईं लेकिन अकेले आने की बजाय वह डॉ. मनमोहन सिंह के साथ आईं और मुझसे चर्चा की. उन्होंने कहा कि उनके पास जरूरी संख्या बल है लेकिन वह पार्टी पदाधिकारियों द्वारा हस्ताक्षरित समर्थन पत्र नहीं लायीं। उन्होंने कहा कि वह 19 तारीख को समर्थन पत्र लेकर आएंगी। मैंने उससे पूछा कि तुम टाल क्यों देती हो? हम इसे आज दोपहर को भी खत्म कर सकते हैं। वह चली गई। बाद में मुझे एक संदेश मिला कि वह मुझसे शाम को 8.15 बजे मिलेंगी। किताब में लिखा है कि 19 मई को निर्धारित समय, रात 8.15 बजे, गांधी सिंह के साथ राष्ट्रपति भवन आये। उन्होंने कहा इस मुलाकात में एक-दूसरे से खुशियों का आदान-प्रदान करने के बाद उन्होंने मुझे विभिन्न दलों के समर्थन पत्र दिखाए। इस पर मैंने कहा कि यह स्वागत योग्य है। राष्ट्रपति भवन आपकी पसंद के समय पर शपथ ग्रहण समारोह के लिए तैयार है। तभी उन्होंने मुझसे कहा कि वह डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधान मंत्री के रूप में नामित करना चाहेंगी, जो 1991 में आर्थिक सुधारों के वास्तुकार और बेदाग छवि वाले कांग्रेस पार्टी के भरोसेमंद लेफ्टिनेंट थे। कलाम ने लिखा कि यह निश्चित रूप से मेरे लिए आश्चर्य की बात थी और राष्ट्रपति भवन सचिवालय को डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री नियुक्त करने और उन्हें जल्द से जल्द सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करने वाले पत्र पर फिर से काम करना पड़ा। इसके साथ, सिंह ने प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली और देश ने एक अजीब शक्ति-साझाकरण मॉडल देखा - सिंह को शासन के प्रमुख के रूप में और गांधी को राजनीति के प्रमुख के रूप में। कई लोगों ने सिंह की यह कहते हुए आलोचना की कि जब वे प्रधान मंत्री थे तो सत्ता का रिमोट कंट्रोल 10 जनपथ के पास हुआ करता था। हालाँकि, मनमोहन सिंह आगे बढ़े। उनकी सबसे बड़ी जीत अमेरिकी परमाणु प्रौद्योगिकी तक पहुंच सुनिश्चित करने वाले एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर करके भारत को परमाणु अलगाव से बाहर लाना था।

जब डीयू में चला करती थी डॉ. सिंह की पाठशाला?

विवेक शुक्ला

डॉ. मनमोहन सिंह ने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (डी. स्कूल) में एक बेहद सम्मानित शिक्षक के रूप में अपनी पहचान बनाई थी। वे अपनी क्लास लेने के बाद इधर की लेडी रतन टाटा लाइब्रेरी में घंटों बैठा करते थे। उन्हें डी. स्कूल के कैफेटेरिया में जाकर कॉफी-चाय पीना भी पसंद था। वहां पर उस दौर में डॉ. अर्मत्य सेन, प्रो. ए.एम. खुसरो, प्रो. सुखमय चक्रवर्ती, डॉ. मृणाल दत्ता चौधरी, जे.पी.एस. नागर और डॉ. ए. एल. नागर जैसे दिग्गज अध्यापक आकर बैठा करते थे। इधर के कैफेटरिया में अध्यापकों और उनके छात्रों के बीच लगातार चर्चाएं होती थीं। डी. स्कूल के डायरेक्टर और चोटी के अर्थशास्त्री डॉ. राम सिंह कहते हैं कि डी। स्कूल के नए-पुराने छात्रों और फैकल्टी को इस बात का गर्व है कि डॉ. मनमोहन सिंह ने यहां पढ़ाया। वे अपने छात्रों को हमेशा प्रेरित करते थे कि वे उनसे सवाल पूछें। डॉ. मनमोहन सिंह बहुत सुलझे हुए और विद्वान शिक्षक थे। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाया। वे एक बहुत ही शांत, धैर्यवान और स्पष्ट दृष्टिकोण वाले शिक्षक थे। वे जटिल विषयों को भी सरल तरीके से समझाने में माहिर थे। डॉ. राम सिंह कहते हैं कि उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि और पढ़ाने के अनुभव ने ही उन्हें एक सफल अर्थशास्त्री और प्रशासक बनने में मदद की। वे एक ऐसे शिक्षक थे जिन्होंने अपने ज्ञान और अनुभव से कई लोगों को प्रेरित किया। दरअसल डॉ. सिंह में वे सारे गुण थे जिनसे कोई अर्थशास्त्र का अच्छा शिक्षक बनता है। उनमें अर्थशास्त्र के सिद्धांतों, मॉडलों और अवधारणाओं की गहरी समझ थी। उन्हें यह भी पता होता था कि इन सिद्धांतों को वास्तविक दुनिया की स्थितियों और समस्याओं पर कैसे लागू किया जाए। एक अच्छे शिक्षक को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधान और विकास से अवगत होना चाहिए। डॉ. सिंह इस बात को समझते थे। डी. स्कूल के पुराने टीचर बताते हैं कि उन्हें अपनी कक्षा को जीवंत और आकर्षक बनाए रखना आता था। उन्हें यह भी पता था कि एक अच्छा शिक्षक छात्रों के प्रश्नों और चिंताओं को सुनने और उनका जवाब देने के लिए तैयार रहता है। वे एक अच्छे शिक्षक की तरह छात्रों के लिए सुलभ होते थे और उनसे जुड़ने के लिए तैयार रहते थे। वे हमेशा सीखने और अपने ज्ञान को अद्यतन रखने के लिए तैयार रहते थे। डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व काल में देश की सारी आर्थिक नीतियों को डी। स्कूल वाले ही दिशा दे रहे थे। तब उनके प्रमुख आर्थिक सलाहकारों में डॉ. कौशिक बसु थे। कौशिक बसु 2009 से 2012 तक देश के मुख्य आर्थिक सलाहकार रहे। वे भी डी. स्कूल में अध्यापन करते रहे। डॉ. मनमोहन सिंह की सादगी, शराफत तथा विद्वत्ता उस दौर से लेकर दो बार प्रधानमंत्री बनने तक कायम रही। दिल्ली यूनिवर्सिटी में लंबे समय तक पढ़ाते रहे डॉ. राज कुमार जैन बताते हैं कि डॉ. सिंह कुछ समय तक मॉडल टाउन में किराए के मकान में रहते थे तथा विश्वविद्यालय साइकिल से आते थे। देश के वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री बनने से बहुत पहले डॉ. मनमोहन सिंह ने नॉर्थ दिल्ली के अशोक विहार में अपना घर बनाया था। इसे उन्होंने तब खरीदा था जब वे दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (डी स्कूल) में पढ़ा रहे थे। ये 1969 से 1971 के बीच की बातें हैं। डॉ. मनमोहन सिंह की बेटी दमन सिंह ने अपनी 2014 में प्रकाशित पुस्तक 'स्ट्रिक्टली पर्सनल' में लिखा है जब उनके पिता भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के ओहदे से मुक्त होकर 1985 में दिल्ली आए तो वे इसी अशोक विहार के घर में रहा करते थे।

भागवत को क्यों दी जा रही है धर्म गुरु नहीं बनने की नसीहत

संजय सक्सेना

अपना देश एक रंग बिरंगे गुलदस्ते की तरह है। अनेकता में एकता जिसकी शक्ति है। यहां विभिन्न धर्म और उनकी अलग-अलग पूजा पद्धति देखने को मिलती है तो देश का सामाजिक और जातीय ताना बाना भी काफी बंटा हुआ है। ऐसे में किसी भी मुद्दे पर किसी तरह की प्रतिक्रिया देने से पूर्व सौ बार उसके बारे में सोचना पड़ता है। वर्ना देश का माहौल खराब होने या जनता की भावनाएं भड़कने में देरी नहीं लगती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत का एक बयान इसका सबसे ताजा उदाहरण है। वैसे यह भी सच्चाई है कि भागवत के बयान पर पहली बार हो-हल्ला नहीं मच रहा है। इससे पूर्व भी भागवत के आरक्षण, ब्राह्मणों, डीएनए से जुड़े बयानों पर हंगामा खड़ा हो चुका है। अब संघ प्रमुख मोहन भागवत के मंदिर-मस्जिद वाले बयान पर साधु-संतों की ओर से आपत्ति सामने आई है। देश में हिंदू संतों की प्रमुख संस्था अखिल भारतीय संत समिति ने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की हर जगह मंदिर तलाशने और इसके सहारे कुछ लोगों का हिंदुओं का नेता बनने की कोशिश वाली टिप्पणी पर आपत्ति जताई है। समिति ने कहा है कि विभिन्न स्थलों पर मंदिर-मस्जिद विवाद को उठाने वाले नेताओं को अपने दायरे में रहना चाहिए। समिति के महासचिव स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती ने कहा कि मंदिर-मस्जिद का मुद्दा धार्मिक है और इसका फैसला धर्माचार्यों की ओर से किया जाना चाहिए। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इस मुद्दे को सांस्कृतिक संगठन आरएसएस के प्रमुख मोहन भागवत को छोड़ देना चाहिए।

स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती ने कहा कि जब धर्म का विषय उठेगा तो उसे धर्माचार्य तय करेंगे। जब यह धर्माचार्य तय करेंगे तो उसे संघ भी स्वीकार करेगा और विश्व हिंदू परिषद भी। स्वामी जितेंद्रानंद ने कहा कि मोहन भागवत की अतीत में इसी तरह की टिप्पणियों के बावजूद 56 नए स्थानों पर मंदिर पाए गए हैं, जो मंदिर-मस्जिद मुद्दों में रुचि और कार्रवाई का संकेत देते हैं। जितेंद्रानंद महाराज ने जोर देकर कहा कि धार्मिक संगठन जनता की भावनाओं के अनुसार कार्य करते हैं। इन समूहों के कार्य उन लोगों की मान्यताओं और भावनाओं से आकार लेते हैं जिनका वे

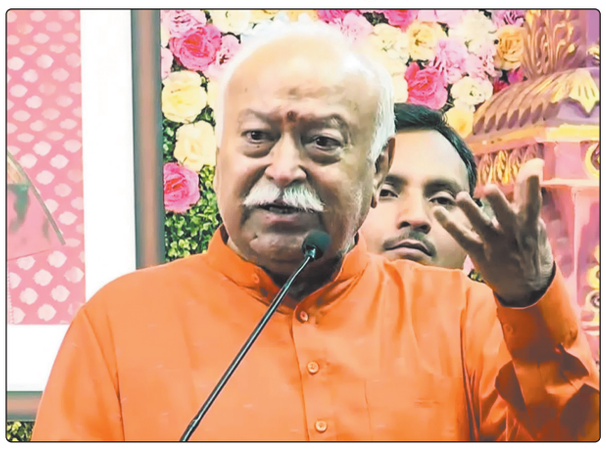

प्रतिनिधित्व करते हैं, न कि केवल राजनीतिक प्रेरणाओं से। स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती की यह टिप्पणी जगद्गुरु रामभद्राचार्य की ओर से मोहन भागवत से असहमति व्यक्त करने के एक दिन बाद आई है। बता दें जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने अपने बयान में कहा था कि मैं यह स्पष्ट कर दूं कि मोहन भागवत हमारे अनुशासनकर्ता नहीं हैं, बल्कि हम हैं। साधू संत तो भागवत के बयान से नाराज हैं हीं इसके साथ-साथ यह भी पहली बार देखने को मिल रहा है कि आरएसएस प्रमुख को 'परिवार' के भीतर भी विरोध का सामना करना पड़ रहा है। इससे पहले द्वारका में द्वारका शारदा पीठम और बद्रीनाथ में ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती संघ परिवार के खिलाफ रुख अपनाते थे, लेकिन उन्हें कांग्रेस की विचारधारा से प्रभावित बता कर उनके बयानों को खारिज कर दिया जाता था।

बहरहाल, जगद्गुरु रामभद्राचार्य के साथ-साथ अन्य हिंदू धार्मिक गुरु आरएसएस के सुर में सुर मिलाने को तैयार नहीं हैं। उनका मानना है कि संघ को आस्था के मामलों में धार्मिक हस्तियों के नेतृत्व का सम्मान करना चाहिए। उधर, राजनीति के जानकारों का कहना है कि यह स्थिति धार्मिक मामलों में आरएसएस की भूमिका और प्रभाव को लेकर हिंदू धार्मिक समुदाय के भीतर संभावित झगड़े को भी दर्शाती है। रामभद्राचार्य ने कहा कि संभल में जो कुछ भी हो रहा था वह वास्तव में बुरा था। उन्होंने कहा कि इस मामले में सकारात्मक पक्ष यह है कि चीजें हिंदुओं के पक्ष में सामने आ रही हैं। हम इसे अदालतों, मतपत्रों और जनता के समर्थन से सुरक्षित करेंगे। उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ किए गए अत्याचारों पर भी चिंता व्यक्त की।

बता दें हाल ही में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने मंदिर-मस्जिद विवादों के फिर से उभरने पर चिंता व्यक्त की थी। उन्होंने लोगों को ऐसे मुद्दों को न उठाने की सलाह दी। मोहन भागवत ने कहा कि मंदिर-मस्जिद विवादों को उछाल कर और सांप्रदायिक विभाजन फैलाकर कोई भी हिंदुओं का नेता नहीं बन सकता। उनका यह बयान हिंदू दक्षिणपंथी समूहों की ओर से देश भर में विभिन्न अदालतों में दशकों पुरानी मस्जिदों पर दावे जैसी मांग के बाद आया है। इस पर हिंदूवादी संगठनों का दावा है कि ये पुरानी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर बनाई गई थीं। इन मस्जिदों में जौनपुर की अटाला और संभल की शाही जामा मस्जिद भी शामिल है, जिस मामले में हाल ही में हिंसा हुई थी। 24 नवंबर को भड़की हिंसा में पांच लोग मारे गए थे।

उधर, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान पर राजनीति भी थमने का नाम नहीं ले रही है। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत का मंदिर-मस्जिद विवाद न उठाने का बयान लोगों को गुमराह करने के उद्देश्य से था। यह आरएसएस की खतरनाक कार्यप्रणाली को दर्शाता है, क्योंकि इसके नेता जो कहते हैं उसके ठीक विपरीत करते हैं। वे ऐसे मुद्दे उठाने वालों का समर्थन करते हैं। वहीं कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए आरएसएस प्रमुख को घेरा। उन्होंने कहा कि अगर आरएसएस प्रमुख ईमानदार हैं तो उन्हें सार्वजनिक रूप से घोषणा करनी चाहिए कि भविष्य में संघ ऐसे नेताओं का समर्थन कभी नहीं करेगा जो सामाजिक सद्भाव को खतरे में डालते हैं। जयराम ने कहा कि आरएसएस प्रमुख ऐसा नहीं कहेंगे, क्योंकि मंदिर-मस्जिद का मुद्दा आरएसएस के इशारे पर हो रहा है। कई मामलों में, जो लोग ऐसे विभाजनकारी मुद्दों को भड़काते हैं और दंगे करवाते हैं, उनके आरएसएस से संबंध होते हैं।

भारत रत्न मिले तो क्या राजनीति से संन्यास ले लेंगे नीतीश

राहिल नोरा चोपड़ा

अगले साल अक्तूबर-नवंबर में बिहार विधानसभा के चुनाव होने हैं, ऐसे में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने 25 दिसंबर को कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और ओडिशा के पूर्व सी.एम. नवीन पटनायक को भारत रत्न दिया जाना चाहिए।

इससे पहले अक्तूबर 2024 में, जे.डी.(यू) ने पटना में कार्यालय के बाहर एक पोस्टर लगाया था, जिसमें सी.एम. नीतीश कुमार के लिए भारत रत्न पुरस्कार की मांग की गई थी और हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (सैक्युलर) जीतन राम मांझी और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान सहित सत्तारूढ़ गठबंधन पार्टी के नेताओं ने इस मांग का समर्थन किया था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उन अटकलों को खारिज किया है कि भाजपा बिहार में महाराष्ट्र जैसी रणनीति अपना सकती है। जबकि राज्य भाजपा नेतृत्व ने कहा है कि एन.डी.ए. आगामी राज्य विधानसभा चुनाव नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ेगा।

25 दिसंबर को, वरिष्ठ जे.डी.(यू) नेताओं ने नई दिल्ली में इसी बात पर जोर दिया। हालांकि, इस मुद्दे पर नीतीश कुमार की चुप्पी ने राजनीतिक हलकों में अटकलों को हवा दे दी है कि विधानसभा चुनाव से पहले वह एक और राजनीतिक बदलाव कर सकते हैं। लेकिन अब बड़ा सवाल यह है कि अगर नीतीश कुमार को भारत रत्न मिल भी जाता है तो क्या वह राजनीति से संन्यास

ले लेंगे और अपनी पार्टी और सरकार भाजपा को सौंप देंगे? परन्तु यह संभावना कम ही लगती है। हालांकि, भाजपा नेताओं का मानना है कि नीतीश कुमार को भारत रत्न दिए जाने के बाद उन्हें सक्रिय राजनीति से संन्यास लेना आसान हो सकता है, इससे उनके समर्थकों में सद्भावना बढ़ेगी और इसके अलावा इससे भाजपा के हाथों में राजनीतिक सत्ता भी जाएगी।

केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान का पटना राजभवन में स्थानांतरण = बिहार में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान का पटना राजभवन में स्थानांतरण काफी स्पष्ट है और यह किसी की नजर में नहीं आने वाला है। जे.डी.(यू) ने खान की उदार और प्रगतिशील अल्पसंख्यक चेहरे के रूप में साख का हवाला देते हुए इस फैसले का स्वागत किया है। वहीं, आर.जे.डी. ने भी खान की नियुक्ति का स्वागत किया है, लेकिन केरल में उनके राज्यपाल के रूप में कार्यकाल का हवाला देते हुए संघीय ढांचे की कथित अवहेलना के उनके पिछले रिकॉर्ड पर संदेह और आशंका जताई है। हालांकि, खान केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन की सरकार के साथ कई मुद्दों पर उलझे हुए हैं, जबकि भाजपा-एन.डी.ए. नेतृत्व का मानना है कि बिहार के राज्यपाल के रूप में उनकी नियुक्ति से राज्य में एन.डी.ए. को ही मदद मिलेगी। इस बीच नीतीश कुमार सरकार के लिए असली चुनौती यह है कि अगर वह मुस्लिम समुदाय तक नहीं पहुंचती है, तो वह न केवल एक महत्वपूर्ण मतदाता आधार खो देगी, बल्कि 18 प्रतिशत मुस्लिम वोट भी राजद और कांग्रेस के नेतृत्व वाले महागठबंधन (विपक्षी गठबंधन) को चला जाएगा।

'आप' ने दिया विपक्षी एकता को बड़ा झटका = दिल्ली चुनाव से पहले विपक्षी एकता को बड़ा झटका देते हुए आम आदमी पार्टी ('आप') ने कहा कि अगर वह अरविंद केजरीवाल को देशद्रोही कहने वाले वरिष्ठ नेता अजय माकन के खिलाफ कार्रवाई नहीं करती है और यह स्पष्ट नहीं करती है कि वह दिल्ली चुनाव के लिए भाजपा के साथ मिलीभगत कर रही है या नहीं, तो वे अन्य दलों से कांग्रेस को 'इंडिया' ब्लॉक से हटाने के लिए कहेंगे। 'आप' ने यह भी आरोप लगाया कि केजरीवाल के खिलाफ चुनाव लड़ रहे संदीप दीक्षित और मनीष सिसोदिया के खिलाफ चुनाव लड़ रहे फरहाद सूरी सहित कांग्रेस के उम्मीदवारों को भाजपा द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। 'आप' का यह कदम ऐसे समय में आया है जब हरियाणा और महाराष्ट्र में हार के बाद तृणमूल कांग्रेस ने नेतृत्व के मुद्दे पर कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। टी.एम.सी. प्रमुख ममता बनर्जी ने 'इंडिया' गठबंधन की कमान संभालने के लिए शरद पवार और लालू प्रसाद जैसे क्षत्रपों का समर्थन हासिल किया है। दूसरी ओर, सपा ने भी यू.पी. उप-चुनावों में अपनी ताकत दिखाई है और अब उसने दिल्ली में होने वाले विधानसभा चुनावों में अरविंद केजरीवाल को समर्थन देने का फैसला किया है।

कांग्रेस का संविधान बचाओ राष्ट्रव्यापी जनसंपर्क अभियान = कांग्रेस कार्य समिति (सी.डब्ल्यू.सी.) ने भाजपा के नेतृत्व वाली एन.डी.ए. सरकार को घेरने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, भारतीय संविधान के निर्माता भीमराव आंबेडकर और संविधान के इर्द-गिर्द केंद्रित 13 महीने लंबे अभियान की घोषणा की। पार्टी ने कहा कि उसने 26 जनवरी, 2025 और 26 जनवरी, 2026 के बीच संविधान बचाओ राष्ट्रीय पदयात्रा नामक एक राष्ट्रव्यापी जनसंपर्क अभियान की भी योजना बनाई है।

कांग्रेस ने यह घोषणा ऐसे समय की है जब वह एक राजनीतिक विवाद में लगी हुई है, जिसमें भाजपा पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के संसद में भाषण का हवाला देते हुए बी.आर. आंबेडकर का अनादर करने और संविधान को कमजोर करने का प्रयास करने का आरोप लगाया गया है। हालांकि, भाजपा ने आरोपों का खंडन किया। पार्टी ने जवाबदेही और क्षमता के आधार पर एक बड़े संगठनात्मक बदलाव का भी आह्वान किया, जो तुरंत शुरू होकर अगले साल तक चलेगा।

आर्टीफिशियल इंटैलीजैंस और आधुनिक युद्ध

मनीष तिवारी

आज के युद्ध के बदलते परिदृश्य में, पारंपरिक सैन्य रणनीतियों और उन्नत तकनीक के बीच की रेखाएं तेजी से धुंधली होती जा रही हैं। आर्टीफिशियल इंटैलीजैंस (ए.आई.) और अन्य उभरती हुई तकनीकों का उदय संघर्ष के साधनों, रणनीति और नैतिक विचारों में क्रांति ला रहा है। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण यूक्रेन द्वारा रूसी हवाई ठिकानों को निशाना बनाने के लिए कम लागत वाले कार्डबोर्ड ड्रोन की तैनाती है, जो दर्शाता है कि कैसे युद्ध के मैदान को नवाचार फिर से परिभाषित कर रहा है। जबकि ए.आई. सैन्य संदर्भों में निगरानी निर्णय लेने और परिचालन दक्षता को बढ़ाता है। यह महत्वपूर्ण नैतिक दुविधाओं और अस्तित्व संबंधी ड्क्षचताओं को भी सामने लाता है। आधुनिक युद्ध में स्वायत्त हथियार प्रणालियों (ए.डब्ल्यू.एस.) का एकीकरण युद्ध में एक गहन परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है। मानव रहित हवाई वाहन (यू.ए.वी.) और ए.आई.-संचालित ग्राऊंड रोबोट सहित ये प्रणालियां मानवीय हस्तक्षेप के बिना लक्ष्यों की पहचान और उन पर हमला कर सकती हैं। उन्नत सैंसर और ए.आई.एल्गोरिदम से लैस, ए.डब्ल्यू.एस. वास्तविक समय में निर्णय लेने की क्षमता और निगरानी को बढ़ाता है और साथ ही मानव कर्मियों के लिए जोखिम को कम करते हुए सटीक हमले करता है। मार्च 2020 में लीबिया में एक भयावह उदाहरण देखने को मिला, जहां कामिकेज ड्रोन ने स्वायत्त रूप से ट्रकों के काफिले को निशाना बनाया और नष्ट कर दिया। प्रभाव पर विस्फोट करने के लिए डिजाइन किए गए इन ड्रोनों ने मानव आदेशों के बिना हमले को अंजाम दिया, जो ऐसी तकनीकों की नैतिक जटिलताओं को रेखांकित करता है। ड्रोन तकनीक का झुंड एक और गेम-चेंजर है। ए.आई. का उपयोग करके, कई ड्रोन रक्षा को खत्म करने या खुफिया जानकारी इकट्ठा करने के लिए सहजता से समन्वय कर सकते हैं। रूसी हवाई क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण नुकसान पहुंचाने के लिए यूक्रेन द्वारा सस्ते कार्ड बोर्ड ड्रोन का उपयोग कम लागत वाले, सुलभ सैन्य नवाचारों की विध्वंसक शक्ति को उजागर करता है। गाजा में ऑपरेशन के दौरान इसराईल द्वारा 'लैवेंडर' ए.आई. सिस्टम की तैनाती ने विशाल डाटा का विश्लेषण लक्ष्यों की पहचान और समन्वित हमलों को अंजाम देने की इसकी क्षमता का प्रदर्शन किया। इसे 'पहला ए.आई. युद्ध' कहा जाता है, इसने संघर्ष क्षेत्रों में मशीन-संचालित निर्णय लेने के एक नए युग को चिह्नित किया। प्रौद्योगिकी का प्रभाव साइबर युद्ध तक भी फैला हुआ है। अत्याधुनिक उपकरण अभूतपूर्व गति से खतरों का पता लगाते हैं और उन्हें बेअसर करते हैं और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की रक्षा करते हैं। पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण और मशीन लर्निंग भी रसद, कमांड निर्णयों और दुश्मन की रणनीतियों की प्रत्याशा को नया रूप दे रहे हैं। जैसे-जैसे ये प्रौद्योगिकियां अधिक सुलभ होती जा रही हैं, वे विषमता की बाधा को कम करके, छोटे राज्यों, अर्ध-राज्य और गैर-राज्य अभिनेताओं को सशक्त बनाकर खेल के मैदान को समतल कर रही हैं, जबकि स्थापित शक्ति के आदर्शों को चुनौती दे रही हैं। विश्व के कई देश इस दौड़ में ए.आई. संचालित सैन्य प्रणालियों में भारी निवेश कर रहे हैं। चीन का लक्ष्य 2030 तक ए.आई. उन्नति के लिए 150 बिलियन डालर आबंटित करना है, जबकि रूस ने 2021 और 2023 के बीच 181 मिलियन डालर का निवेश किया है। संयुक्त राज्य अमरीका में, ए.आई. से संबंधित संघीय अनुबंधों का मूल्य अगस्त 2022 में 355 मिलियन डालर से बढ़कर अगस्त 2023 तक 4.6 बिलियन डालर हो गया।

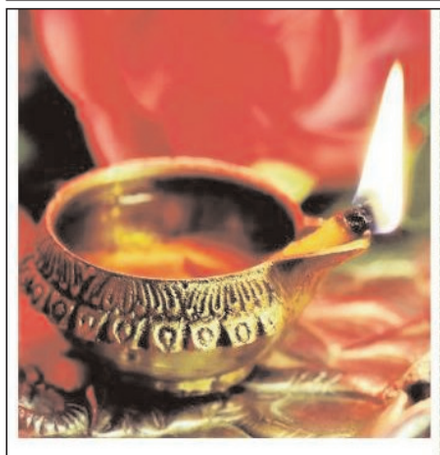

सोमवती अमावस्या कब है, जानें पूजा का मुहूर्त और दान-पुण्य का महत्व

हिंदू धर्म में सभी तिथियों को महत्वपूर्ण माना गया है। वहीं अमावस्या तिथि का भी विशेष महत्व बताया गया है। सोमवार के दिन पड़ने के कारण इसे सोमवती अमावस्या कहा जाता है। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा विधिवत रूप से करने का विधान है। इस दिन व्रत रखने और पूजा-पाठ करने से व्यक्ति के सुख-समृद्धि और सौभाग्य में वृद्धि हो सकती है। सोमवती अमावस्या के दिन स्नान-दान करने से व्यक्ति को पुण्य प्राप्ति होती है। अब ऐसे में इस साल की आखिरी अमावस्या तिथि कब पड़ रही है। पूजा का शुभ मुहूर्त क्या है और पूजा का महत्व क्या है।

सोमवती अमावस्या कब है?

वैदिक पंचांग के हिसाब से इस साल की आखिरी अमावस्या तिथि पौष माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को पड़ने वाली है। इस साल यह तिथि 30 दिसंबर को पड़ने वाली है। आपको बता दें, 30 दिसंबर को सुबह 04 बजकर 01 मिनट से लेकर इस तिथि का समापन सुबह 03 बजकर 56 मिनट पर होगा। इसलिए उदया तिथि के आधार पर इस साल सोमवती अमावस्या का व्रत 30 दिसंबर को मनाया जाएगा।

सोमवती अमावस्या के दिन पूजा का शुभ मुहूर्त कब है?

सोमवती अमावस्या के दिन स्नान ब्रह्म मुहूर्त में करना शुभ माना जाता है। ब्रह्म मुहूर्त प्रात: 5.24 से 6.19 बजे तक रहेगा। इस दौरान स्नान करना उत्तम फलदायी माना गया है।

भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा के लिए शुभ मुहूर्त - दोपहर 12 बजकर 03 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 45 मिनट तक है। इस दौरान अभिजीत मुहूर्त में भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा विधिवत रूप से करने से व्यक्ति को अक्षत फलों की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही सुखी दांपत्य जीवन का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।

सोमवती अमावस्या के दिन पूजा का महत्व

सोमवती अमावस्या के दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में आ रही परेशानियां दूर हो सकती है और सुख-समृद्धि में वृद्धि हो सकती है और जीवन में आ रही परेशानियां दूर हो जाती है। इसके अलावा अगर किसी व्यक्ति को मनचाहे वर की कामना है, तो वह भी इच्छा पूरी हो सकती है।

सोमवती अमावस्या के दिन पीपल के पेड़ में क्या-क्या चढ़ाएं?

हिंदू धर्म में सोमवती अमावस्या तिथि को बेहद महत्वपूर्ण माना गया है। इस दिन पीपल के पेड़ में क्या-क्या चढ़ाने से व्यक्ति को उत्तम परिणाम मिल सकते हैं।

पंचांग के हिसाब से कुल 12 अमावस्या तिथि पड़ती है। इस दौरान विशेष रूप से पितरों की पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन स्नान-दान करने भी शुभ माना जाता है और व्यक्ति को पितृदोष से भी मुक्ति मिल जाती है। आपको बता दें, अमावस्या तिथि के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति को सुख-समृद्धि की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही जीवन में आने वाली सभी बाधाओं से भी छुटकारा मिल जाता है। अब ऐसे में सोमवती अमावस्या सोमवार के दिन पड़ रहा है, जिसके कारण इस दिन पीपल के पेड़ की पूजा करने की मान्यता है।

पीपल के पेड़ में चढ़ाएं दूध

शास्त्रों में पीपल के पेड़ को मोक्षदायिनी माना गया है। ऐसा कहा जाता है कि पीपल के पेड़ में दूध चढ़ाने से व्यक्ति को सभी परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है। अमावस्या के दिन दूध चढ़ाने से व्यक्ति को मनचाहे फलों की प्राप्ति हो सकती है। आपको बता दें, पीपल के पेड़ में सभी देवी-देवताओं का वास होता है और इस दिन पीपल के पेड़ में दूध अर्पित करने से व्यक्ति को ग्रहदोष से छुटकारा मिल जाता है और जीवन में आने वाली सभी समस्याएं भी दूर हो जाती है।

पीपल के पेड़ में चढ़ाएं तिल

पीपल के पेड़ में तिल चढ़ाने से व्यक्ति को शनिदोष से छुटकारा मिल जाता है। पीपल के पेड़ में तिल चढ़ाने से सभी देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है। साथ ही व्यक्ति को बैकुंठ की भी प्राप्ति होती है। आपको बता दें, तिल का संबंध पितरों से माना जाता है। इसलिए, पीपल के पेड़ में तिल चढ़ाने से पितृ दोष दूर होता है और पितरों का आशीर्वाद मिलता है। पीपल के पेड़ में तिल चढ़ाने से घर की नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

पीपल के पेड़ में चढ़ाएं गुड़

पीपल के पेड़ में गुड़ चढ़ाना का भी विधान है। ऐसा कहा जाता है कि अगर आपको बार-बार किसी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, तो इससे अशुभ प्रभाव कम हो सकते हैं। शास्त्रों के अनुसार, शनिवार के दिन पीपल के पेड़ में गुड़ चढ़ाने से शनि दोष का प्रभाव कम होता है। शनि दोष के कारण व्यक्ति को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। गुड़ चढ़ाने से शनि देव प्रसन्न होते हैं और व्यक्ति को अपने आशीर्वाद देते हैं। साथ ही मनचाहे परिणाम भी मिलते हैं।

पौष माह में भगवान विष्णु को पीला नहीं, लाल चंदन ही क्यों लगाते हैं?

पौष माह भगवान विष्णु को समर्पित है। पौष माह में भगवान विष्णु की पूजा का विधान है। ऐसा माना जाता है कि पौष माह में श्री हरि नारायण की आराधना करने से व्यक्ति के दुख दूर हो जाते हैं और भगवान विष्णु का सानिध्य प्राप्त होता है। वहीं, शास्त्रों में यह भी वर्णित है कि पौष माह के दौरान भगवान विष्णु का श्रृंगार करना भी शुभ होता है। हालांकि, यह भी उल्लेखित है कि पौष माह में भगवान विष्णु को पीला नहीं बल्कि लाल चंदन लगाना चाहिए। ऐसे में ज्योतिषाचार्य राधाकांत वत्स से आइये जानते हैं कि क्यों पौष माह में लगाया जाता है श्री हरि विष्णु को लाल चंदन।

पौष माह में भगवान विष्णु को लाल चंदन लगाने के लाभ

- पौष माह के दौरान भगवान विष्णु को लाल चंदन लगाने से सूर्य की कुंडली में स्थिति मजबूत होती है। सूर्य ग्रह के मजबूत होने से भाग्य का साथ मिलने लगता है। सौभाग्य में वृद्धि होती है और सफलता प्राप्ति में आ रही बाधाएं भी दूर हो जाती हैं। तरक्की के मार्ग खुलने लगते हैं।
- पौष माह में भगवान विष्णु को लाल चंदन लगाने से मंगल ग्रह की शुभता भी मिलती है। ऐसा इसलिए क्योंकि लाल रंग मंगल का प्रतीक माना जाता है। मंगल ग्रह के शुभ प्रभाव से मांगलिक कार्य, विशेष रूप से विवाह में आ रही बाधाएं या फिर वैवाहिक जीवन के दुख दूर होते हैं।
- पौष माह में भगवान विष्णु को लाल चंदन लगाना इसलिए भी शुभ माना जाता है क्योंकि इससे उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता होती है। असल में लाल रंग मां लक्ष्मी का प्रिय है। मां लक्ष्मी का वास जहां होता है वहीं श्री हरि विराजते हैं। लाल चंदन विष्णु जी को लगाने से मां लक्ष्मी का वास बना रहता है।
- पौष माह में लाल चंदन भगवान विष्णु को लगाने से पितृ भी प्रसन्न होते हैं और उनका क्रोध शांत हो जाता है। भगवान विष्णु को पितरों का देवता माना गया है। ऐसे में पौष माह के दौरान लाल चंदन भगवान विष्णु को लगाने से पितृ दोष से भी राहत मिलती है और शुभ कार्य सफल होते हैं।

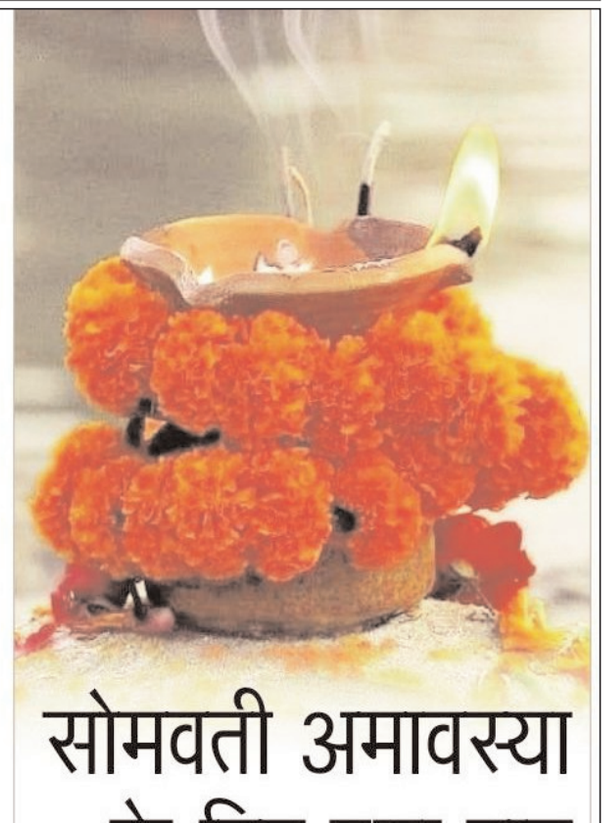

सोमवती अमावस्या के दिन क्या दान करना चाहिए?

पौष माह की अमावस्या यानी कि साल की आखिरी अमावस्या 30 दिसंबर, दिन सोमवार को पड़ने जा रही है। जहां एक ओर सोमवती अमावस्या के दिन पवित्र नदी में स्नान का विशेष स्थान मौजूद है तो वहीं, दूसरी ओर इस दिन दान करना भी बहुत हितकारी माना जाता है। ऐसे में ज्योतिषाचार्य ने बताया कि सोमवती अमावस्या के दिन कौन सी चीजों का दान करना चाहिए और क्या हैं उससे मिलने वाले लाभ।

सोमवती अमावस्या के दिन करें तिल का दान

तिल का संबंध शनि देव से माना जाता है। इसके अलावा, तिल का नाता पितरों से भी है। ऐसे में सोमवती अमावस्या के दिन तिल का दान करने से न सिर्फ शनि देव प्रसन्न होते हैं बल्कि पितरों का आशीर्वाद भी मिलता है और घर में सुख-समृद्धि आती है।

सोमवती अमावस्या के दिन करें वस्त्र का दान

सोमवती अमावस्या के दिन काले वस्त्रों का दान करना बहुत शुभ माना जाता है। काले वस्त्रों का दान करने से घर या घर के सदस्यों को लगी बुरी नजर उतर जाती है। इसके अलावा, काले वस्त्रों का सोमवती अमावस्या के दिन दान करने से राहु मजबूत होता है।

सोमवती अमावस्या के दिन करें गुड़ का दान

सोमवती अमावस्य के दिन गुड़ का दान करने से पारिवारिक क्लेश दूर होता है। अगर परिवार के सदस्यों के बीच किसी भी प्रकार का मतभेद है तो वह नष्ट हो जाता है और आपसी तालमेल, प्यार और विश्वास बढ़ता है। पारिवारिक शांति स्थापित होती है।

सोमवती अमावस्या के दिन करें जूते का दान

सोमवती अमावस्या के दिन जूतों का दान करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि जूतों का दान करने से घर में पसरी हुई धन की कमी दूर हो जाती है। इसके अलावा, घर में मौजूद नकारात्मक ऊर्जा भी नष्ट होने लगती है और सकारात्मकता बढ़ती है।

माघ मास में किए जाते हैं कौन से 10 पुण्य के काम

माघ मास को बहुत ही पवित्र माह माना जाता है। इस माह के प्रारंभ होते ही मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं और इस माह में सूर्य उत्तरायण रहता है। अतः माघ माह में दान, पुण्य आदि के कार्य किए जाने से सभी तरह के संकट मिटकर व्यक्ति सुख और समृद्धि पाता है। आओ जानते हैं कि माघमास में कौनसे 10 पुण्य के काम किए जाते हैं।

- **माघ स्नान**
  इस मास में शीतल जल के भीतर डुबकी लगाने वाले मनुष्य पापमुक्त हो जाते हैं। संगम नहीं तो गंगा, गोदावरी, कावेरी, नर्मदा, कृष्णा, क्षिप्रा, सिंधु, सरस्वती, ब्रह्मपुत्र आदि पवित्र नदियों में स्नान करना चाहिए।
- **दान**
  माघ माह में कंबल, वस्त्र, तिल, अन्न, घी, नमक, गुड़, पांच तरह के अनाज, गाय आदि का दान करने से हजार गुना पुण्य की प्राप्ति होती है।
- **तिल का महत्व**
  माघ कृष्ण द्वादशी को यम ने तिलों का निर्माण किया और दशरथ ने उन्हें पृथ्वी पर लाकर खेतों में बोया था। अतएव मनुष्यों को उस दिन उपवास रखकर तिलों का दान कर तिलों को ही खाना चाहिए।
- **व्रत**
  माघ महीने की शुक्ल पंचमी से वसंत ऋतु का आरंभ होता है और तिल चतुर्थी, रथसप्तमी, भीष्माष्टमी आदि व्रत प्रारंभ होते हैं। माघ शुक्ल चतुर्थी को उमा चतुर्थी कहा जाता है। शुक्ल सप्तमी को व्रत का अनुष्ठान होता है। उक्त दिनों में व्रत रखने से सभी तरह के संकट दूर होकर पुण्य की प्राप्ति होती रहै।
- **विष्णु पूजा**
  माघ माह में श्रीहरि भगवान विष्णु की माता लक्ष्मी के साथ पूजा करना चाहिए। इससे घर में सुख, शांति, धन और समृद्धि बनी रहती है। उपरोक्त बताए गए व्रतों में भगवान विष्णु की पूजा होती है।
- **कल्पवास**
  माघ माह में कल्पवास का बहुत महत्व है। नदी के तट पर साधुओं के साथ कुटिया बनाकर कुछ विशेष दिनों तक रहने को कल्पवास कहते हैं। इससे सांसारिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है।
- **सत्संग**
  इस माह में संतों के साथ सत्संग करने और धर्म, कर्म की बातों को ग्रहण करने के बहुत महत्व होता है। इससे मन निर्मल होकर पुण्य की प्राप्ति होती है। सत्संग से धर्म का ज्ञान प्राप्त होता है। धर्म के ज्ञान से जीवन की बाधाओं से मुकाबला करने का समाधान मिलता है।
- **स्वाध्याय**
  स्वाध्यय के दो अर्थ है। पहला स्वयं का अध्ययन करना और दूसरा धर्मग्रंथों का अध्ययन करना। आप स्वयं के ज्ञान, कर्म और व्यवहार की समीक्षा करते हुए पढ़ें, वह सब कुछ जिससे आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता हो साथ ही आपको इससे खुशी भी मिलती हो।
- **दीपदान**
  माघ पूर्णिमा या किसी विशेष दिन पर नदी तट पर या नदी में दीपदान करने को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इससे देवी और देवता प्रसन्न होते हैं और पुण्य की प्राप्ति होती है।
- **तर्पण**
  माघ माह में अमास्या और पूर्णिमा के दिन पितरों के निमित्त तर्पण करना चाहिए क्योंकि इस पवित्र माह में पितरों को मुक्ति मिलती है। यह पुण्य का सबसे बड़ा कार्य है।

माघ माह के प्रारंभ होते ही मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं और इस माह में सूर्य उत्तरायण रहता है। अतः माघ माह में दान, पुण्य आदि के कार्य किए जाने से सभी तरह के संकट मिटकर व्यक्ति सुख और समृद्धि पाता है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

भाजपा का डबल इंजन युवाओं पर डबल अत्याचार का प्रतीक

नईदिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की परीक्षा रद्द करने की मांग कर रहे प्रदर्शनकाारियों पर बल प्रयोग किए जाने को लेकर सोमवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का डबल इंजन युवाओं पर डबल अत्याचार का प्रतीक बन गया है। बीपीएससी की 13 दिसंबर को हुई परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर पटना में विरोध कर रहे प्रदर्शनकाारियों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने रविवार को पानी की बौछार की और हल्का बल भी प्रयोग किया। इसके साथ ही जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर और उनकी पार्टी के अध्यक्ष समेत 600-700 अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। प्रियंका गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, बिहार में तीन दिन के अंदर दूसरी बार छात्रों पर अत्याचार किया गया। परीक्षाओं में भ्रष्टाचार, धांधली, पेपर लीक रोकना सरकार का काम है।

सीएम योगी के आवास के नीचे भी शिवलिंग : अखिलेश

लखनऊ। संभल में चल रही खुदाई के बीच समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर कटाक्ष किया। सीधे तौर पर सीएम का नाम लिए बिना यादव ने कहा कि चूंकि खुदाई का काम चल रहा है, इसलिए मेरा मानना है कि मुख्यमंत्री आवास पर भी एक शिवलिंग है। हमें विश्वास है कि वहां शिवलिंग है। हम सभी को इसकी खुदाई की तैयारी करनी चाहिए। यादव की यह टिप्पणी तब आई है जब संभल में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संरचनाओं की खोज के लिए उत्खनन प्रयास जारी हैं। चंदौसी के लक्ष्मण गंज इलाके में, एक अतिक्रमण विरोधी अभियान के दौरान 125-150 साल पुरानी और 400 वर्ग मीटर में फैली एक बावड़ी का पता चला था। यह खोज 13 दिसंबर को संभल में भस्म शंकर मंदिर के फिर से खुलने के कुछ ही दिनों बाद हुई, जो 46 वर्षों से बंद था। बिलारी के राजा के नाना के शासनकाल के दौरान निर्मित बावड़ी से एक मंदिर के कुएं के अंदर दो क्षतिग्रस्त मूर्तियाँ भी मिलीं।

दिल्ली में केजरीवाल ने किया एक और योजना का ऐलान

नईदिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले समर्थन जुटाने के लिए आम आदमी पार्टी (आप) प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को पुजारी ग्रंथी सम्मान योजना शुरू करने की घोषणा की। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस योजना का लक्ष्य मंदिरों के पुजारियों और गुरुद्वारे के ग्रंथियों को प्रति माह 18,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करना है। केजरीवाल ने कहा कि आज मैं एक योजना के संबंध में एक महत्वपूर्ण घोषणा कर रहा हूं। योजना का नाम पुजारी ग्रंथी सम्मान योजना है। आप प्रमुख ने बताया कि इसके तहत मंदिरों के पुजारियों और गुरुद्वारे के ग्रंथियों को सम्मान राशि देने का प्रावधान है। इन्हें प्रति माह लगभग 18,000 रुपये का मानदेय दिया जाएगा। ऐसा देश में पहली बार हो रहा है। उन्होंने कहा कि पुजारी एक ऐसा वर्ग है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनुष्ठानों को आगे बढ़ाता है। उन्होंने कभी अपने परिवार पर ध्यान नहीं दिया और हमने कभी उन पर ध्यान नहीं दिया।

अचानक केजरीवाल के घर को इमामों ने क्यों घेर लिया?

नईदिल्ली। ऑल इंडिया इमाम एसोसिएशन के प्रमुख साजिद रशीदी ने कहा कि वह अपने वेतन के भुगतान के लिए आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलेंगे। उन्होंने दावा किया कि इमामों को पिछले 17 महीने से वेतन नहीं मिला है। ऑल इंडिया इमाम एसोसिएशन के प्रमुख ने दिल्ली सरकार से विधानसभा चुनाव से पहले वक्फ बोर्ड को पैसा जारी करने का आग्रह किया। रशीदी के हवाले से कहा गया कि इमामों को पिछले 17 महीनों से उनका वेतन नहीं मिला है, इसलिए हम दिल्ली सरकार को चुनाव से पहले वक्फ बोर्ड को यह पैसा जारी करने के लिए मनाने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि एमसीसी लागू होने के बाद पूरी प्रक्रिया रुक जाती है। उन्होंने आगे कहा कि वे इसके लिए दिल्ली की सीएम आतिशी, एलजी के साथ-साथ वरिष्ठ और कनिष्ठ अधिकारियों से भी मिल चुके हैं। अगर उन्होंने अब हमें जवाब नहीं दिया तो हम यहीं धरने पर बैठ जाएंगे और तब तक नहीं उठेंगे जब तक हमें हमारा वेतन नहीं मिल जाता।

केरल मिनी पाकिस्तान इसलिए जीते राहुल-प्रियंका: नितेश राणे

मुंबई। महाराष्ट्र के मंत्री नितेश राणे ने एक विवादास्पद टिप्पणी में केरल की तुलना मिनी पाकिस्तान से की है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता ने कहा कि कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाद्रा और राहुल गांधी को इसी कारण से संसद सदस्य के रूप में चुना गया था। राणे ने पुणे जिले के पुरंदर तालुका में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा कि केरल मिनी पाकिस्तान है, इसीलिए राहुल गांधी और उनकी बहन वहां से चुने जाते हैं। सभी आतंकवादी उन्हें वोट देते हैं। यह सच्चाई है, आप पूछ सकते हैं। वे आतंकवादियों को अपने साथ लेकर सांसद बने हैं। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री नारायण राणे के बेटे राणे, शिव प्रताप दिवस के अवसर पर एक समारोह में बोल रहे थे, जो उस ऐतिहासिक घटना की सालगिरह है जब छत्रपति शिवाजी महाराज ने अफजल खान को मार डाला था जब उन्होंने ये टिप्पणी की। राणे ने हाल ही में संपन्न 2024 महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कंकावली सीट से जीत हासिल की।

राहुल के विदेश दौरे पर बवाल, भाजपा ने उठाए सवाल

■ **कांग्रेस बोली- ये डायवर्जन की राजनीति**

नईदिल्ली। बीजेपी ने राहुल गांधी पर तीखा हमला करते हुए दावा किया कि कांग्रेस सांसद नए साल का जश्न मनाने के लिए वियतनाम गए हैं जबकि देश पूर्व पीएम मनमोहन सिंह की मौत पर शोक मना रहा था। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, जिनकी 26 दिसंबर को मृत्यु हो गई, के सम्मान में पूरे देश में सात दिवसीय राष्ट्रीय शोक मनाया जा रहा है, इस दौरान पूरे देश में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। इस बीच, कांग्रेस पार्टी ने बीजेपी के आरोप पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि राहुल गांधी निजी विदेश यात्रा पर गए थे और किसी को किसी की निजता से जुड़े मामलों पर कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

कांग्रेस सांसद मनिकम टैगोर ने कहा कि संघी ये डायवर्जन की राजनीति कब बंद करेंगे? जिस तरह से मोदी ने डॉ. साहब को यमुना किनारे अंतिम संस्कार के लिए जगह नहीं दी और जिस तरह उनके मंत्रियों ने डॉ. साहब के परिवार को घेर लिया, वह शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि यदि गांधी निजी तौर पर यात्रा करते हैं, तो इससे आपको परेशानी क्यों होती है? नए साल में स्वस्थ रहें। कांग्रेस सांसद सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा कि बीजेपी सिर्फ झूठ बोलती है। हर बात पर झूठ बोलती है।

पार्टी सांसद ने आरोप लगाया कि उन्होंने पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह का स्मारक बनाने के लिए जगह नहीं दी। राहुल गांधी ने मनमोहन सिंह के पार्थिव शरीर को कंधा दिया...और बीजेपी उन पर आरोप लगा रही है। उन्होंने कहा कि पार्टी को शर्म आनी चाहिए...मनमोहन सिंह के नाम पर राजनीति करने के लिए उन्हें माफी मांगनी चाहिए। सोमवार को राजनीतिक विवाद खड़ा करते हुए बीजेपी आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने कहा, जब देश प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक मना रहा है, राहुल गांधी नया साल मनाने के लिए वियतनाम चले गए हैं।

मालवीय ने राहुल गांधी पर पूर्व पीएम की मौत का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाते हुए कहा, गांधी परिवार और कांग्रेस सिखों से नफरत करते हैं। यह कभी मत भूलिए कि इंदिरा गांधी ने दरबार साहिब का अपमान किया था। इससे एक दिन पहले भाजपा ने कांग्रेस पार्टी और गांधी परिवार की आलोचना करते हुए उन पर शनिवार को दिल्ली में यमुना नदी में विसर्जित की गई मनमोहन सिंह की अस्थियों को लेने नहीं आने का आरोप लगाया था।

पर्यटन और पार्टी के लिए निकल गए राहुल गांधी

मनमोहन सिंह की स्मृति विवाद पर वार-पलटवार के बीच, भाजपा ने राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए दावा किया कि कांग्रेस नेता नए साल के लिए वियतनाम चले गए हैं जबकि देश पूर्व प्रधानमंत्री की मृत्यु पर शोक मना रहा है। इससे एक दिन पहले भाजपा ने कांग्रेस पार्टी और गांधी पर मनमोहन सिंह के अवशेष लेने के लिए नहीं आने का आरोप लगाया था। हालाँकि, कांग्रेस पार्टी ने सोमवार को स्पष्टीकरण जारी करते हुए कहा, वरिष्ठ कांग्रेस नेता परिवार की गोपनीयता का सम्मान करते हुए मनमोहन सिंह जी की अस्थियाँ इकट्ठा करने और विसर्जित करने के लिए परिवार के साथ नहीं गए।

भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने एक्स पर लिखा, जब देश पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक मना रहा है, तब राहुल गांधी नए साल का जश्न मनाने के लिए विदेश जा रहे हैं। देश सात दिन के शोक में है। कांग्रेस को डॉ. मनमोहन सिंह की कोई परवाह नहीं है। उन्होंने जीवनभर उनका अपमान किया और अब भी यही कर रहे हैं। जैसा कि ताजा खुलासों में सामने आया है कि कांग्रेस ने डॉ. मनमोहन सिंह को भारत रत्न देने से भी इनकार किया। यही इनका असली चेहरा है। पूनावाला ने आगे कहा कि राहुल गांधी के लिए पर्यटन कोई नई बात नहीं है। मीडिया से बात करते हुए भाजपा प्रवक्ता ने कहा, राहुल गांधी ने विपक्ष के नेता के पद को पर्यटन नेता और पार्टी नेता में बदल दिया है। जब देश डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक मना रहा है, राहुल गांधी पर्यटन और पार्टी के काम के लिए विदेश चले गए हैं, जैसा कि मीडिया में आ रही खबरों में कहा जा रहा है। राहुल गांधी का पर्यटन नया नहीं है। जब 26/11 मुंबई हमला हुआ था, तब वह सारी रात पार्टी कर रहे थे। उन्हें डॉ. मनमोहन सिंह के निधन का कोई दुख नहीं है। शनिवार को देश द्वारा मनमोहन सिंह को विदाई देने के बाद, भाजपा और कांग्रेस के बीच इस मांग को लेकर राजनीतिक खींचतान शुरू हो गई कि सिंह का अंतिम संस्कार उनके स्मारक के लिए निर्दिष्ट स्थान पर किया जाए। जहां कांग्रेस ने भाजपा पर सिंह का अपमान और घोर अपमान करने का आरोप लगाया, वहीं सत्तारूढ़ दल ने कांग्रेस पर पूर्व प्रधानमंत्री के अंतिम संस्कार पर सस्ती राजनीति करने का आरोप लगाया।

भावी स्मारक के लिए समर्पित स्थान के कांग्रेस के अनुरोध के बावजूद, शुक्रवार को केंद्र ने घोषणा की कि सिंह का अंतिम संस्कार निगमबोध घाट पर किया जाएगा। केंद्र ने एक बयान में स्पष्ट किया कि एक ट्रस्ट स्थापित किया जाएगा, और एक स्मारक के लिए जगह आवंटित की जाएगी, लेकिन अंतिम संस्कार अभी भी श्मशान में होगा। तब से, दोनों पक्षों के प्रमुख नेताओं ने दिवंगत मनमोहन सिंह के कथित अपमान को लेकर तीखी नोकझोंक की है।

मनमोहन सिंह के अस्थि विसर्जन पर नहीं पहुंचा गांधी परिवार

पूर्व मनमोहन सिंह के निधन के बाद से लगातार राजनीति जारी है। पहले उनके स्मारक को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी रहा। अब उनकी अस्थियों से जुड़े मुद्दे पर बहस छिड़ गई है। दरअसल, डॉ. मनमोहन सिंह की अस्थियां उनके परिवार के सदस्यों ने सिख रीति-रिवाजों के अनुसार मजनू का टीला गुरुद्वारे के निकट यमुना नदी में विसर्जित कीं। इस दौरान गांधी परिवार का कोई सदस्य नहीं पहुंचा। इसी को लेकर भाजपा ने कांग्रेस पर निशाना साधा। हालांकि, अब सबसे पुरानी पार्टी के नेता ने सफाई दी है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कहा कि परिवार की निजता का सम्मान करते हुए पार्टी का कोई भी वरिष्ठ नेता डॉ. सिंह की अस्थियों को इकट्ठा और विसर्जित करने के लिए परिवार के साथ नहीं गया था। उन्होंने कहा कि हमारे प्रिय नेता के अंतिम संस्कार के बाद वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा उनके निवास पर परिवार से मुलाकात करने पहुंचे थे। उन्होंने कहा, उनसे चर्चा करने के बाद यह महसूस किया गया कि चूंकि अंतिम संस्कार के समय परिवार को कोई निजता नहीं मिली और परिवार के कुछ सदस्य चिता स्थल पर नहीं पहुंच पाए थे, इसलिए उन्हें फूल चुनने और अस्थियों के विसर्जन के लिए कुछ निजता देना उचित होगा जो कि करीबी परिवार के सदस्यों के लिए भावनात्मक रूप से पीड़ादायक और कठिन समय होता है।

मनमोहन सिंह पर कब तक सियासत

भाजपा-कांग्रेस के बीच स्मारक के निर्माण को लेकर बयानबाजी हुई तेज

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के स्मारक को लेकर कांग्रेस के आरोपों पर लगातार भाजपा जवाब दे रही है। इस बीच अधिकारियों ने पूर्व पीएम के स्मारक को लेकर जगह की तलाश शुरू कर दी है। पूर्व पीएम के स्मारक स्थल को लेकर कुछ जगहों के नाम सामने आए हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पूर्व पीएम का स्मारक राष्ट्रीय स्मृति स्थल और पूर्व पीएम चौधरी चरण सिंह के स्मारक किसान घाट के पास बन सकता है। दोनों ही जगह यमुना नदी के किनारे बनी हैं। इसके अलावा चर्चा यह भी है कि पूर्व पीएम का स्मारक संजय गांधी के समाधि स्थल और पूर्व पीएम नरसिम्हाराव की समाधि एकता स्थल के पास भी बनाया जा सकता है। हालांकि इसे लेकर फैसला सरकार को लेना है।

दरअसल, कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर देश के पहले सिख प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अंतिम संस्कार के लिए उचित और सम्मानजनक स्थान नहीं देने का आरोप लगाया। कांग्रेस की मांग थी कि अंतिम संस्कार ऐसे स्थान पर किया जाना चाहिए था, जहां बाद में उनका स्मारक बनाया जा सके। इसे लेकर केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने कहा था कि केंद्र सरकार ने मनमोहन सिंह के स्मारक के लिए जगह आवंटित की है और उनके परिवार को इसके बारे में सूचित भी किया है। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि स्मारक किस जगह बनेगा?

अब पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के स्मारक स्थल को लेकर जगह की तलाश की जा रही है। केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय के अधिकारियों ने राजघाट स्थित समाधि स्थलों को देखा है। इसके लिए राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्रियों के अंतिम संस्कार के लिए निर्धारित स्थान राष्ट्रीय स्मृति स्थल, पूर्व पीएम चौधरी चरण सिंह के स्मारक किसान घाट के पास, संजय गांधी की समाधि के पास जमीन देखी है। इसके साथ ही पीवी नरसिंह राव की समाधि एकता स्थल के पास भी स्मारक बनाने पर विचार किया जा रहा है।

यूपीए सरकार का नियम बन रहा बाधा

वर्ष 2000 में यूपीए सरकार ने राजधानी में घटती जमीन की स्थिति को लेकर चिंता जताई थी। इसके साथ ही नए स्मारक न बनाने का फैसला किया था। राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के लिए 18 स्मारक बनाए गए हैं। इसमें राजघाट, शांति वन, शक्ति स्थल, वीर भूमि, एकता स्थल, समता स्थल और किसान घाट शामिल हैं। यह सभी स्मारक 245 एकड़ से ज्यादा जमीन पर बने हैं। जबकि संजय गांधी की समाधि भी स्मृति स्थल पर है। जिसे निगमबोध घाट के निकट बनाया गया है। निगमबोध घाट पर ही पूर्व पीएम का अंतिम संस्कार किया गया था।

खेल
प्रमुख समाचार

13 साल बाद मेलबर्न में टेस्ट हारा भारत

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया ने भारत को मेलबर्न में बॉक्सिंग डे टेस्ट में 184 रन से हरा दिया है। जीत के लिए मिले 340 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत की दूसरी पारी 155 रन पर सिमट गई। भारतीय टीम को आज ही लक्ष्य मिला था, लेकिन टीम इंडिया तीन सत्र भी नहीं खेल सकी और 11 बल्लेबाज पवेलियन लौट गए। मेलबर्न में टीम इंडिया की टेस्ट में यह 13 साल बाद हार है। इससे पहले भारतीय टीम को 2011 में हार मिली थी। इस जीत के साथ ही ऑस्ट्रेलिया ने पांच मैचों की सीरीज में चार टेस्ट के बाद 2-1 की बढ़त बना ली है। अब पांचवां और आखिरी टेस्ट तीन जनवरी से सिडनी में खेला जाएगा।

रोहित की कप्तानी में पिछले दो महीने में छह टेस्ट में टीम इंडिया की यह पांचवीं टेस्ट हार है। न्यूजीलैंड के खिलाफ 3-0 से हार के बाद भारत को एडिलेड में और फिर अब मेलबर्न में हार मिली है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 474 रन बनाए थे। स्टीव स्मिथ ने शतक जमाया था। जवाब में भारत ने अपनी पहली पारी में 369 रन बनाए। 21 साल के नीतीश रेड्डी ने बेहतरीन शतक लगाया। ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी के आधार पर 105 रन की बढ़त मिली थी। इसके बाद भारत ने ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी में 234 रन पर समेट दिया। बढ़त मिलाकर ऑस्ट्रेलिया की कुल बढ़त 339 रन की हुई थी और भारत को 340 रन का लक्ष्य मिला, लेकिन टीम इंडिया न तो यह मैच जीत सकी और न ही ड्रॉ करा सकी, जबकि उनके पास सिर्फ एक दिन था।इस हार के साथ ही भारत के विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में पहुंचने की उम्मीदों को भी झटका लगा है। अब उसे अन्य टीमों के नतीजों पर निर्भर रहना होगा। साथ ही सिडनी में अगले टेस्ट को जीतना ही होगा। ड्रॉ या हार टीम इंडिया को रेस से बाहर कर देगी।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 450 अंक टूटा निफ्टी 23,645 पर बंद

नईदिल्ली। बेंचमार्क इक्विटी इंडेक्स बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी50 सप्ताह के पहले ट्रेडिंग सेशन 30 दिसंबर को बड़ी गिरावट लेकर बंद हुए। फेडरल रिजर्व के ब्याज दरों में कम कटौती के संकेत अमेरिका में बांड यील्ड में वृद्धि का असर घरेलू बाजारों पर पड़ा है। बैंकिंग स्टॉक्स और इंडेक्स में हैवी वेटेज रखने वाले फाइनेंशियल शेयरों ने भी बाजार को नीचे खींचा। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स सोमवार (30 दिसंबर) को 50 अंक से ज्यादा फिसलकर 78,637 पर खुला। बाद में यह 78,395.50 अंक तक फिसल गया। अंत में सेंसेक्स 450.94 अंक या 0.57% की बड़ी गिरावट लेकर 78,248.13 पर बंद हुआ। इसी तरह, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी50 भी गिरावट में खुला और उतार-चढाव भरे कारोबार के अंत में 168.50 अंक या 0.71% की गिरावट लेकर 23,644.90 पर क्लोज हुआ। टाटा मोटर्स का शेयर सबसे ज्यादा गिरावट में बंद हुआ।

इसरो ने स्पेडेक्स मिशन की लॉन्चिंग का समय बदला

नई दिल्ली। इसरो ने अपने महत्वकांक्षी अंतरिक्ष मिशन स्पेडेक्स की लॉन्चिंग को दो मिनट आगे बढ़ा दिया है। इसरो का यह मिशन उसके अंतरिक्ष कार्यक्रम में मील का पत्थर साबित होगा। पहले इसरो अपने स्पेस डॉकिंग मिशन स्पेडेक्स की लॉन्चिंग सोमवार रात 9.58 पर करने वाला था, लेकिन अब यह लॉन्चिंग दो मिनट की देरी से रात 10 बजे होगी। हालांकि लॉन्चिंग के समय में इस बदलाव की वजह इसरो ने नहीं बताई है। इसरो ने सोमवार को एक अपडेट में कहा, लॉन्च का दिन आ गया है। आज रात ठीक 10 बजे, स्पेडेक्स और नए पेलोड के साथ पीएसएलवी-सी60 उड़ान भरने के लिए तैयार है। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा, डॉकिंग प्रयोग पृथ्वी की कक्षा में डॉकिंग की भारत की क्षमता स्थापित करने के लिए एक अहम मिशन है, जो भविष्य में इंसानों को अंतरिक्ष में भेजने और उपग्रह सेवा मिशनों के लिए बेहद अहम तकनीक है।

साल 2024 का आखिरी आईपीओ दे रहा मोटी कमाई का इशारा

नईदिल्ली। साल 2024 आईपीओ के लिहाज से शानदार साबित हुआ है। नए साल 2025 में भी आईपीओ मार्केट में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इस बीच, 2024 का आखिरी आईपीओ भी अच्छी कमाई का इशारा कर रहा है। इंडो फार्म इक्विपमेंट का आईपीओ मंगलवार (31) दिसंबर को अप्लाई करने के लिए खुलेगा। यह साल 2024 का आखिरी आईपीओ होगा। कंपनी ने अपने पब्लिक इश्यू के लिए प्राइस बैंड 204 रुपये से 215 रुपये प्रति शेयर तय किया है। इंडो फार्म इक्विपमेंट का 260 करोड़ रुपये का आईपीओ 2 जनवरी को सब्सक्राइब करने के लिए बंद होगा। एंकर निवेशकों के लिए बोली 30 दिसंबर को एक दिन के लिए खुलेगी। इंडो फार्म इक्विपमेंट के आईपीओ में 86 लाख इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू और प्रमोटर रणबीर सिंह खडवालिया की तरफ से 35 लाख इक्विटी शेयरों की बिक्री की पेशकश शामिल है। इंडो फ़ार्म इक्विपमेंट आईपीओ के एक लॉट में 69 शेयर शामिल है।

तीन कंपनियों की बाजार में एंट्री

नईदिल्ली। मिलेजुले ग्लोबल संकेतों के बीच घरेलू स्टॉक मार्केट में सोमवार (30 दिसंबर) को कमजोर शुरुआत हुई। बाजार में गिरावट के बीच सोमवार को तीन आईपीओ Carraro India, Ventive और Senores Pharma की लिस्टिंग हुई। इसमें ऑटो कम्पोनेंट और इक्विपमेंट बनाने वाली कंपनी Carraro India की डिस्काउंट पर लिस्टिंग हुई। जबकि हॉस्पिटैलिटी सेक्टर की कंपनी वेंटिव हॉस्पिटैलिटी और फार्मा कंपनी सेनोर्स फॉर्मा प्रीमियम पर लिस्ट हुए। सेनोर्स फार्मा में निवेशकों को करीब 52 फीसदी का लिस्टिंग गेन हुआ। फार्मा सेक्टर की कंपनी Senores Pharma की बाजार में जबरदस्त एंट्री हुई। यह शेयर एनएसई पर 53.45% प्रीमियम के साथ 600 रुपये पर लिस्ट हुआ है। बीएसई पर स्टॉक 51.84% प्रीमियम के साथ 593.70 पर लिस्ट हुआ। इसका इश्यू प्राइस 391 रुपये था।

महाकुंभ मेला 2025 बनेगा इकोनॉमी का ग्रोथ इंजन

अभिनय आकाश

दुनिया का सबसे बड़ा मेला जो 13 जनवरी से प्रयागराज में शुरू होगा। ये 26 फरवरी तक चलेगा। इन 45 दिनों में अंदाजन 45 करोड़ लोग महाकुंभ में हिस्सा लेंगे। आस्था नगरी प्रयागराज के महाकुंभ में तमाम साधु-संत श्रद्धालु और महात्मा हजारों किलोमीटर का सफर तय कर धर्म की नगरी में आस्था डुबकी लगाने के लिए पहुंच रहे हैं। धार्मिक उत्सव होने के साथ साथ महाकुंभ 2025 के आर्थिक गतिविधियों में भी तेजी लाएगा। कारोबारियों को भी महाकुंभ से काफी उम्मीदें हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 दिसंबर को महाकुंभ में कुंभ की स्थापना करने के साथ ही शहर के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने के लिए 5500 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इस मौके पर पीएम मोदी ने भी प्रयागराज महाकुंभ के आयोजन के प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का जिक्र किया।

कुंभ से जुड़े एक और पक्ष का पीएम मोदी ने जिक्र किया है। ये पक्ष कुंभ से आर्थिक गतिविधियों का विस्तार है। हम देख रहे हैं कि कैसे कुंभ से पहले भी इस क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियां तेजी से बढ़ रही थीं। संगम के तट पर करीब डेढ़ महीने के लिए एक अस्थायी शहर बसाया जाएगा जिसमें रोजाना लाखों लोग आएंगे। उन्होंने कहा कि इस दौरान प्रयागराज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए बड़ी संख्या में लोगों की जरूरत होगी। 6,000 से अधिक नाविक, हजारों दुकानदार और धार्मिक अनुष्ठानों और पवित्र स्नान में सहायता करने वालों के काम में वृद्धि होगी, जिससे रोजगार के कई अवसर सृजित होंगे। यानी यहां बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर तैयार होंगे। सप्लाई चेन को बनाए रखने के लिए व्यापारियों को दूसरे शहरों से

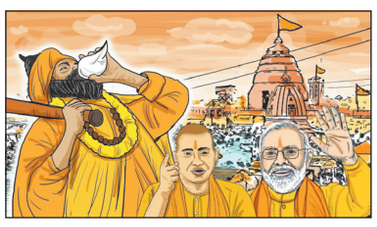

सामान मंगाने पड़ेंगे।

प्रयागराज कुंभ का प्रभाव आसपास के जिलों पर भी पड़ेगा। देश के दूसरे राज्यों से आने वाले श्रद्धालु रेल या विमान की सेवाएं लेंगे। इससे भी अर्थव्यवस्था में गति आएगी। यानी महाकुंभ से सामाजिक मजबूती तो मिलेगी ही लोगों का आर्थिक सशक्तिकरण भी होगा। यूपी सरकार धार्मिक सभा को बढ़ावा दे रही है, उम्मीद है कि इससे आध्यात्मिक और धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। टेम्पो संचालक, रिक्शा चालक, मंदिर स्थलों पर फूल बेचने वाले, यादगार वस्तुएं बेचने वाले, नाव संचालक और यहां तक ??कि होटल जैसे छोटे पैमाने के विक्रेताओं की कमाई स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देगी। कुंभ मेले के आसपास के पूरे पारिस्थितिकी तंत्र में बड़े पैमाने पर आर्थिक उछाल आने की उम्मीद है। ऐसी उम्मीदें हैं कि महाकुंभ वाराणसी, अयोध्या, मथुरा और विंध्यवासिनी धाम जैसे आसपास के धार्मिक स्थलों के लिए भी लाभदायक हो सकता है।

महाकुंभ मेला 4,000 हेक्टेयर में फैला होगा, जिसमें एक अस्थायी तम्बू शहर बनाया जाएगा। टाइम्स ऑफ इंडिया (टीओआई) की रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश सरकार इस विशाल धार्मिक आयोजन के आयोजन पर अनुमानित 7,500 करोड़ रुपये खर्च करेगी। महाकुंभ में भारत और दुनिया भर से 40 करोड़ तीर्थयात्रियों के आने की संभावना है। 2019 में, कुंभ मेले ने 25 करोड़ भक्तों को आकर्षित किया। यूपी सरकार के आर्थिक सलाहकार केवी राजू ने एक निजी मीडिया समूह से बात करते हुए कहा कि 2019 कुंभ मेले की तुलना में 2025 के महाकुंभ में 40 करोड़ से अधिक तीर्थयात्रियों का सैलाब उमड़ेगा। जब वे अपने घरों से बाहर निकलेंगे, पवित्र स्नान के लिए संगम पर पहुंचेंगे और घर लौटेंगे, तभी से आर्थिक गतिविधियां शुरू हो जाएंगी। अनुमान है कि आर्थिक गतिविधि का मूल्य 2 लाख करोड़ रुपये है। महाकुंभ 2025 सिर्फ एक आध्यात्मिक सभा नहीं है, यह एक विशाल आर्थिक इंजन है। उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह का कहना है कि हमारा ध्यान तीर्थयात्रियों के लिए एक सहज अनुभव सुनिश्चित करते हुए बुनियादी ढांचे, पर्यटन और रोजगार सृजन को बढ़ाने पर है। 2 लाख करोड़ रुपये से 3 लाख करोड़ रुपये के बीच वित्तीय लेनदेन के साथ, धार्मिक मण्डली से स्थानीय अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण लाभ होने की उम्मीद है।

सामाजिक समरसता की नींव पर खड़ा होगा भविष्य का भारतः भागवत

हम सभी हिन्दू भाई-भाई हैं, कोई हिन्दू पतित नहीं हो सकता

रायपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूजनीय सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत ने सामाजिक समरसता को राष्ट्रीय चरित्र का मूलभूत तत्व बताया है। 30 दिसंबर को उन्होंने सामाजिक समसरता गतिविधि से जुड़े कार्यों पर स्वयंसेवकों व अधिकारियों से चर्चा कर उनका मार्गदर्शन किया।

इस अवसर पर डॉ मोहन भागवत ने कहा कि भारत में प्रत्येक गांव, तहसील व जिले में सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने वाली सज्जन शक्ति रहती है। उन्होंने हमेशा जाति, पंथ से ऊपर राष्ट्रीय हितों को रखा। यही वजह है कि 140 करोड़ भारतीय किसी भी धर्म, जाति, पंथ से क्यों न आते हों वह अपने राष्ट्रीय चरित्र को नहीं भूलते।

देश में भाषा, वेशभूषा, पूजा पद्धति, उपासना के अलग-अलग आचरण करने वाले पंथ, जाति को भारतीयता की डोर एक सूत्र में पिरोये रखती है। आज राष्ट्रीय चरित्र की स्थापना के लिए सामाजिक समरसता की जड़ों को मजबूत करना होगा। उन्होंने कहा, मंदिर, जलाशय, शमशान आदि पर सभी जाति, पंथ, वर्गों का समान अधिकार है। यह कोई आज से है, ऐसा नहीं है। यह भारत का शाश्वत आचरण है।

डॉ मोहन भागवत ने कहा, हमारी ज्ञान परंपरा कहती है, हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिंदू पतितो भवेत्। मम दीक्षा धर्म रक्षा, मम मंत्र समानता। अर्थात हम सभी हिन्दू भाई-भाई हैं, कोई हिन्दू पतित नहीं हो सकता।

भारतीय जीवन मूल्यों में सामाजिक समरसता के दर्शन होते हैं, आज आवश्यकता इस बात की है कि हम ऐसे ऋषि मुनियों, सन्त व हुतात्माओं के चिंतन व दर्शन को आत्मसात करें। उन्होंने कहा, समाज में नकारात्मक शक्तियां प्रत्येक कालखण्ड में हुई हैं किंतु समाज ने अपनी एकता, अखण्डता से हमेशा समाज के अनुकूल व्यवस्था का निर्माण किया। उन्होंने पूज्य गुरुघासीदास का उल्लेख करते हुए कहा, आज उनके विचार वर्तमान व आने वाली पीढ़ियों का दिग्दर्शन करते रहेंगे। गुरु घासीदास ने मानव मात्र ही नहीं जीव जंतुओं व प्रकृति के साथ मानवता पूर्ण व्यवहार का संदेश दिया।

यहां उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लगातार सामाजिक समरसता की दिशा में कार्य कर रहा है। सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत 27 दिसंबर से छत्तीसगढ़ प्रवास पर है।

मेरी बात ✍ गिरीश पंकज

समरसता की "भागवत"-कथा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी के समय-समय पर आने वाले बयान उनके महान व्यक्तित्व का परिचय देते हैं. उनकी किसी भी बात में छोटापन नजर नहीं आता. वह बड़ी उदारता के साथ, बेबाक तरीके से अपनी बात रखते हैं. कुछ उनकी बातों से सहमत होते हैं, कुछ असहमत भी होते हैं. लेकिन वह इसकी परवाह नहीं करते और अपनी बात कह देते हैं. जैसे पिछले दिनों उन्होंने देश के कुछ मस्जिदों की खुदाई और कुछ लोगों द्वारा हिन्दुओं का नेता बनने को लेकर के जो बयान दिया, वह अपने आप में अभूतपूर्व था. इस बयान की उदारवादी लोगों ने खुलकर प्रशंसा की.विपक्षी दलों ने भी उनके बयान को हाथों हाथ लिया. हालांकि कुछ कट्टरपंथी लोगों ने उनके इस बयान से असहमति जाहिर की. कुछ धर्माचार्य ने नाराजगी भी व्यक्त की लेकिन इससे भागवत जी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला. वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जो व्यावहारिक सच है, उसको कहने में संकोच नहीं करते. इसलिए मैंने हमेशा उनके बयानों की तारीफ की है. समाज में अगर ऐसे प्रमुख लोग उदारता के साथ समरसता की बात करेंगे तो देश में कहीं कोई दंगा-फसाद न हो. कुछ समय पहले भागवत जी ने कहा था कि देश में रहने वाले हिंदू और मुसलमानों का डीएनए एक है. यह बहुत बड़ी बात थी. इससे लाखों मुसलमान को बहुत अच्छा लगा था. उन्होंने भी भागवत जी की खुलकर तारीफ की थी. यह राष्ट्र शुरू से सनातन रहा है. लेकिन जब आक्रमणकारी मुगल आए तो उसके बाद बहुत से हिंदू धर्म परिवर्तन करके मुसलमान हो गए.

इसमें दो राय नहीं की मोहन भागवत जब से संघ के सरसंघचालक यानी प्रमुख बने हैं, तब से समाज में संघ को लेकर एक सकारात्मक भाव जाग्रत हुआ है. संघ की छवि और निखरी है. मैंने भी बाल्यकाल से संघ की गतिविधियों को देखा है और यही पाया है कि यह संगठन राष्ट्र के उन्नयन हेतु सतत लगा हुआ है. अगर यह संगठन हिन्दू एकता की बात करता है तो कोई गलत नहीं करता. सभी को अपने धर्म की बात करने का अधिकार है. सभी मजबूत रहें,लेकिन उनमें किसी अन्य धर्म के लिए नफरत का कोई भाव न रहे. अगर मोहन भागवत जी हिंदुओं से कहते हैं कि सबसे अधिक बच्चे पैदा करो तो कोई गलत बात नहीं करते. देश की सामाजिक स्थिति जिस तरह होती जा रही है, उसे देखते हुए अब यह बहुत जरूरी भी हो गया है. इस बयान को किसी दूसरे धर्म की प्रतिद्वंद्विता के रूप में न देखकर, आत्म सुरक्षा की दृष्टि से देखा जाना चाहिए. इसमें दो राय नहीं कि हिन्दुओं की अतिरिक्त सावधानी के चक्कर में जनसंख्या में गिरावट तो आई है. तुलनात्मक आंकड़े सच का बयान कर रहे हैं. इसलिए मैं कहता हूं कि मोहन भागवत जी का बयान हमेशा समयसापेक्ष आता है. जिस पर चिंतन की जरूरत है. रायपुर के पांच दिवसीय प्रवास में भी उन्होंने लगातार स्वयंसेवकों का अपने व्यक्तित्व के निखारने की सलाह दे रहे हैं. पेड़ लगाने की बात कर रहे हैं. पानी बचाने का संदेश और पॉलिथीन मुक्त समाज व्यवस्था पर भी उन्होंने जोर दे रहे हैं. उनकी बातों में कहीं भी नफरत कीटाणु नजर नहीं आते. वे उदारमन के साथ राष्ट्र के विकास में लगे रहने की सलाह देते हैं. उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को देखकर दूसरे धर्म के लोगों को यह सीख लेनी चाहिए कि उनके बयान भूल कर भी नफरत वाले नहीं होने चाहिए. क्योंकि घृणा नहीं प्यार से ही राष्ट्र का विकास संभव है. इस बात को भागवत जी अच्छे से समझते हैं. अगर उनकी बातों को हम भागवत -कथा की तरह आत्मसात कर लें, तो हिंदुत्व का विकास भी होगा, और राष्ट्र का भी।

राज्य के निर्माण और उसकी प्रगति में अभियंताओं की भूमिका अहमः बृजमोहन

रायपुर। राज्य के निर्माण और विकास में अभियंता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे समाज के भौतिक, सामाजिक, और आर्थिक विकास के आधारशिला रखते हैं। अभियंता आधुनिक तकनीकों, नवाचारों और अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करके राज्य को प्रगति की ओर अग्रसर करते हैं। यह बात सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने

मानव विज्ञान एवं सेवा संस्थान छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अभियंता अलंकरण समारोह 2024 में कही। इस भव्य समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने शिरकत की। उनके साथ राजश्री महंत राम सुंदर दास जी, विशिष्ट अतिथि विधायक एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री धरम लाल कौशिक, जिंदल पावर प्लांट के एमडी श्री प्रदीप टंडन, श्री विजय कुमार कासु और श्री सी पी शर्मा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का आयोजन एबी दुबे के संयोजन में किया गया।

इस अवसर पर उत्कृष्ट अभियंताओं को विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया, जिनमें अभियंता कर्मरत्न, अभियंता प्रतिभा रत्न, अभियंता रत्न, सर्वोत्तम अभियंता और लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार शामिल हैं। इन पुरस्कारों के माध्यम से राज्य के अभियंताओं के समर्पण, प्रतिभा और समाज में उनके योगदान को सराहा गया।

अपने संबोधन में श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा, अभियंता किसी भी समाज के आधार स्तंभ होते हैं। उनकी कड़ी मेहनत और नवीनता के बल पर ही समाज में प्रगति और खुशहाली आती है। उनका योगदान आम आदमी के जीवन को बेहतर बनाने में बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी अभियंताओं से आह्वान किया कि वे अपने कार्यों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान देते रहें।

राजश्री महंत राम सुंदर दास जी और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने भी अभियंताओं के प्रयासों की सराहना की और उन्हें प्रेरणा देते हुए कहा कि इंजीनियरिंग केवल संरचनाओं का निर्माण ही नहीं, बल्कि एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगों के जीवन को आसान और खुशहाल बनाया जा सकता है। इस अवसर पर प्रदेश भर से आए अभियंताओं ने अपने अनुभव साझा किए और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का संकल्प लिया।

कलेक्टर ने जनदर्शन में सुनी लोगों की समस्याएं

बिलासपुर। कलेक्टर अवनीश शरण ने अपनी साप्ताहिक नियमित जनदर्शन में सैकड़ों लोगों की समस्याएं सुनी। उन्होंने मिलने पहुंचे हर व्यक्ति से मुलाकात कर उनकी परेशानी पूछी और इनके समुचित निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए।

आज साप्ताहिक जनदर्शन में तखतपुर विकासखंड ग्राम घोरामार के ग्रामीणों ने गांव के जानवरों के निस्तारी के लिए बने गोचर पर अवैध कब्जा एवं पेड़ों की कटाई कर अवैध निर्माण की शिकायत कलेक्टर से की। कलेक्टर ने आवेदन एसडीएम तखतपुर को भेजते हुए आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए।

बिल्हा विकासखंड के ग्राम तेलसरा की भाग्य लक्ष्मी स्व. सहायता समूह की महिलाओं ने कूड़ा कचरा एकत्र करने के लिए रिक्शा दिलाने एवं मजदूरी भुगतान नहीं मिलने की शिकायत कलेक्टर से की। कलेक्टर ने आवेदन एसडीएम बिल्हा को भेजते हुए निदान के निर्देश दिए। मस्तूरी निवासी वृद्ध किसान धनउ ने सीमांकन करवाने कलेक्टर को आवेदन सौंपा। इस मामले को एसडीएम मस्तूरी देखेंगे। सिरगिट्टी निवासी मजदूर नर्मदा प्रसाद वर्मा द्वारा पुत्र के इलाज हेतु सहायता राशि दिलाने की गुहार लगाई। कलेक्टर ने आवेदन सीएमएचओ को भेजा।

मस्तूरी के ग्राम चौहा निवासी रंगबहार द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास योजना का लाभ दिलाने आवेदन सौंपा। कलेक्टर ने आवेदन जिला पंचायत को भेजा। कोटा विकासखंड के ग्राम लिटिया के पंचों द्वारा तात्कालिक ग्राम सरपंच श्रीमती दुलेश्वरी नेताम द्वारा शासकीय कार्यों के लिए आए सामानों एवं मुख्यमंत्री आंतरिक विद्युतीकरण की प्रथम किस्त एवं मुख्यमंत्री समग्र योजना की प्रथम किस्त की राशि का आहरण कर कामों को शुरू नहीं करने की शिकायत कलेक्टर से की। कलेक्टर ने आवेदन सीईओ जिला पंचायत को भेजकर आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए।राजकिशोर नगर निवासी मनोज कुमार डिक्सेना द्वारा जमीन के कब्जे की शिकायत कलेक्टर से की। कलेक्टर ने आवेदन एसडीएम तखतपुर को भेजते हुए आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

चयनित शिक्षकों को दूसरे पदों पर समायोजित करेः बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि सरकार बीएड प्रशिक्षित सहायक शिक्षकों के साथ अन्याय कर रही है। भले ही इन शिक्षकों की नौकरी पर संकट तकनीकी रूप से अदालती निर्णय के कारण आया है लेकिन सरकार चाहे तो इस समस्या का तत्काल निराकरण कर सकती है।

सरकार के पास शिक्षा विभाग में ही अनेकों ऐसे पद है जहां समान वेतनमान पर इन 2897 शिक्षकों की नियुक्ति की जा सकती है। प्रयोगशाला सहायक, उच्च श्रेणी शिक्षकों के रूप में इनकी नियुक्तियां की जा सकती है। वर्तमान शिक्षा विभाग में 70 हजार पद रिक्त है। 33000 शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया सरकार रोक कर रखी हैं। इन पदों पर इन शिक्षकों को समायोजित किया जा सकता है। सरकार इनके मामले में तत्काल निर्णय लेकर इनका समायोजन करे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रदेश के 2897 सहायक शिक्षक अपनी नौकरी बचाने के लिये आंदोलनरत है, धरने पर बैठे है सरकार है कि इस मामले में कोई निर्णय नहीं ले रही है। बीएड प्रशिक्षित सहायक शिक्षकों की नौकरी बचाने सरकार के पास अनेकों विकल्प है, विभागीय डीएड परीक्षा का आयोजन भी करवा कर नौकरी यथावत बरकरार रख सकती है ।

निकाय चुनावः लाइट, माइक, प्रचार सामग्री के व्यय मानक दर निर्धारित

रायपुर। नगरीय निकाय निर्वाचन 2024-25 के तहत कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के मार्गदर्शन में उप जिला निर्वाचन अधिकारी उमाशंकर बंदे ने सोमवार को रेडक्रॉस सभाकक्ष में राजनैतिक दलों एवं उनके प्रतिनिधियों की बैठक ली। बैठक में निर्वाचन के दौरान राजनैतिक दलों एवं अभ्यर्थियों द्वारा विभिन्न मदों जैसें वाहन, लाइट, माइक, शामियाना, डेकोरेशन, भोजन, वीडियोग्राफी एवं प्रचार सामग्री समेत विभिन्न मदों पर किए जाने वाले व्यय का मानक दर सर्व सम्मति से निर्धारित किया गया। इसके अलावा छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन के लिए निर्वाचक नामावली तैयार करने का कार्यक्रम जारी किया गया। जिसके संबंध में मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को जानकारी दी गई।

बैलेट पेपर पर चुनाव कराने मजबूर हुए साय सरकारः वर्मा

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि स्थानीय निकाय चुनाव टालने के लिए भाजपा सरकार लगातार षडयंत्र रच रही है। परिसीमन से लेकर आरक्षण तक प्रक्रिया में अव्यावहारिक बदलाव करके चुनाव को बाधित कर रहे हैं। महापौर के लिए आरक्षण की प्रक्रिया अकारण ही 10 दिन आगे बढ़ा दिया गया।

असलियत यह है कि भाजपा सरकार नगरीय निकाय चुनाव की प्रक्रिया में जाने से डर रही, लगातार बहाने कर रही है। पहले अध्यादेश और अब पंचायत अध्यक्षों और महापौर के आरक्षण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया गया। जनता साय सरकार के कामकाज से बेहद नाराज है, बिगड़ती कानून व्यवस्था, धान खरीदी में कुप्रबंधन, आरक्षक भर्ती घोटाला, महतारी वंदन योजना में भ्रष्टाचार, अपराध, अपराधियों और भ्रष्टाचारियों को संरक्षण से यह सरकार जनता का भरोसा खो चुकी है, इसलिए चुनाव टाला जा रहा है।प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि कांग्रेस के दबाव में बैलेट पेपर पर चुनाव कराने मजबूर हुए साय सरकार। कांग्रेस की मांग है कि केवल स्थानीय निकाय ही नहीं, हर चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए, विश्वसनीयता के लिए पारदर्शिता आवश्यक है।

कांग्रेसजनों ने स्व. डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धा सुमन अर्पित किया

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धांजली देने श्रद्धांजली सभा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर कांग्रेसजनों ने अपने दिवंगत नेता के तस्वीर पर पुष्प चढ़ा कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित किया। उपस्थित कांग्रेसजनों स्व. डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यो को देश के लिये उनके योगदान तथा प्रधानमंत्री और आर्थिक विशेषज्ञ के रूप में उनके द्वारा किये गये महान कार्यो को याद किया। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह सही मायने में देश भक्त थे। आम आदमी को पहचान देने आधार कार्ड हो या आम आदमी को सशक्त बनाने के लिये सूचना का अधिकार का कानून देना या फिर किसानों को उनके जमीन का पूरा हक देने के लिये भूमिअधिग्रहण कानून बनाना हो या फिर सड़क के किनारे काम करने वाले ठेले खोमचे वाले के लिये वेंडर प्रोटेक्शन कानून बनाना या फिर रोजगार को कानून का अधिकार देने मनरेगा लाना हो, शिक्षा का अधिकार देना हो।

महतारी वंदन योजनाः बेटी का भविष्य गढ रही विमला

बिलासपुर। महतारी वंदन योजना से महिलाओं के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव की शुरूआत हुई है और उनके जीवन को एक नई दिशा मिल रही है। योजना के तहत मिलने वाली राशि से महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सहायता मिल रही है साथ ही उनके बच्चों

का भविष्य गढ़ने में भी यह योजना सार्थक बन रही है। बिलासपुर देवरीखुर्द की स्वच्छता दीदी विमला धुरी योजना से मिलने वाली राशि का उपयोग अपनी बेटी के लिए सुकन्या समृद्धि योजना में निवेश करने में कर रही है। बुटापारा देवरीखुर्द की रहने वाली श्रीमती विमला धुरी नगर निगम में स्वच्छता दीदी के रूप में काम करती है और अपने परिवार को आर्थिक सहयोग देती है। विमला ने बताया कि महतारी वंदन योजना से विगत 10 माह से हर माह 1 हजार की राशि उनके खाते में आ रही है। मानदेय के अतिरिक्त सरकार से मिलने वाली इस राशि का उपयोग वह अपनी बेटी के भविष्य को संवारने में करेंगी। विमला ने बताया कि बेटी के नाम से उन्होंने सुकन्या समृद्धि खाता खुलवाया है और सरकार से मिलने वाली इस मदद को हर माह बेटी के नाम पर सुकन्या समृद्धि खाते में जमा कर रही है। सुकन्या समृद्धि योजना में प्रतिवर्ष चक्रीय ब्याज की गणना होती है।

26 राष्ट्रीय जूडो खिलाड़ी हेमबती ने मुख्यमंत्री से कहा

ओलंपिक में मेडल लेकर आना मेरा सपना

मुख्यमंत्री ने कहा - राज्य सरकार प्रदेश में खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध, ओलंपिक में मेडल लाने लगातार मेहनत करने की दी सीख

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2024 से सम्मानित छत्तीसगढ़ के कोंडागांव की बिटिया राष्ट्रीय जूडो खिलाड़ी हेमबती नाग ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से आज राष्ट्रीय जूडो खिलाड़ी हेमबती नाग ने सौजन्य मुलाकात की। छत्तीसगढ़ के कोंडागांव की बिटिया हेमबती को उनकी उपलब्धियों के लिए राष्ट्रपति मती द्रौपदी मुर्मु के हाथों प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया है।

हेमबती नाग ने मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान उन्हें अपनी उपलब्धियों की जानकारी दी और कहा कि देश के लिए ओलंपिक में मेडल जीतकर लाना उसका सपना है। यह सुन कर मुख्यमंत्री ने हेमबती को शाबाशी दी और इस सपने को पाने के लिए

लगातार मेहनत करने की समझाईश दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में खेलों को बढ़ावा देने और खिलाडियों को बेहतर से बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने हेमबती को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि उन्होंने खेलो इंडिया नेशनल गेम्स और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा दिखाते हुए अनेक पदक जीते और प्रदेश को गौरवान्वित किया। उन्होंने हेमबती नाग को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद प्रदान किया है।

इस अवसर पर कृषि मंत्री रामविचार नेताम, खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल, वन केदार कश्यप, स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा, महिला एवं बाल विकास मंत्री मती लक्ष्मी राजवाड़े, उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन उपस्थित थे।

जेलों में बंदियों के मध्य अपराधिक घटनाओं को रोकने और त्वरित कार्रवाई के लिए क्रिक रिएक्शन टीम गठित

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के जेलों के बंदियों के मध्य अपराधिक घटनाओं को रोकने तथा घटना उपरान्त त्वरित कार्यवाही के लिए जेल मुख्यालय के निर्देश पर छत्तीसगढ़ की विभिन्न जेलों द्वारा विभिन्न कार्यवाहियां की गई है। कोई भी अप्रिय घटना होने पर क्यू.आर.टी. द्वारा त्वरित कार्यवाही की जाएगी। इस हेतु नियमित रूप से मॉक ड्रिल तथा रिहर्सल भी किया जा रहा है। अपराधिक घटनाएं रोकने के लिए कैदियों की व्यवहार प्रोफाईलिंग तैयार की गई है। बिलासपुर केन्द्रीय जेल के अधीक्षक श्री खोमेश मण्डावी ने बताया कि जेल डीजी श्री हिमांशु गुप्ता के निर्देश पर बिलासपुर सर्कल की सभी जेलों में क्यू.आर.टी. का गठन किया गया है।

कैदियों की विभिन्न अपराधियों तथा अपराधिक समूहों से संबद्धता एवं इतिहास पर नजर रखी जा रही है। बंदियों का हिंसक व्यवहार रोकने के लिए तथा रचनात्मक अभिरूचि बढ़ाये जाने के लिए बंदियों के लिए शैक्षणिक प्रशिक्षण, रोजगारोन्मुखी व्यवसायिक कौशल प्रशिक्षण और जीवन कौशल संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इससे बंदियों के मध्य तनाव में कमी आई है। साथ ही बंदियों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं, थेरेपी और परामर्श भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके माध्यम से अपराध के सामाजिक-आर्थिक कारकों को भी संबोधित किया जा रहा है। बंदियों के परिवारों के साथ स्वस्थ रिश्तों को बढ़ावा दिया जा रहा है। सामाजिक समर्थन प्रणालियाँ प्रदान करने हेतु प्रक्रिया विकसित की गई है। इससे बंदियों के रिहा होने पर अपराधिक जीवन में पुनः प्रवेश करने की संभावना में कमी आयेगी। सकारात्मक संलग्नता बढ़ाने के लिए बंदियों को मनोरंजन गतिविधियाँ और खेल सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इससे बंदियों के मध्य टीम वर्क और सहयोग को बढ़ावा मिला है।

कैदियों को योग, ध्यान तथा काउंसिलिंग प्रदाय की जा रही है। कैदियों के मध्य समरसता बढ़ाये जाने के उद्देश्य से मध्यस्थ नियुक्ति किये गये हैं तथा उनके द्वारा बंदियों से सतत् संवाद रखा जा रहा है। आसूचना तंत्र को मजबूत किया गया है। निगरानी हेतु टेक्नोलोजी, सीसीटीवी इत्यादि का सहारा लिया जा रहा है।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.